राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

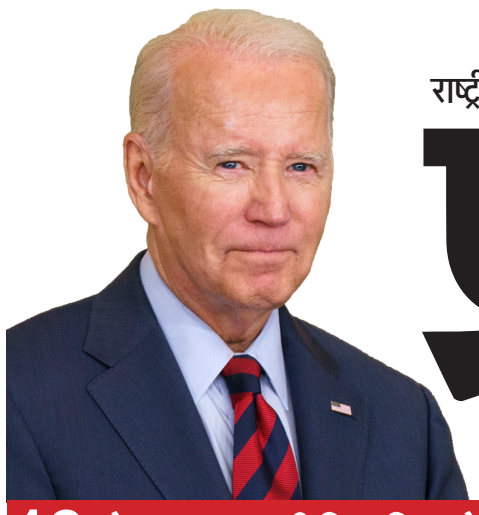

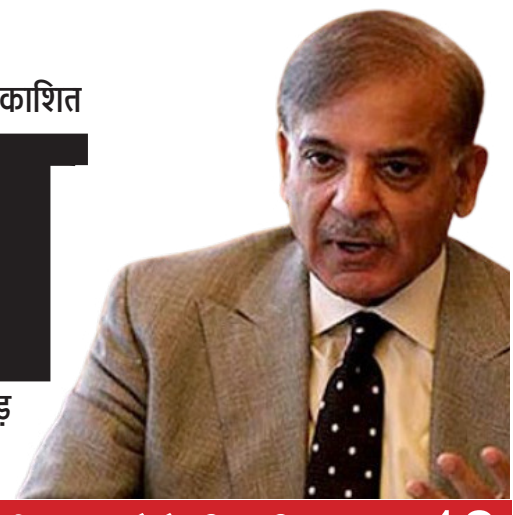

12 डोनाल्ड ट्रंप की विवादित पोस्ट पर बढ़ा हंगामा, राष्ट्रपति बाइडन के ...

पाकिस्तान में रेड कार्पेट बैन, सिर्फ विदेशी महमानों के लिए बिछाया ... 12

वर्ष : 14 | अंक : 317 | नई दिल्ली, सोमवार, 01 अप्रैल, 2024 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31°C

न्यूनतम तापमान 25.0°C

हां 30%

नहीं 50%

कह नहीं सकते 10%

बाजार

सोना 59,340

चांदी 55,350

सेंसेक्स 63,327

निफ्टी 18,816

संक्षिप्त खबरें

प्रधानमंत्री ने ईस्टर पर देशवासियों को दीं शुभकामनाएं

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को देशवासियों को ईस्टर की शुभकामनाएं दीं और उम्मीद जताई कि नवीनीकरण एवं आशावाद का संदेश हर जगह गूंजेगा। मोदी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, यह दिन हम सभी को एकजुट होने, एकता और शांति को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित करे। सभी को ईस्टर की शुभकामनाएं। उन्होंने कहा, ईस्टर पर, हम आशा करते हैं कि नवीनीकरण और आशावाद का संदेश हर जगह गूंजेगा। गुड फ्राइडे के बाद आने वाले रविवार को ईस्टर संडे के नाम से जाना जाता है। ईसाई, ईसा मसीह के पुनर्जीवित होने के जश्न में ईस्टन मनाते हैं।

मुरादाबाद:सड़क हादसे में एक ही परिवार के चार लोगों की मौत

मुरादाबाद। जनपद के कांठ थाना क्षेत्र में शनिवार को सड़क हादसे एक ही परिवार के चार लोगों की मौत हो गई। इनमें दो लोग घायल हैं। पुलिस ने शवों की शिनाख्त कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है। प्रारंभिक जानकारी मिली है कि एक परिवार देहरादून से कार में बैठकर मुरादाबाद के थाना मुगलपुरा क्षेत्र स्थित अपनी रिश्तेदारी में आ रहे थे। थाना कांठ क्षेत्र स्थित रसूलपुर क्रॉसिंग के पास खड़े ट्रक से कार टकराकर पलट गई। हादसे में कार सवार संगीता रस्तोगी, आशिका रस्तोगी, यश रस्तोगी, आरती रस्तोगी की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं, कार चला रहे अतुल रस्तोगी और उसकी बहन मानवी रस्तोगी गंभीर रुप से घायल है, जिन्हें जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हादसे में मरने वाले एक ही परिवार के हैं और देहरादून के थाना तिलक रोड के गढ़ मकान नंबर 13 जी मोहल्ला डांडीपुर के रहने वाले थे। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

द्वारका में आग लगने से एक ही परिवार के चार की मौत

देवभूमि द्वारका। गुजरात के देवभूमि द्वारका जिले के द्वारका सिटी क्षेत्र में रविवार को एक मकान के एसी मशीन में आग लग गई। इस दौरान दम घुटने से एक ही परिवार के चार लोगों की मौत हो गयी जबकि एक अन्य को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अग्निशमन विभाग के फायर इंचार्ज जितेन्द्रभाई एस कारडिया ने बताया कि रविवार तड़के आदित्य रोड़ पर माहेश्वरी भवन के निकट स्थित कमलेशभाई उपाध्याय के घर में एयर कंडीशनर मशीन में आग लगने की सूचना मिलते ही दमकल की गाड़ियों के साथ दमकल कर्मी मौके पर पहुंच गए। कड़ी मशक्कत के बाद उन्होंने आग पर काबू पा लिया।

कांग्रेस पांच अप्रैल को जारी करेगी घोषणापत्र

नई दिल्ली। कांग्रेस ने पांच अप्रैल को अपना घोषणापत्र जारी करने की शनिवार को घोषणा की। उसने अंतिम क्षण में घोषणापत्र समिति गठित करने को लेकर भाजपा पर कटाक्ष भी किया। भारतीय जनता पार्टी ने लोकसभा चुनावों के लिए शनिवार को 27 सदस्यीय घोषणा पत्र समिति गठित की और पार्टी ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को इसका अध्यक्ष, वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण को संयोजक तथा केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल को सह-संयोजक बनाया है। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि कांग्रेस ने 16 मार्च को पांच न्याय, 25 गारंटी जारी की और देश भर में आठ करोड़ गारंटी कार्ड वितरित करने के लिए पार्टी का घर घर गारंटी अभियान तीन अप्रैल से शुरू होगा।

राष्ट्रपति मुर्मू ने लालकृष्ण आडवाणी को भारत रत्न से किया सम्मानित, पीएम भी रहे मौजूद

प्रात: किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। देश के पूर्व उप-प्रधानमंत्री व भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भारत रत्न से सम्मानित किया है। राष्ट्रपति ने रविवार को आडवाणी के आवास पर पहुंचकर उन्हें भारत रत्न पुरस्कार प्रदान किया। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी मौजूद रहे। 3 फरवरी को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने लालकृष्ण आडवाणी को भारत रत्न प्रदान करने की घोषणा की थी। रविवार को जब लालकृष्ण आडवाणी को भारत रत्न से सम्मानित किया गया तो मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अलावा उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, पूर्व उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू समेत कई दिग्गज नेता मौजूद रहे। राष्ट्रपति भवन के अनुसार, भारतीय राजनीति के पुरोधा आडवाणी ने सात से अधिक दशकों तक अटूट समर्पण और प्रतिष्ठा के साथ देश की सेवा की। कराची में 1927 में जन्मे आडवाणी का परिवार विभाजन के बाद 1947 में भारत आ गया था। राष्ट्रपति भवन ने कहा कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के अपने दृष्टिकोण के साथ, उन्होंने पूरे देश में दशकों तक कड़ी मेहनत की और सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य में बदलाव लेकर आए। उसने एक्स पर समारोह की तस्वीरें साझा करते हुए कहा, जब आपातकाल ने भारत के लोकतंत्र को खतरे में डाल दिया तो उनके अंदर के परिश्रमी योद्धा ने निरंकुश प्रवृत्तियों से इसकी रक्षा करने में मदद की। आडवाणी (96) जून 2002 से मई 2004 तक उप-

प्रधानमंत्री और अक्टूबर 1999 से मई 2004 तक केंद्रीय गृहमंत्री रहे। वह कई बार 1986 से 1990, 1993 से 1998 और 2004 से 2005 तक भाजपा अध्यक्ष रहे। गौरतलब है कि लालकृष्ण आडवाणी ने भारतीय जनता पार्टी को सत्ता के शिखर तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई है। 1990 के दशक में उनकी रथयात्रा के बाद भाजपा राष्ट्रीय राजनीति में उभर कर सामने आई। 1980 में भाजपा की स्थापना के बाद से लालकृष्ण आडवाणी ने सबसे लंबे समय तक भाजपा के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। लगभग तीन दशकों के संसदीय करियर के दौरान, लालकृष्ण आडवाणी पहले गृह मंत्री और बाद में अटल बिहारी वाजपेयी सरकार (1999-2004) के मंत्रिमंडल में उप प्रधान मंत्री रहे। 8 नवंबर, 1927 को कराची, ब्रिटिश भारत (अब पाकिस्तान) में पैदा हुए लालकृष्ण आडवाणी विभाजन के बाद भारत आ गए। हैदराबाद के डीजी नेशनल कॉलेज से स्नातक करने के बाद, उन्होंने मुंबई के सरकारी लॉ कॉलेज में कानून की पढ़ाई की। इसके बाद वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में शामिल हो गए और 1947 में राजस्थान में इसकी गतिविधियों की कमान संभाली। जब 1951 में श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने आरएसएस की राजनीतिक शाखा, भारतीय जनसंघ (बीजेएस) की स्थापना की, तो लालकृष्ण आडवाणी पार्टी की राजस्थान इकाई के सचिव बने और 1970 तक इस पद पर बने रहे। 1960-1967 तक, वह जनसंघ की राजनीतिक पत्रिका ऑर्गनाइजर में भी थे, जहां उन्होंने सहायक संपादक के रूप में काम किया। इससे पहले राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 30 मार्च को देश की चार महान शख्सियतों- बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जननायक कपूर्री ठाकुर, देश के पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव, किसानो के मसीहा कहे जाने वाले पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह और देश के प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक एमएस स्वामीनाथन को भारत रत्न से सम्मानित किया था। राष्ट्रपति भवन के दरबार हॉल में शनिवार को आयोजित एक कार्यक्रम में इन चारों विभूतियों को मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया गया था।

पीएम मोदी ने मेरठ से चुनाव प्रचार का किया आगाज, विपक्ष पर बोला हमला

पूरा देश कह रहा है की तीसरी बार मोदी सरकार, चार जून 400 पार : मोदी

बोलें-भ्रष्टाचारी चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, एक्शन होगा और जरूर होगा

प्रात: किरण

मेरठ/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने क्रांतिधरा मेरठ से चुनावी शंखनाद करते हुये रविवार को कहा कि कितना भी बड़ा भ्रष्टारचारी हो, उसके खिलाफ कार्रवाई होगी और ह्यमोदीह्ल झुकने वाला नहीं है। श्री मोदी यहां मोदीपुरम स्थित केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान के मैदान में आयोजित विशाल रैली को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वहद (मोदी) भ्रष्टाचार पर कार्रवाई कर रहे हैं, तो कुछ लोग अपना आपा खो बैठे हैं। उन्होंने विपक्ष पर निशाना साधते हुये कहा, मोदी का मंत्र है, भ्रष्टाचार हटाओ! वे कहते हैं, भ्रष्टाचारी बचाओ!

प्रधानमंत्री ने कहा, वर्ष 2024 का चुनाव महज सरकार बनाने के लिये नहीं है, बल्कि दो खेमों की लड़ाई है। एक खेमा राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन का है, जो भ्रष्टाचार हटाने के लिये मैदान में है, जबकि दूसरा वह है, जो भ्रष्टाचारियों को बचाने के लिये मैदान में है। उन्होंने कहा कि इन भ्रष्टाचारियों ने, इन बेइमानों ने जिनका धन लूटा है, उनका धन मुझे वापस लौटाना है और इन्हीं लोगों ने मिलकर एक इंडी गठबंधन बना लिया है।

श्री मोदी ने कहा, इनको लगता है मोदी इससे डर जायेगा, लेकिन मेरे लिये, मेरा भारत, मेरा परिवार है। अपने देश को भ्रष्टाचार से बचाने के लिये यह कदम उठाये जा रहे हैं। उन्होंझने स्प ष्ट कहा कि भ्रष्टाचारियों के खिलाफ लड़ाई लड़ता रहूंगा और इसलिये बड़े-बड़े भ्रष्टाचारी आज

सलाखों के पीछे हैं। उच्चतम न्यायालय तक से जमानत नहीं मिल रही है और उन्हें न्यायालय के चक्कर लगाने पड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के किये कार्यों की कीमत देश को आज तक चुकानी पड़ रही है। ऐसे लोगों को देश कभी माफ नहीं करेगा। उन्होंने कहा कि तीन करोड़ महिलाओं को लखपति दीदी बनाने पर काम किया जा रहा है। नमो ड्रोन दीदी योजना भी गांव में बहनों का भाग्य बदलने जा रही है, इसमें महिला स्वयं सहायता समूह को आधुनिक ड्रोन दिये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह ड्रोन हमारी खेती का भविष्य बदलने वाले हैं और उसे आसान करने वाले हैं। जब गांव की बेटियां ड्रोन पायलट बनेगी, उनका गौरव भी बढ़ेगा, उनकी कमाई भी बढ़ेगी और किसानी भी आसान हो जायेगी। प्रधानमंत्री ने महिलाओं की सुरक्षा की चर्चा करते हुये कहा कि लोकसभा और विधानसभा में महिलाओं को आरक्षण भी पहले असंभव लगता था, लेकिन नारी शक्ति अभिनंदन अधिनियम ने इसे संभव कर दिखाया है। उन्होंने कहा कि चार करोड़ गरीबों को पक्के घर बना कर दिये गये, यह हमारी सरकार है, जिसने 11 करोड़ से ज्यादा शौचालय बनाकर महिलाओं की गरिमा की रक्षा की है। हमारी सरकार ने ही ढाई करोड़ से ज्यादा घरों में बिजली कनेक्शन देकर उनके जीवन से अंधेरा दूर किया है। बहनों के लिये बीते 10 वर्ष से देश में सुविधा, सुरक्षा और सम्मान दे रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि आने वाले पांच वर्ष नारी शक्ति की समृद्धि के होने वाले हैं, देश में करोड़ों बहन और बेटियों को पहली बार उद्यमी बनाया है, पुलिस हो या फिर अर्धसैनिक बल हो, इसमें आज बेटियों की संख्या दो गुना से अधिक हो चुकी है। मुद्रा योजना ने करोड़ों बहनों को पहली बार अपना बिजनेस शुरू करने का संबल दिया है। पिछले 10 वर्षों में 10 करोड़ महिलायें स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हैं। उन्होंने कहा कि हमारी सेना के जवानों ने यह आशा छोड़ दी थी, यह भी असंभव लगता था लेकिन हमने न सिर्फ ह्यवन रैंक वन पेंशनह्ल लागू किया। उन्हों ने कहा कि तीन तलाक कानून भी लोगों को असंभव सा लगता था, अब न सिर्फ यह कानून बन चुका है, बल्कि यह हजारों मुस्लिम बहनों की जिंदगी बचा रहा है। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 कभी हटेगा, यह भी असंभव लगता था, लेकिन उसके हटने के बाद जम्मू- कश्मीर का तेज विकास भी हो रहा है, इसीलिये आज वहां के लोग भाजपा को आशीर्वाद भी दे रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि अयोध्या में राम मंदिर बनेगा, यह लोगों को मुश्किल लगता था, लेकिन राम मंदिर बना और इस बार अवध में राम लला ने भी खूब होली खेली। उन्होंशने कहा, मोदी गरीबी से टक्कर लेकर यहां पहुंचा है, इसलिये हर गरीब का दुख, हर गरीब की तकलीफ मोदी भली-भांति समझता है। इसीलिये हमने गरीब की चिंता दूर करने के लिये योजनायें बनायीं। गरीब को इलाज की चिंता न हो, इसलिए पांच लाख रुपये तक मुफ्त इलाज वाली आयुष्मान योजना बनायी। हमारी सरकार ने गरीबों को मुफ्त राशन देकर गरीबों की मदद की है, जिसको किसी ने नहीं पूछा, उसको मोदी ने पूजा है। मोदी ने कहा कि उन्होंने लाल किले से कहा था, यही समय है सही समय है, भारत का समय आ गया है, भारत चल पड़ा है, आज भारत में तेजी से आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर बन रहा है, आज भारत इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण पर अभूतपूर्व निवेश कर रहा है।

तीनों सेनाओं के विशेष कार्रवाई बल ने अभ्यास में लिया हिस्सा

खत्म हुआ भारत-अमेरिका की तीनों सेनाओं का टाइगर ट्राइंफ अभ्यास

होली का त्योहार दोनों नौसेनाओं के कर्मियों ने 25 मार्च को एक साथ मनाया

प्रात: किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। भारत और अमेरिका की तीनों सेनाओं के बीच द्विपक्षीय अभ्यास टाइगर ट्राइंफ विशाखापट्टनम में खत्म हो गया है। अभ्यास का समापन समारोह अमेरिकी जहाज यूएसएस समरसेट पर आयोजित किया गया। दोनों देशों के बीच मजबूत रणनीतिक साझेदारी के प्रतीक इस अभ्यास का उद्देश्य बहुराष्ट्रीय मानवीय सहायता और आपदा राहत (एचएडीआर) संचालन शुरू करने में सर्वोत्तम प्रथाओं और मानक संचालन प्रक्रियाओं को साझा करना था। द्विपक्षीय अभ्यास ह्यटाइगर ट्राइंफह्ल का बंदरगाह चरण 18-25 मार्च को विशाखापट्टनम में हुआ, जिसमें प्री-सेल चर्चा, विषय वस्तु विशेषज्ञ विनिमय, खेल कार्यक्रम, जहाज बोर्डिंग अभ्यास और क्रॉस डेक दौरे शामिल थे। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के हिस्से के रूप में भारत की जीवंत संस्कृति को प्रदर्शित करने वाला होली का त्योहार दोनों नौसेनाओं के कर्मियों ने 25 मार्च को एक साथ मनाया। इसके बाद 26-30 मार्च तक समुद्री चरण में काकीनाडा और विशाखापट्टनम के पास भारतीय नौसेना और अमेरिकी नौसेना के जहाजों के बीच यूएच-3एच, सीएच-53 और एमएच-60आर हेलीकॉप्टरों से जुड़े क्रॉस डेक हेलीकॉप्टर ऑपरेशन भी किए गए। इस दौरान संयुक्त कमान और नियंत्रण केंद्र, एचएडीआर संचालन

के लिए संयुक्त राहत और चिकित्सा शिविर की स्थापना के लिए काकीनाडा में सैनिकों की लैंडिंग हुई। भारतीय नौसेना की ओर से एक लैंडिंग प्लेटफॉर्म डॉक, लैंडिंग शिप टैंक (बड़े), उनके अभिन्न लैंडिंग क्राफ्ट और हेलीकॉप्टर, गाइडेड मिसाइल फ्रिगेट और लंबी दूरी के समुद्री टोही विमान शामिल थे। भारतीय सेना का प्रतिनिधित्व मशीनीकृत बलों सहित एक इन्फैंट्री बटालियन समूह ने किया। भारतीय वायुसेना ने एक मध्यम लिफ्ट विमान, परिवहन हेलीकॉप्टर और रैपिड एक्शन मेडिकल टीम को इस अभ्यास के लिए तैनात किया था। यूएस टास्क फोर्स में एक यूएस नेवी लैंडिंग प्लेटफॉर्म डॉक शामिल हुआ, जिसमें इसके अभिन्न लैंडिंग क्राफ्ट एयर कुशन और हेलीकॉप्टर, एक विध्वंसक, समुद्री टोही और मध्यम लिफ्ट विमान और यूएस मरीन भी थे। तीनों सेनाओं के विशेष ऑपरेशन बलों ने भी अभ्यास में भाग लिया। बंदरगाह और समुद्री चरण के दौरान विशाखापट्टनम और काकीनाडा में अमेरिकी समकक्षों के साथ संयुक्त अभियान चलाया।

लोकतंत्र बचाओ नहीं, भ्रष्टाचार छुपाओ रैली है : भाजपा

प्रात: किरण

नई दिल्ली/एजेंस। दिल्ली के रामलीला मैदान में इंडिया ब्लॉक की लोकतंत्र बचाओ रैली पर बीजेपी ने हमला बोला और कहा कि विपक्ष पुराने गुनाहों को छिपाने के लिए रामलीला मैदान में एकत्र हो रहा है। बीजेपी प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने इसे परिवार बचाओ, भ्रष्टाचार छुपाओ रैली करार दिया है।

बीजेपी सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने कहा, आज यह कहा जा सकता है कि ये सभी पार्टियां जो राम मंदिर के विरोधी थीं, जिन्होंने हिंदू धर्म के सामूहिक विनाश जैसे संकल्प लिए, अपने पुराने अपराधों को छुपाने के लिए एक साथ इकट्ठा हो रहे हैं। इन्होने हिंदू धर्म के देवी-देवताओं पर कई आपत्तिजनक टिप्पणियाँ कीं, अपने भ्रष्टाचार के पुराने अपराधों को छिपाने के लिए रामलीला मैदान का उपयोग कर रहे हैं।

आज जब ये यहां एकत्र हो रहे हैं, तो मुझे लगता है कि अगर इसे एक शब्द में कहा जा सकता है, तो हिंदी में एक कहावत है, ह्यचोरी ऊपर से सीनाजोरी। त्रिवेदी ने कहा कि ये सभी हिन्दू विरोधी, सनातन विरोधी हैं। उन्होंने कहा, कई साल पहले इसी रामलीला मैदान में इंडिया अगेंस्ट करप्शन रैली हुई थी, लेकिन आज करप्शन करने वाले सभी एक साथ खड़े हो रहे हैं।

दिल्ली के रामलीला मैदान में आयोजित लोकतंत्र बचाओ रैली में विपक्षी दिग्गजों का जुटान

विपक्ष ने दिखाई एकजुटता, केन्द्र सरकार को सत्ता से हटाने का लिया संकल्प

प्रात: किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। विपक्षी दलों के प्रमुख नेता रविवार को दिल्ली के ऐतिहासिक रामलीला मैदान में इंडिया समूह के नेतृत्व में जुटे और अपनी ताकत का प्रदर्शन किया। इंडिया समूह ने भारतीय जनता पार्टी की कथित जन विरोधी नीतियों और तानाशाही के विरोध में लोकतंत्र बचाओ रैली का आयोजन किया जिसमें कांग्रेस समेत 28 पार्टियों के नेता शामिल हुए। लोकसभा चुनाव से पहले विपक्षी दलों ने इस जनसभा का आयोजन दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की गिरफ्तारी, भाजपा की

केंद्र सरकार की कथित तानाशाही, बेरोजगारी, महंगाई और भ्रष्टाचार के विरोध में किया। महारैली को संबोधित करते हुए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जून खड़गे ने कहा कि संविधान और लोकतंत्र बचाने के लिए है। देश में निष्पक्ष चुनाव नहीं हो रहा है। श्री मोदी लोकतंत्र नहीं चाहते हैं। वह तानाशाही तरीके से देश को चलाना चाहते हैं। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर लोकसभा चुनाव में फिक्सिंग करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि चुनाव से पहले नेताओं को जेल में डाला जा रहा है। चुनाव कराने वाले अधिकारी बदल दिए गए हैं। बैंक खातों पर रोक लगा दी गई है और आयकर विभाग के माध्यम से डराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि भाजपा संविधान बदलने की तैयारी कर रही है। इसलिए मोदी सरकार को हटाना आवश्यक है। अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने श्री केजरीवाल का पत्र पढ़ा और शिक्षा, स्वास्थ्य और बिजली की सुविधा सभी तक पहुंचाने समेत छह गारंटी दी। झारखंड के पूर्व सीएम हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना सोरेन ने कहा कि यह सरकार आदिवासियों के अधिकारों को खत्म कर रही है। श्री तेजस्वी यादव ने कहा कि भाजपा सरकार ने बेरोजगारी बढ़ाई है और किसानों को तबाह कर दिया है। उन्होंने मोदी सरकार पर ध्यान भटकने का आरोप भी लगाया। उन्होंने कहा कि भाजपा का संविधान में कोई विश्वास नहीं है। श्री उद्धव ठाकरे ने कहा कि देश को बचाने के लिए भाजपा को हराना जरूरी है। श्री डेरेक ओ ब्रायन ने कहा कि लोकतंत्र को मजबूत करने के संघर्ष में उनकी पार्टी साथ है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा इस मैदान से एलान हो रहा है कि हुकमरान जो दिल्ली में बैठे हैं वह ज्यादा दिनों तक रुकने वाले नहीं है। अगर आपके चार सौ पार हो रहे थे तो अरविन्द केजरीवाल से घबराहट क्यों है। उन्होंने कहा कि भाजपा ब्रह्मांड की सबसे झूठी पार्टी है। सत्ता को बचाने के लिए अगर ईडी और सीबीआई को आगे कर रही है तो यह चार सौ पार नहीं चार सौ हारने वाली हैं। भाजपा ने ईडी और सीबीआई से डराकर सबसे अधिक चंदा वसूलने का काम किया है। अगर देश बचाना है इनको हराना होगा। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रमुख शरद पवार ने कहा कि केजरीवाल के खिलाफ के जिस तरह की कार्रवाई की गयी वह देश के संविधान और प्रजातंत्र पर जबरदस्त हमला है।

सुनवाई निचली अदालत के आदेश को बरकरार रखने के इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले को दी गई चुनौती

तहखाने में पूजा की इजाजत को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई एक अप्रैल को

प्रात: किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। ज्ञानवापी मस्जिद प्रबंधन समिति की उस याचिका पर उच्चतम न्यायालय एक अप्रैल को सुनवाई करेगा जिसमें मस्जिद के दक्षिणी तहखाने में हिंदुओं को पूजा की अनुमति देने वाले निचली अदालत के आदेश को बरकरार रखने के इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले को चुनौती दी गई है। प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ उच्च न्यायालय के 26 फरवरी के फैसले को चुनौती देने वाली अंजुमन इंतजामिया मस्जिद कमेटी की याचिका पर सुनवाई करेगी। यह कमेटी वाराणसी में ज्ञानवापी मस्जिद के मामलों

का प्रबंधन करती है। उच्च न्यायालय ने कमेटी की याचिका खारिज कर दी थी जिसमें उसने जिला अदालत के 31 जनवरी के आदेश को चुनौती दी थी। जिला अदालत ने अपने आदेश में हिंदुओं को तहखाने में पूजा करने की अनुमति दी थी। उच्च न्यायालय ने 26 फरवरी को मस्जिद कमेटी की याचिका को खारिज करते हुए कहा था कि ज्ञानवापी के दक्षिणी तहखाने में स्थित व्यास तहखाना के अंदर पूजा पाठ रोकने का उत्तर प्रदेश सरकार का 1993 का निर्णय अवैध था। उसने कहा था कि पूजा-पाठ को बिना किसी लिखित आदेश के राज्य की अवैध कार्रवाई द्वारा रोक दिया गया था और मस्जिद प्रबंधन कमेटी द्वारा दायर दो अपील खारिज कर दी थीं। कमेटी ने अपनी एक अपील में वाराणसी जिला न्यायाधीश के 17 जनवरी के उस आदेश को चुनौती दी थी जिसमें जिला मजिस्ट्रेट को व्यास तहखाने का रिसीवर नियुक्त किया गया था जबकि कमेटी ने दूसरी याचिका में 31 जनवरी के आदेश को चुनौती दी थी जिसके द्वारा न्यायाधीश ने वहां पूजा करने की अनुमति दी थी। उच्च न्यायालय ने आदेश दिया कि मस्जिद के व्यास तहखाना में पूजा जारी रहेगी, जो काशी विश्वनाथ मंदिर के निकट स्थित है। अदालत के आदेश पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण में यह बात सामने आयी थी कि ज्ञानवापी मस्जिद का निर्माण मुगल सम्राट औरंगजेब के शासनकाल के दौरान एक हिंदू मंदिर के अवशेषों पर किया गया था। जिला अदालत ने 31 जनवरी को फैसला सुनाया था कि एक हिंदू पुजारी मस्जिद के दक्षिणी तहखाने में मूर्तियों की पूजा कर सकता है। अब पूजा-अर्चना काशी विश्वनाथ मंदिर ट्रस्ट द्वारा नामित एक हिंदू पुजारी और याचिकाकर्ता शैलेन्द्र कुमार पाठक द्वारा की जा रही है। पाठक का दावा है कि उनके नाना सोमनाथ व्यास, जो एक पुजारी भी थे, ने दिसंबर 1993 तक तहखाने में पूजा-अर्चना की थी।

कांग्रेस को 1,745 करोड़ रुपये की कर अदायगी का मिला नया नोटिस

नई दिल्ली/एजेंसी। लोकसभा चुनाव से ठीक पहले कांग्रेस को आयकर विभाग से एक बार फिर नया नोटिस मिला, जिसके जरिये आकलन वर्ष 2014-15 से 2016-17 तक के लिए 1,745 करोड़ रुपये के कर की मांग की गई है। सूत्रों ने रविवार को यह जानकारी दी। आयकर विभाग द्वारा कांग्रेस से अब तक कुल कुल 3,567 करोड़ रुपये के कर की मांग की जा चुकी है। सूत्रों के मुताबिक, ताजा नोटिस 2014-15 (663 करोड़ रुपये), 2015-16 (करीब 664 करोड़ रुपये) और 2016-17 (करीब 417 करोड़ रुपये) से संबंधित हैं। उन्होंने कहा कि अधिकारियों ने राजनीतिक दलों को मिलने वाली कर छूट समाप्त कर दी है और पार्टी पर कर लगा दिया है। सूत्रों ने कहा कि जांच एजेंसियों द्वारा छापे के दौरान कांग्रेस के कुछ नेताओं से जब्त की गई डायरियों में की गई तीसरे पक्ष की प्रविष्टियों के लिए भी कांग्रेस पर कर लगाया गया है। मुख्य विपक्षी दल ने शुक्रवार को कहा था कि उसे आयकर विभाग से नोटिस मिला है, जिसमें करीब 1,823 करोड़ रुपये का भुगतान करने को कहा गया है। कर अधिकारियों ने पिछले वर्षों से संबंधित कर मांग के लिए पार्टी के खातों से 135 करोड़ रुपये पहले ही निकाल लिये हैं। कांग्रेस ने 135 करोड़ रुपये की कर मांग के खिलाफ अदालत का रुख किया है और इस मामले में सोमवार को उच्चतम न्यायालय में सुनवाई होने की संभावना है।

संक्षिप्त समाचार

दिल्ली से दोस्त से मिलने आया देहरादून और डाल दिया उसी के घर डांका

देहरादून, एजेंसी। दोस्त से मिलने देहरादून पहुंचा दिल्ली का युवक उसकी स्कूटी लेकर ही फरार हो गया। दोनों की फेसबुक के माध्यम से दोस्ती हुई थी। राजपुर थाना पुलिस ने आरोपित को दिल्ली से गिरफ्तार कर लिया है। राजपुर थानाध्यक्ष पीडी भट्ट के अनुसार, चार मार्च को भूमिका निवासी सिनोला राजपुर ने शिकायत दर्ज करवाई कि अज्ञात ने घर से उनकी स्कूटी चोरी कर ली है। पुलिस ने घर के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे खंगाले तो एक युवक स्कूटी चोरी करता नजर आया। जिसकी फुटेज भूमिका को दिखाई गई। इस पर उन्होंने आरोपित की पहचान हिमांशु पांचाल निवासी आंबेडकर नगर, हैदरपुर, थाना शालीमार बाग, जनपद नार्थ वेस्ट दिल्ली के रूप में की। आरोपित को पकड़ने के लिए जाखन पुलिस चौकी प्रभारी विकेंद्र कुमार की देखरेख में एक टीम दिल्ली रवाना की गई, जहां शुक्रवार को पुलिस टीम ने आरोपित को दिल्ली से चोरी की स्कूटी के साथ गिरफ्तार किया। जांच में पता चला कि भूमिका के बेटे की दोस्ती हिमांशु से फेसबुक के माध्यम से हुई थी। घटना वाले दिन हिमांशु उनके बेटे से मिलने देहरादून स्थित उनके घर आया था। मौका देखकर उसने घर से स्कूटी की चाबी चोरी कर ली। जब घर पर सभी सो रहे थे तो उसने स्कूटी को बिना स्टार्ट किए बाहर निकाला और फिर दिल्ली ले गया। स्कूटी को वह बेचने की फिराक में था।

कांग्रेस प्रदेश महासचिव महेश शर्मा ने छोड़ी पार्टी, भाजपा में हुए शामिल

हल्द्वानी, एजेंसी। महेश शर्मा ने वर्ष 2022 में कालाढूंगी से कांग्रेस के टिकट पर विधानसभा चुनाव लड़ा था। उस समय भाजपा प्रत्याशी बंशीधर भगत ने इनको शिकस्त दी थी। उत्तराखंड कांग्रेस में इस्तीफों का सिलसिला थम ही नहीं रहा। चुनाव से पहले पार्टी के कई चर्चित चेहरे इस्तीफा दे चुके हैं। वहीं, आज कांग्रेस को एक और झटका लगा। प्रदेश महासचिव और कालाढूंगी से प्रत्याशी रहे महेश शर्मा ने भी पार्टी छोड़ दी। इसके बाद वह भाजपा में शामिल हो गए। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट ने उन्हें पार्टी की सदस्यता दिलाई। बता दें कि महेश शर्मा ने वर्ष 2022 में कालाढूंगी से कांग्रेस के टिकट पर विधानसभा चुनाव लड़ा था। उस समय भाजपा प्रत्याशी बंशीधर भगत ने इनको शिकस्त दी थी।

कुमाऊंनी शैली में होगा गुरु गोरखनाथ धाम का जीर्णोद्धार

चंपावत, एजेंसी। तल्लादेश में सतयुग से अखंड धूनी जलाने के लिए प्रसिद्ध गुरु गोरखनाथ धाम जल्द ही नए स्वरूप में नजर आएगा। मंदिर का जीर्णोद्धार कुमाऊंनी शैली में किया जाएगा। इसके लिए कार्यदायी संस्था पेयजल निर्माण निगम की ओर से 2.71 करोड़ की कार्ययोजना को मूर्त रूप दिया जा रहा है। जिला मुख्यालय से 31 किमी की दूरी पर स्थित गुरु गोरखनाथ धाम में देश विदेश के गोरख पंथी साधुओं के साथ ही भारी संख्या में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। अब धाम में पहुंचने वाले साधुओं और अन्य श्रद्धालुओं को धाम के नए स्वरूप के दीदार होंगे। अब गुरु गोरखनाथ धाम को कुमाऊंनी शैली में बनाने की कवायद तेज हो गई है। सीएनडीएम की ओर से लोकसभा चुनाव की आदर्श आचार संहिता लागू होने से पूर्व ही कार्य भी शुरू कर दिया गया है। सीएनडीएस लोहाघाट के अभियंता दिनेश चंद्र भट्ट ने बताया कि निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है। गुरु गोरखनाथ धाम को नए स्वरूप में विकसित करने के बाद पर्यटन को तो बढ़ावा मिलेगा ही इससे लोगों की धार्मिक आस्था के प्रति भी रुचि भी बढ़ेगी। सीएनडीएस की ओर से यहां पर लगी टायल को हटाकर नया स्वरूप दिया जाएगा।

ओपीडी बंद, इमरजेंसी में 72 मरीज पहुंचे

बागेश्वर, एजेंसी। जिला अस्पताल में गुड फ्राइडे के दिन ओपीडी बंद रही। आपातकालीन कक्ष में 72 मरीजों ने जांच करवाई। अधिकतर मरीज वायरल बुखार और पेट संबंधी बीमारी के थे। पूर्व में अवकाश के दिन जिला अस्पताल की ओपीडी दो घंटे तक खुली रहती थी। हालांकि महाशिवरात्रि पर्व के बाद चिकित्सकों के प्रांतीय संगठन ने अवकाश के दिन ओपीडी को पूरी तरह से बंद करने का निर्णय लिया है। इमरजेंसी में मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण कर इलाज किया। सीएमएस डॉ. वीके टम्टा ने बताया कि अवकाश के दिन जांच कराने आने वाले मरीजों को इमरजेंसी में पूरी सुविधा प्रदान की जा रही

नए वर्ष के उल्लास के लिए पहुंचे पर्यटकों को झटका! बिना पंजीकरण केदारकांठा गए लोगों का कटा चालान

पुरोला, एजेंसी।
नए वर्ष का उल्लास मनाने के लिए केदारकांठा जाने वाले दो हजार से अधिक पर्यटकों की उम्मीद को गोविंद वन्यजीव पशुविहार राष्ट्रीय पार्क ने झटका दिया है। केदारकांठा जाने के लिए जब पर्यटक नैटवाड़, सांकरी सौड़ पहुंचने लगे तो पार्क को नियमों की याद आई और प्रतिदिन केदारकांठा के लिए पर्यटकों का सीमित पंजीकरण लागू कर दिया है।

सीमित पंजीकरण लागू होने से पर्यटक खासे परेशान हैं साथ ही पर्यटन व्यवसाय चलाने वाले ग्रामीणों को भी आर्थिक नुकसान का झटका लगा है। वहीं शनिवार को कुछ ट्रैकिंग संचालक पर्यटकों को गांव के विभिन्न रास्तों और बिना पंजीकरण के ही केदारकांठा लेकर गए। इन पर्यटकों और एजेंसियों के विरुद्ध पार्क की उपनिदेशक ने चालान काटने के निर्देश दिए है।

केदारकांठा के बेस कैंप गांव सांकरी में 25 से अधिक ट्रैकिंग एजेंसी हैं। गांव के हर घर में होम स्टे है और प्रत्येक परिवार पर्यटन गतिविधि से जुड़ा हुआ है। लेकिन पार्क ने सीमित संख्य में केदारकांठा के लिए पर्यटकों को अनुमति देने का नियम लागू किया तो पय्रटन को बड़ा झटका लगा है।

ट्रैकिंग एजेंसियों को होटल, होमस्टे, बस आदि की एडवांस बुकिंग रद्द होने की आशंका है। ट्रैकिंग एजेंसियों को यह डर सताने लगा है। गत शुक्रवार को पार्क ने केवल डेढ़ सौ पर्यटकों को अनुमति दी। पर्यटकों को रोके जाने पर पर्यटकों व ट्रैकिंग संचालकों ने विरोध प्रदर्शन भी किया। शनिवार को कुछ ट्रैकिंग एजेंसी एजेंसी कि जरिये पर्यटक गांव विभिन्न रास्तों केदारकांठा की ट्रैकिंग पर गए।

जबकि कई पर्यटक सांकरी, सौड़ और कोटगांव में होमस्टे में ठहरे हुए हैं।

पार्क प्रशासन के अड़ियल रवैये से हरकीदून, केदारकांठा एवं चांगसील आदि पर्यटक स्थलों के ट्रैकिंग व्यवसाय से जुड़े ग्रामीणों को अब रोजी-रोटी छीनने का डर सताने लगा है। सौड़ गांव की हीरामणि देवीने कहा कि केदारकांठा जाने से पर्यटकों को रोका जा रहा है। जिससे ग्रामीणों के सामने आजीविका का संकट पैदा हो गया। उन्होंने मांग की है कि उनके बच्चे पढ़े लिखे हैं। सरकार नौकरी देने में नाकाम रही है। गांव में पर्यटन का स्वरोजगार कर रहे हैं तो इसे भी छीना जा रहा है।

पर्यटन व्यवसायी भगत सिंह रावत ने कहा कि सांकरी स्थित दर्जनों ट्रैकिंग एजेंसी के माध्यम से होटल व होमस्टे, बसों, हवाई जहाज एवं विभिन्न संसाधनों की एडवांस बुकिंग कर नव वर्ष का जश्न मनाने 4-5 दिन से सांकरी भारी संख्या में पर्यटक पहुंचे है। पहले से सब कुछ ठीक चल रहा था, फिर अचानक पार्क प्रशासन का रवैया सख्त हो गया।

केदारकांठा जाने को संख्या की बाध्यता को लेकर पार्क प्रशासन को एक दो माह पहले ही ट्रैकिंग एजेंसियों को नोटिस देकर सूचित कर देना चाहिए था। ताकि एजेंसियां पर्यटकों की एडवांस बुकिंग न कराते अथवा सीमित संख्या में कराते। अब जब करोड़ों रुपए खर्च कर भारी संख्या में पर्यटक केदारकांठा जाने को सांकरी में डटे हैं। पार्क प्रशासन नियम कानून व पंजीकरण का नाटक कर क्षेत्र के पर्यटन व्यवसाइयों और पर्यटकों को परेशान करने काम कर रहा है।

नव वर्ष का जश्न मनाने अपने दोस्तों के साथ केदारकांठा जाने की उत्सुकता में महाराष्ट्र की अंजलि, कर्नाटक की अर्चना दूगल एवं नंदन मूलपुरी तीन दिन पहले सांकरी आई है। ये पर्यटक कहते हैं कि बर्फबारी में केदारकांठा का देखने एवं नववर्ष का जश्न मनाने दोस्तों के साथ घर से चलते समय मन में बड़ी उमंग एवं खुशी थी। तीन-चार दिन से सांकरी में ठहरे हुए हैं। न तो बर्फ दिखी और पार्क प्रशासन के चलते अभी तक केदारकांठा जाने की भी अनुमति नहीं मिली।

गोविंद वन्यजीव विहार राष्ट्रीय पार्क की उपनिदेशक डॉ. अभिलाषा सिंह ने बताया कि पर्यटकों एवं पर्यावरण की सुरक्षा के मध्य नजर ही पंजीकरण करनें की अनिवार्यता एवं समिति संख्या में पर्यटकों बारी-बारी से केदारकांठा भेजने की प्रक्रिया शुरू की गई थी परंतु शुक्रवार और शनिवार को भी भारी संख्या में ट्रैकिंग एजेंसियों व पर्यटकों ने पार्क के नियमों को धता बता कर बैरियर में जबरन घुसकर अनाधिकृत रूप से विभिन्न रूटों से केदारकांठा गए हैं। जो कि पार्क के नियमों का उलंघन हैं। रेंज अधिकारियों को बैरियर के अंदर जबरदस्ती घुसने एवं बिना पंजीकरण के केदारकांठा जाने वालों का चालन काटने व कार्यवाही के निर्देश दिए गए हैं।

शहर में बढ़ रहे हैं किडनी के मरीज

बागेश्वर, एजेंसी।
जिले में लोग किडनी की बीमारी की चपेट में आ रहे हैं। जिला अस्पताल में डायलिसिस कराने वाले लोगों की संख्या बढ़ रही है लेकिन डायलिसिस उपकरणों के अभाव में रोजाना मात्र छह लोगों की डायलिसिस हो पा रही है। वर्तमान में 18 मरीजों को ही डायलिसिस हो रही है, जबकि प्रतीक्षा सूची के मरीजों की संख्या बढ़कर 54 पहुंच गई है।

जब किडनी के मरीजों की बीमारी बढ़ जाती है और किडनी काम करना बंद कर देती है तब मरीज को डायलिसिस कराने की जरूरत पड़ती है। डायलिसिस के माध्यम से मरीज के शरीर में रक्त को फिल्टर किया जाता है। जिला अस्पताल में हंस फाउंडेशन के माध्यम से डायलिसिस की सुविधा तो उपलब्ध है लेकिन मात्र तीन बेड ही उपलब्ध हैं। इसके चलते अधिकतर मरीजों को डायलिसिस के लिए इंतजार करने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

जिले में किडनी के मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही है। मार्च में केंद्र में 18 लोगों का डायलिसिस किया जाना इसका उदाहरण है। जबकि पिछले दो सालों में केवल 45 मरीजों को ही डायलिसिस की सुविधा मिल सकी है। प्रतीक्षा सूची के मरीजों को जोड़कर देखें तो जिले में किडनी रोगियों की वास्तविक स्थिति कहीं अधिक है।

-जिला अस्पताल में कार्यरत डायलिसिस तकनीशियन दिया मंडल ने बताया की बहुत से लोग दर्द निवारक दवाइयों का सेवन करते हैं, इससे भी यह बीमारी बढ़ती है। दर्द निवारक दवाइयां किडनी में जमा होती रहती हैं। सिगरेट, बीड़ी पीने और मोटापे से भी किडनी की बीमारी होने का खतरा रहता है। ब्लड प्रेशर (बीपी) और शुगर का नियंत्रित रहना बहुत जरूरी है। अपने खानपान का विशेष ध्यान रखें, अधिक से अधिक पानी पीएं, रोजाना व्यायाम करें, 35 से अधिक उम्र के लोग नियमित बीपी और शुगर की जांच कराएं, खाने में ज्यादा नमक और ज्यादा मीठा ना खाएं, चिकित्सक की सुझाई दवाइयों का ही सेवन करें।

सैलानियों के लिए आज खुलेंगे गंगोत्री नेशनल पार्क के गेट

उत्तरकाशी, एजेंसी।
विश्व प्रसिद्ध गंगोत्री नेशनल पार्क के गेट 1 अप्रैल को पर्यटकों के लिए खोले जाएंगे। जिसके बाद पर्यटक गर्तांगली, नेलांग और गोमुख तपोवन की सैर कर सकें। भले ही गंगोत्री और गोमुख के बीच कई स्थानों पर हिमखंड के कारण ट्रैक अवरुद्ध है। हिमखंड की बर्फ हटाने और पिघलने में अभी समय लगेगा। ऐसे में केवल पर्वतारोही पर्यटकों को ही गोमख तपोवन जाने की अनुमति मिल सकती है। आम पर्यटकों को गोमुख-तपोवन की ट्रैकिंग के लिए इंतजार करना पड़ेगा।

गंगोत्री नेशनल पार्क क्षेत्र में गंगोत्री ग्लेशियर, हिमालय की प्रसिद्ध चोटियां, गंगा का उद्गम स्थल गोमुख, केदारताल, भारत चीन सीमा पर स्थित नेलांग घाटी और ऐतिहासिक गर्तांगली व अन्य कई पर्यटक स्थल हैं। 1553 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला गंगोत्री नेशनल पार्क हिम तेंदुआ के लिए खास पहचान रखता है।

इसके अलावा पार्क में भूरा भालू, काला भालू, भरल, अगराली भेड़, लाल लोमड़ी सहित कई वन्यजीव विचरण करते हैं। दुनिया के पर्वतारोही भी गंगोत्री नेशनल पार्क में स्थित विश्व प्रसिद्ध चोटियों के आरोहण के लिए आते हैं। शीतकाल में 1 दिसंबर से लेकर 31 मार्च तक पार्क के गेट पर्वतारोही और सैलानियों के लिए बंद रहते हैं। गंगोत्री नेशनल पार्क प्रशासन आगामी 1 अप्रैल को पार्क के गेट खोलने की तैयारी शुरू कर दी है। पार्क के गेट खुलने पर पर्यटक गर्तांगली की सैर भी कर सकेंगे। गर्तांगली गेट पर भी पार्क की ओर से तैयारी की गई है।

उत्तराखंड में पल-पल पग-पग जिंदगी पर मौत का झपट्टा, कइयों के आशियाने उजड़े तो कई घरों के बुझे चिराग

देहरादून, एजेंसी।
उस मां पर की क्या स्थिति होगी, जिसके कलेजे के टुकड़े को गुलदार अथवा बाघ ने मार डाला हो। उस परिवार की क्या मनोदशा होगी, जिसके कमाऊ पूत को किसी वन्यजीव ने छीन लिया हो। उस किसान की क्या स्थिति होगी, जिसके खेतों में खड़ी फसलों को जंगली जानवरों ने चौपट कर डाला हो। जीवनभर पाई-पाई जोड़कर बनाए गए आशियाने को यदि हाथी ने उजाड़ दिया हो तो उस परिवार पर क्या बीतती होगी।

वन्यजीवों के हमलों से त्रस्त 71.05 प्रतिशत वन भूभाग वाले उत्तराखंड में ऐसे तमाम प्रश्न हर किसी को सोचने पर विवश कर देते हैं। यक्ष प्रश्न तो यह है कि आखिर, वन्यजीवों के हमलों से जनमानस को कब निजात मिलेगी। चूंकि, मौका लोकसभा चुनाव का है तो अपनी चौखट पर आने वाले प्रत्याशियों व उनके समर्थकों से मतदाता तो यह प्रश्न पूछेंगे ही। यही नहीं, चुनावी माहौल में यह प्रश्न भी फिजां में तैरेगा कि वन्यजीव और मनुष्य दोनों ही सुरक्षित रहें, वह आदर्श स्थिति कब तक आएगी।

यह सही है कि वन्यजीव संरक्षण में उत्तराखंड महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। बाघ, गुलदार व हाथी जैसे वन्यजीवों का बढ़ता कुनबा इसका उदाहरण है और इससे उसे देश-दुनिया में विशिष्ट पहचान भी मिली है। बावजूद इसके तस्वीर का दूसरा पहलू भी है। यही वन्यजीव, राज्यवासियों के लिए मुसीबत का सबब भी बन गए हैं। आए दिन वन्यजीवों के हमले सुर्खियां बन रहे हैं। पहाड़ हो अथवा मैदान या फिर

घाटी वाले क्षेत्र, सभी जगह वन्यजीवों का खौफ तारी है।

सबसे अधिक आतंक तो गुलदारों का है, जो घर-आंगन और खेत-खलिहानों में धमककर जान के खतरे का सबब बने हुए हैं। गुलदार तो आबादी वाले क्षेत्रों में ऐसे घूम रहे हैं, मानो मवेशी हों। यही नहीं, कार्बेट, राजाजी टाइगर रिजर्व समेत 13 वन प्रभागों से लगे क्षेत्रों में बाघों ने नींद उड़ाई हुई है। स्थिति ये हो चली है कि गुलदार व बाघों की सक्रियता के कारण प्रभावित क्षेत्रों में स्कूलों की छुट्टियां तक करनी पड़ी हैं।

पहाड़ के गांवों में रात्रि कर्फ्यू भी इसी कारण से देखा है। यही नहीं, यमुना से लेकर शारदा नदी तक के हाथियों के बसेरे वाले क्षेत्र के आसपास के आबादी क्षेत्र में हाथियों का उत्पात किसी से छिपा नहीं है। इसके अलावा पहाड़ में भालू बड़ी मुसीबत बनकर उभरे हैं। बंदर, लंगूर, वनरोज, सूअर, सेही, हाथी जैसे जानवर फसलों को निरंतर चौपट कर किसानों की मेहनत पर पानी फेर रहे हैं।

इस परिदृश्य के बीच गांवों से निरंतर हो रहे पलायन के पीछे भी बड़ा कारण वन्यजीवों का आंतक और फसल क्षति है। पलायन निवारण आयोग की रिपोर्ट भी इसकी तस्दीक करती है। इसके मुताबिक 5.61 प्रतिशत लोगों के पलायन करने का कारण वन्यजीवों से फसल क्षति है।

यद्यपि, मानव-वन्यजीव संघर्ष की रोकथाम के दृष्टिगत राज्य गठन के बाद से ही चिंता जताई जा रही है, लेकिन ठोस समाधान अभी तक नहीं निकल पाया है। अब जबकि पानी सिर से ऊपर बहने लगा है तो कुछ समय पहले वन मुख्यालय में मानव-वन्यजीव संघर्ष निवारण को बाकायदा प्रकोष्ठ गठित किया गया। प्रकोष्ठ ने वन्यजीव क्षेत्रवार संवेदनशील स्थल भी चिह्नित किए हैं, लेकिन समस्या जस की तस है।

असल में, वन्यजीवों के हमले तभी थम सकते हैं, जब उन्हें अपनी हद यानी जंगल में ही थामने रखने को कदम उठाए जाएं। इस मोर्चे पर ही गंभीरता से पहल नहीं हो पाई है। इसके लिए जंगलों में वन्यजीवों के लिए भोजन, पानी का पर्याप्त इंतजाम, एक से दूसरे जंगल में आवाजाही के लिए निर्बाध गलियारे जैसी व्यवस्था होनी चाहिए। साथ ही ऐसे क्षेत्रों पर विशेष ध्यान केंद्रित करना होगा, जहां से वन्यजीव आबादी वाले क्षेत्रों की तरफ रुख कर रहे हैं। निरंतर गहराती इस समस्या के समाधान को लेकर जो इच्छाशक्ति दिखाई जानी चाहिए थी, वह नजर नहीं आ रही।

केंद्रीय विद्यालयों में पहली कक्षा के लिए पंजीकरण आज से, आखिरी तारीख से पहले कर लें आवेदन

देहरादून, एजेंसी।
केंद्रीय विद्यालयों में पहली कक्षा में दाखिला के लिए आनलाइन पंजीकरण कल यानी एक अप्रैल से शुरू हो जाएंगे। जिसकी अंतिम तिथि 15 अप्रैल शाम पांच बजे तक रहेगी। इसके बाद स्कूल सूची जारी करने के बाद दाखिला देगा। केंद्रीय विद्यालय संगठन ने इस संबंध में सर्कुलर जारी कर दिया है। उत्तराखंड में 45 केंद्रीय विद्यालय हैं। जिसमें तकरीबन 44 हजार छात्र संख्या है। इनमें पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय आइटीबीपी व केंद्रीय विद्यालय हल्द्वानी में दो शिफ्ट चलती हैं। लंबे समय से अभिभावक केंद्रीय विद्यालयों में पहली कक्षा में दाखिला का इंतजार कर रहे थे।

पहली कक्षा में दाखिला लेने वाले बच्चे की उम्र 31 मार्च तक न्यूनतम छह वर्ष होनी चाहिए। दूसरी व इससे ऊपर के लिए प्रवेश व पंजीकरण प्रपत्रों के बारे में जानकारी विद्यालयों की वेबसाइट पर शीघ्र उपलब्ध होगी।

सबसे पहले वेबसाइट पर जाकर पंजीकरण करें। पंजीकरण पूरा होने के बाद लागइन कर एडमिशन फार्म भरें। मांगे गए दस्तावेज अपलोड करें। फार्म सब्मिट करने के बाद आवेदन की रसीद का प्रिंट आउट निकाल अपने पास रखें।

सीट रिक्त होने की स्थिति में पहली को छोड़ दूसरी व अन्य कक्षा के लिए पंजीकरण भी सोमवार से शुरू होंगे।

केदारकांठा में पर्यटकों के बिना पंजीकरण के जाने पर पार्क प्रशासन सख्त, लापरवाही बरतने पर सांकरी रेंज अधिकारी अटैच

पुरोला, एजेंसी।
पिछले एक सप्ताह के दौरान केदारकांठा में बिना पंजीकरण के भेजे जाने के मामले में सांकरी रेंज के रेंज अधिकारी एसएल सैलानी को गोविंद वन्यजीव विहार राष्ट्रीय पार्क के कार्यालय पुरोला में अटैच किया है।

वहीं अनाधिकृत रूप से केदरकांठा नए साल का जश्न मनाने जाने वाले पर्यटकों की सुरक्षा को लेकर पार्क प्रशासन की सख्ती दिखाई है। रविवार को मुख्य पड़ाव सांकरी में स्थिति सामान्य बनी रही। भले ही स्थानीय ट्रैकिंग एजेंसी संचालक गोविंद वन्यजीव विहार के फरमान को लेकर खासे नाराज हैं।

सांकरी रेंज के नए रेंज अधिकारी अधिकारी गौरव अग्रवाल ने बताया कि पार्क प्रशासन की सख्ती और बार-बार अपील के बाद बगैर पंजीकरण के दर्जनों पर्यटक जान जोखिम में डालकर खतरनाक मार्गों से केदारकांठा जाने का प्रयास कर रहे हैं। किसी के साथ कोई अप्रिय घटना न हो व सुरक्षा को लेकर जगह-जगह राष्ट्रीय पार्क की छह टीमें निगरानी में लगाई गई हैं।

साथ ही सभी पर्यटकों व ट्रैकिंग एजेंसी संचालकों से भी बगैर अनुमति के जान जोखिम में डालकर खतरनाक रास्तों से केदरकांठा पर्यटकों न भेजने में सहयोग की अपील की गई है। साथ ही अलग-अलग मार्गों से रविवार को तीन सौ पंजीकृत पर्यटक केदारकांठा पहुंचे हैं। गोविंद वन्यजीव विहार राष्ट्रीय पार्क के उपनिदेशक डॉ. अभिलाषा सिंह के अनुसार, अब सांकरी में स्थिति सामान्य है। पार्क प्रशासन आपदा की दृष्टि से खतरनाक उबड़-खाबड़ रास्तों से बगैर पंजीकरण एवं अनाधिकृत रूप से केदारकांठा जाने वाले पर्यटकों की सुरक्षा को लेकर भी चिंतित व सतर्क है।सुरक्षा निगरानी को लेकर पार्क कर्मियों की टीम लगाई है साथ ही ट्रैकिंग एजेंसियों से भी सहयोग की अपील की गई है। लापरवाही बरतने और समय से ट्रैकिंग एजेंसियों को सतर्क न करने के मामले में रेंज अधिकारी एसएल सैलानी को अटैच किया है।

रामलीला मैदान से सीएम केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने किया देशवासियों से आह्वान, इस तानाशाही के खिलाफ हम लड़ेंगे और जीतेंगे

नई दिल्ली, प्रातः किरण संवाददाता

दिल्ली के जिस रामलीला मैदान से एक दशक पहले अरविंद केजरीवाल ने देश में एक नई राजनीति की शुरूआत की, रविवार को उसी मैदान से उनकी पत्नी सुनीता केजरीवाल ने 140 करोड़ भारतवासियों से मोदी सरकार की तानाशाही के खिलाफ एकजुट होने का आह्वान किया। उन्होंने देशवासियों से कहा कि देश के अंदर यह तानाशाही नहीं चलने देंगे। हम सभी एकजुट होकर इसके खिलाफ लड़ेंगे और जीतेंगे। उन्होंने दिल्लीवालों से कहा कि आपके केजरीवाल शेर हैं। वो देश के करोड़ों लोगों के दिल में बसते हैं। ये लोग ज्यादा दिन तक उनको जेल में नहीं रख पाएंगे। इस दौरान रामलीला मैदान में उमड़े जन सैलाब ने सीएम अरविंद केजरीवाल के साथ खड़े होने का भरोसा दिया और बुलंद आवाज में कहा कि अरविंद केजरीवाल को जेल में डालकर मोदी जी ने अच्छा नहीं किया। केजरीवाल को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा नहीं देना चाहिए।

रामलीला मैदान में आयोजित इंडिया की महारैली में सीएम अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने जनता से पूछा कि हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी ने मेरे पति को जेल में डाल दिया, क्या प्रधानमंत्री जी ने सही किया? क्या आप सब मानते हैं कि केजरीवाल जी एक सच्चे देशभक्त और ईमानदार इंसान हैं। ये भाजपा वाले कह रहे हैं कि केजरीवाल जी जेल में हैं। इन्हें इस्तीफा देना चाहिए, क्या केजरीवाल जी को इस्तीफा देना चाहिए? इस पर पूरा रामलीला मैदान से एक ही आवाज आई कि केजरीवाल जी को इस्तीफा नहीं देना चाहिए। जनता का समर्थन मिलने से उत्साहित सुनीता केजरीवाल ने आगे कहा कि इन्होंने केजरीवाल जी को गिरफ्तार कर लिया है।

उन्होंने कहा कि आपके केजरीवाल शेर हैं, ये लोग ज्यादा दिन तक उनको जेल में नहीं रख पाएंगे। केजरीवाल देश के करोड़ों लोगों के दिल में बसते हैं। जिस बहादुरी और साहस केजरीवाल जी देश के लिए लड़ रहे हैं। यह देखकर कई बार मुझे लगता कि आजादी की लड़ाई में वो एक स्वतंत्रता सेनानी थे, जो देश के लिए लड़ते-लड़ते शहीद हो गए। भगवान ने इस जन्म में भी केजरीवाल जी को शायद भारत मां के लिए संघर्ष करने को भेजा है। सुनीता केजरीवाल ने मंच से कहा कि मेरे पति को दिल्ली और देश की जनता का भरपूर प्यार मिल रहा है। यह आशीर्वाद बनाए रखना। भारत में यह तानाशाही नहीं चलेगी। हम लड़ेंगे और जीतेंगे। उन्होंने इंडिया गठबंधन के सभी घटक दलों को धन्यवाद देते हुए कहा कि इस संकट की घड़ी में आप सभी हमारे साथ हैं।

वहीं, पंजाब के मुख्यमंत्री सरदार भगवंत मान ने कहा कि देश का लोकतंत्र खतरे में है। इनको यह लगता है कि ये डंडे से देश चला लेंगे तो यह देश किसी के बाप की जागीर नहीं है। यह 140 करोड़ लोगों का देश है। हम इनसे डरने-झुकने और टूटने वाले नहीं हैं। यह आजादी हमें शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, मदन लाल ढींगरा, करतार सिंह सराभा, चंद्रशेखर जैसे हजारों युवाओं ने अपनी जवानी में गले में फांसी के रस्से लटका कर दी है। ये किसी को भी जेल में डाल दे रहे हैं। स्कूल-अस्पताल बनाने वाले को अंदर कर दे रहे हैं। कांग्रेस के खाते फ्रीज कर दिए। क्या ये ऐसे लोकसभा चुनाव जीत लेंगे? ये लोग अपने आप को समझ क्या रहे हैं? इन्होंने फर्जी केस करके दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल और झारखंड के सीएम हेमंत सोरन को अंदर कर दिया। किसी के घर ईडी भेज दे रहे हैं। किसी घर छीन ले रहे हैं। क्या ये लोग इन घरों के मालिक हैं? इन घर की मालिक देश की 140 करोड़ जनता है। किसी को कोई पता नहीं कि जनता को किसे सत्ता तक पहुंचाना है। ये लोग गलतफहमी में हैं।

पंजाब के सीएम भगवंत मान ने सोनिया गांधी, सीएम अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल और हेमंत सोरन की पत्नी कल्पना सोरन को नमन करते हुए कहा कि इन्होंने इतने दुख झेले हैं। इन्होंने अपनी जिंदगी में क्या-क्या नहीं देखा। इन्होंने आंधियां-तुफान देखे हैं। इसके बाद भी ये पूरे हौसले के साथ हमारे बीच में हैं। जनता की यह तालियां किसी को ऐसे नहीं मिलती हैं। किसी को दिहाड़ी देकर मोदी-मोदी के नारे लगवाना बहुत आसान है। जब कोई दिल से बोलता है, वो बात जनता में असर रखती है। भाजपा वाले देश को टुकड़े-टुकड़े करना चाहते हैं। देश को नफरत की आंधी में लेकर जा रहे हैं। ये सीएए लेकर जब आए तब मैं संसद में सांसद था। उस दौरान मैंने मात्र 20 सेकेंड में कहा था इस लंबे सफर को मीलों में मत बांटिए, कौम को कबीलों में मत बांटिए, एक बहता हुआ दरिया है मेरा भारत देश, इसको नदियों और झीलों में मत बांटिए। अरविंद केजरीवाल को तो गिरफ्तार कर लोगे, लेकिन उनकी सोच को कैसे गिरफ्तार करोगे। आज देश में लाखों अरविंद केजरीवाल पैदा हो चुके हैं, उनको किस जेल में कैद करोगे। अरविंद केजरीवाल एक व्यक्ति का नहीं, एक सोच का नाम है।

पंजाब के सीएम भगवंत मान कहा कि पूरा इंडिया आज इकट्ठा है। इंडिया गठबंधन की यह एकजुटता देखकर भाजपा के पसीने छूट रहे हैं। ये नहीं चाहते हैं कि हम सब इकट्ठे बैठें। मैं पूरे देश की जनता से इकट्ठा होने का आह्वान करता हूं।

सीयूईटी-यूजी के आवेदन पांच अप्रैल तक होंगे

नई दिल्ली। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) ने रविवार को घोषणा की कि कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट (सीयूईटी)-यूजी के लिए आवेदन की समय सीमा 5 अप्रैल तक बढ़ा दी गई है। पहली समय सीमा 26 मार्च थी, जिसे पहले बढ़ाकर 31 मार्च कर दिया गया था। एनटीए की वरिष्ठ निदेशक (परीक्षा) साधना पाराशर ने कहा कि सीयूईटी-यूजी 2024 के लिए आवेदन पत्र ऑनलाइन जमा करने की समय सीमा उम्मीदवारों और अन्य हितधारकों से प्राप्त अनुरोध के आधार पर 5 अप्रैल, 2024 को रात 9:50 बजे तक बढ़ा दी गई है। पहचान की सुविधा के लिए उम्मीदवार फोटो के साथ स्कूल आईडी या किसी सरकारी आईडी का भी उपयोग कर सकते हैं। परीक्षा 15 से 31 मई तक आयोजित होगी। देशभर के केंद्रीय, राज्य, डीम्ड और निजी विश्वविद्यालयों में प्रवेश प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने के लिए 2022 में मानकीकृत परीक्षा शुरू की गई थी। अधिकारियों ने संकेत दिया है कि उच्च पंजीकरण मात्रा वाले विषय ऑप्टिकल मार्क रिकग्निशन (ओएमआर) का उपयोग करके पेन-एंड-पेपर प्रारूप अपनाएंगे, जबकि अन्य कंप्यूटर-आधारित रहेंगे। पिछले चक्र में, सीयूईटी-यूजी के लिए लगभग 14.9 लाख पंजीकरण दर्ज किए गए थे, जो उच्च शिक्षा परिदृश्य में इसके महत्व को उजागर करता है।

केजरीवाल सच्चे देशभक्त, अधिक दिनों तक जेल में नहीं रख सकते : सुनीता

नई दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री व आम आदमी पार्टी (आप) के संयोजक अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने कहा कि करोड़ों लोगों के दिल्ली में बसते हैं श्री केजरीवाल इसलिए उन्हें अधिक दिनों तक जेल में नहीं रख सकते हैं, वह सच्चे देशभक्त हैं औ बहादुरी से लड़ाई लड़ रहे हैं।

श्रीमती केजरीवाल ने इंडिया समूह की महारैली में श्री केजरीवाल के संदेश को पढ़ते हुए कहा कि आज देश के एक सौ चालीस करोड़ देश वासियों से एक बड़ा भारत बनाने के लिए सहयोग मांगता हूं और नया भारत बनाने के लिए आमंत्रित करता है। जेल में भारत माता के लिए सोचता हूं वह बहुत दुखी है औ दर्द से कराह रही है। जब लोगों को महंगाई की वजह से दो वक्त की रोटी नहीं मिलती तो भारत माता को बहुत दुख होता है। जब सही इलाज के बिना जब लोग मर जाते हैं तो भारत मां बेबस और लाचार महसूस करती है।

उन्होंने कहा कि जब कुछ नेता सुबह शाम लच्छेदार भाषण देते हैं और शानो शौकत से जीते हैं और अपने दोस्तों के साथ मिलकर देश लूटने में लगे हैं तब भारत मां को बहुत गुस्सा आता है। ऐसे लोगों से भारत मां को सख्त नफरत है। आइये एक ऐसा भारत बनाते हैं जहां सभी को भरपेट खाना मिलेगा, हर हाथ को काम मिलेगा, कोई बेरोजगार नहीं होगा, कोई गरीब नहीं होगा, कोई अनपढ़ नहीं होगा। सभी को अच्छी शिक्षा, अच्छा इलाज मिलेगा, देश के कोने कोने में चौबीस घंटे बिजली मिलेगी, सड़कें अच्छी होगी। एक ऐसा भारत बनायेंगे जहां कोई ऊंच नीच नहीं होगा, प्रेम और भाईचारा होगा।

श्रीमती केजरीवाल के अनुसार श्री केजरीवाल ने देशवासियों को इंडिया समूह की तरफ से छह गारंटी दी। पूरे देश में चौबीस घंटे बिजली का इंतजाम करेंगे। कहीं कोई पावर कट नहीं होगा। पूरे देश के गरीबों की बिजली मुफ्त करेंगे। हर गांव में शानदान स्कूल बनायेंगे। हर गांव मोहल्ले में मोहल्ला क्लिनिक बनायेंगे। हर जिले में शानदार अस्पताल बनायें। देश में हर व्यक्ति के बेहतर इलाज की सुविधा करायेंगे। किसानों को स्वानीनाथन की रिपोर्ट के अनुसार एमएसपी पर फसलों के सही दाम दिलायेंगे। देश के अन्य राज्यों की तरह दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा दिलायेंगे। श्रीमती सुनीता ने कहा कि भारत में यह तानाशाही नहीं चलेगी हम लड़ेंगे जीतेंगे।

अवैध कर्ज देने वाले ऐप पर रोक लगाने के लिए डिजिटल इंडिया ट्रस्ट के गठन पर विचार

नई दिल्ली, प्रातः किरण संवाददाता

भारतीय रिजर्व बैंक साइबर धोखाधड़ी पर अंकुश लगाने और अवैध कर्ज देने वाले ऐप पर रोक लगाने के लिए डिजिटल इंडिया ट्रस्ट एजेंसी (डीआईजीआईटीए) के गठन पर विचार कर रहा है। गौरतलब है कि देश में अवैध ऋण देने वाले ऐप तेजी से बढ़ रहे हैं। सूत्रों ने कहा कि प्रस्तावित एजेंसी डिजिटल ऋण देने वाले ऐप का सत्यापन करेगी और सत्यापित ऐप का एक सार्वजनिक रजिस्टर बनाएगी।

सूत्रों ने कहा कि जिन ऐप पर डीआईजीआईटीए के सत्यापन का निशान नहीं होगा, उन्हें अनधिकृत माना जाना चाहिए। इससे डिजिटल क्षेत्र में वित्तीय अपराधों के खिलाफ लड़ाई में मदद मिलेगी।

उन्होंने कहा कि डीआईजीआईटीए को डिजिटल ऋण देने वाले ऐप की जांच की जिम्मेदारी सौंपी जाएगी।

सूत्रों के अनुसार इस सत्यापन प्रक्रिया से डिजिटल ऋण क्षेत्र के भीतर अधिक पारदर्शिता और जवाबदेही पैदा करने में मदद करेगी।

इस बीच रिजर्व बैंक ने आईटी मंत्रालय के साथ 442 डिजिटल ऋण देने वाले ऐप की एक सूची साझा की है, ताकि उन्हें गूगल पर प्रतिबंधित किया जा सके।

गूगल ने सितंबर 2022 से अगस्त 2023 तक अपने ऐप स्टोर से 2,200 से अधिक डिजिटल तरीके से कर्ज देने वाले ऐप को हटाया है।

माननीय श्री लालकृष्ण आडवाणी को उनके जीवनकाल में ही भारत रत्न से अलंकृत करने पर भारत सरकार का आभार जताया

शिक्षाविद् दयानंद वत्स भारतीय ने पूर्व उप-प्रधानमंत्री एवं भाजपा के भीष्म पितामह माननीय श्री लालकृष्ण आडवाणी को उनके जीवनकाल में ही आज राष्ट्रपति माननीया श्रीमती द्रोपदी मुर्मू द्वारा उनके निवास पर जाकर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की मौजूदगी में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से अलंकृत करने पर भारत सरकार का आभार जताऔया है। वत्स ने कहा कि भाजपा दो सांसदों वाली पार्टी थी जो आज विश्व की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक पार्टी है। इसका सारा श्रेय पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई और पूर्व उप-प्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी को जाता है। इन दोनों ही महान विभूतियों की दूरदर्शिता और परिश्रम से ही भारतीय जनता पार्टी को यह गौरव प्राप्त हुआ है। माननीय श्री लालकृष्ण आडवाणी जी को उनके जीवनकाल में ही भारत रत्न से अलंकृत करने की मांग हम पिछले कई सालों से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी से कर रहे थे। आज यह सपना भी साकार हुआ है। वत्स ने कहा कि माननीय श्री आडवाणी जी भाजपा के लीविंग लीजेंड हैं।

आईजीएल गैस पाइपलाइन में आग, एक शख्स की दर्दनाक मौत

- हादसे के समय दो लोग पाइपलाइन की मरम्मत कर रहे थे

नई दिल्ली, प्रातः किरण संवाददाता

नार्थ दिल्ली के बुराडी इलाके में आईजीएल गैस पाइपलाइन में आग लगने के कारण एक शख्स की मौत हो गई, वहीं एक अन्य घायल हो गया। उसे इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। यहां हादसे की सूचना मिलने पर दमकल विभाग की दो गाडियां भी पहुंची थी। पुलिस ने इस घटना को लेकर लापरवाही से हुई मौत का मुकदमा दर्ज कर लिया है। केस में पुलिस की जांच जारी है। पुलिस ने बताया 30 मार्च की रात 10 बजकर 53 मिनट पर प्रदीप विहार इब्राहिम पुर में आईजीएल गैस पाइप लाइन में आग की सूचना मिली। इसमें बताया गया दो तीन लोग जल गए हैं। पुलिस मौके पर पहुंची जहां आग लगी हुई थी। इस बीच सूचना मिलने पर मौके पर दमकल कर्मी

पहुंचे और कुछ ही देर में आग को काबू में कर लिया। वहीं एक लेबर की मदद से गैस के रिसाव को भी रोका गया। इधर इंक्वायरी के दौरान पता लगा दो मजदूर राजकुमार (42) और प्रवीन मौके पर काम कर रहे थे। ये आईजीएल के अधिकृत कर्मी हैं जो घटना के समय पाइपलाइन की मरम्मत का काम कर रहे थे। इस घटना के बाद दोनों लोगों को अचेत हालत में अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टर ने प्रवीन को मृत घोषित कर दिया। वहीं अभी एक घायल राजकुमार का एलएनजेपी अस्पताल में इलाज चल रहा है।

स्कॉर्पियो और ऑटो की टक्कर में मां-बेटी की मौत

नई दिल्ली। गोविंदपुरी मेट्रो स्टेशन के पास गुरुवार को तेज रफ्तार स्कॉर्पियो ने ऑटो में टक्कर मार दी। इससे ऑटो सवार मां-बेटी की मौत हो गई, जबकि ऑटो चालक का इलाज चल रहा है। स्कॉर्पियो कार चालक को मौके से ही गिरफ्तार कर कार जब्त कर ली गई। उसकी पहचान फरुखनगर, गुरुग्राम निवासी 28 वर्षीय प्रवीण के रूप में हुई है। पुलिस के मुताबिक, मां-बेटी की पहचान फरुखाबाद, उत्तर प्रदेश निवासी 60 वर्षीय जरीना और 20 वर्षीय मदीना रूप मंं हुई है। घायल ऑटो चालक की पहचान चित्रा विहार निवासी सिकंदर यादव के रूप में हुई है। गुरुवार शाम करीब पांच बजे मां-बेटी ऑटो में बैठकर क्राउन प्लाजा से गोविंदपुरी की ओर आ रहे थे। तभी गोविंदपुरी मेट्रो स्टेशन लाल बत्ती के पास पीछे से तेज रफ्तार स्कॉर्पियो ने ऑटो में टक्कर मार दी। पुलिस वालों ने तीनों को सफदरजंग अस्पताल पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने मां-बेटी को मृत घोषित कर दिया। वहीं, आरोपी कार चालक प्रवीण को मौके से ही गिरफ्तार कर लिया गया। मां-बेटी के शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया है। बताया जा रहा है कि कार चालक उसी दिन शोरूम से कार लेकर आ रहा था। अभी कार पर नंबर प्लेट भी नहीं लगी थी।

सात सेमी-ऑटोमैटिक पिस्टल के साथ दो अंतरराज्यीय हथियार तस्कर गिरफ्तार

नई दिल्ली। आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर दिल्ली पुलिस अवैध हथियार तस्करों, शराब तस्करों व हवाला आदि गलत तरीके से पैसों के लेनदेन करने वालों पर पैनी नजर रख रही है। यही वजह है कि आए दिन पुलिस शराब व हथियार तस्करों को दबोच उनके कब्जे से अवैध शराब व हथियार बरामद कर रही है। ताजा मामले में दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने शनिवार को दो अंतरराज्यीय हथियार तस्करों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से सात सेमी ऑटोमैटिक पिस्टल बरामद की हैं।

तस्करों ने अवैध हथियार मध्य प्रदेश से मंगवाए थे, जिन्हें दिल्ली-एनसीआर व पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बदमाशों को आपूर्ति की जानी थी। डीसीपी स्पेशल सेल के अनुसार, गिरफ्तार किए गए तस्करों के नाम तरूण बालियान (खैर, अलीगढ़) और हिमांशु शर्मा (टप्पल, अलीगढ़) हैं। दोनों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है, जिसमें न्यूनतम 10 साल की सजा का प्रावधान है और अधिकतम आजीवन कारावास की सजा का प्रावधान है। दोनों को अर्जनगढ़ मेट्रो स्टेशन, महरौली रोड के पास से गिरफ्तार किया गया। हिमांशु शर्मा के बैग से प्वाइंट 32 बोर की चार अत्याधुनिक सेमी-आटोमैटिक पिस्टल और तरुण के बैग से प्वाइंट 32 बोर की तीन अत्याधुनिक सेमी-ऑटोमैटिक पिस्टल बरामद की गईं। पूछताछ में दोनों ने बताया कि वे मध्य प्रदेश से अवैध हथियारों की तस्करी में शामिल एक अंतरराज्यीय गिरोह के सदस्य हैं। तरुण बालियान खैर (अलीगढ़) का घोषित अपराधी है। वह अलीगढ़ में हत्या के प्रयास और हथियार अधिनियम के तीन मामलों में पहले गिरफ्तार हो जा चुका है। इन्हें बरामद पिस्टल की खेप खरगोन के कुख्यात हथियार निमार्ता-सह-आपूर्तिकर्ता सतनाम सिंह सरदार से मिली थी और वे उक्त खेप को फरीदाबाद के रहने वाले एक अन्य हिमांशु को देने आए थे। वह भी दिल्ली-एनसीआर और पश्चिम यूपी में अवैध हथियारों व गोला-बारूद की आपूर्ति में शामिल रहा है। दोनों से पूछताछ कर पुलिस सिंडिकेट के अन्य सदस्यों की पहचान करने की कोशिश कर रही है।

दबदबा कायम करने के लिए मारी थी गोली, तीन गिरफ्तार

नई दिल्ली। क्राइम ब्रांच ने मंगोलपुरी में गोली चलाकर जानलेवा हमला करने के मामले में शनिवार रात दो सगे भाई समेत तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस के मुताबिक आरोपियों में दोनों भाई मंगोलपुरी थाने के घोषित बदमाश हैं। इन्होंने इलाके में दबदबा कायम करने के लिए गोली चलाई थी। आरोपियों में 37 वर्षीय आसमान, 40 वर्षीय बलदेव और 23 वर्षीय राज उर्फ गोल्डी शामिल हैं। पूछताछ में आरोपी बलदेव ने बताया कि वह अपने भाई आसमान के साथ मिलकर मंगोलपुरी में अपना गैंग चलाता है। इनके पड़ोस में रहने वाला सुमित कुमार इलाके में अपना वर्चस्व बनाने में जुटा था। सुमित भी मंगोलपुरी थाने का घोषित बदमाश है। इन्होंने इलाके में अपना दबदबा बनाए रखने के लिए उसे सबक सिखाने की योजना बनाई। 25 मार्च की शाम दोनों भाई अपने भतीजे राज के साथ सुमित को मारने के इरादे से उसके घर में घुस गए। आसमान और राज ने सुमित को पकड़ लिया, जबकि बलदेव ने उसकी गर्दन पर चाकू मार दिया। इसी बीच उसका भाई मोहित आ गया और शोर मचाने लगा तो तीनों भाग गए थे। पुलिस आरोपियों की निशानदेही पर वारदात में इस्तेमाल हथियार बरामद करने में जुटी है।

छेड़छाड़ के बाद युवती ने की खुदकुशी, आरोपित को जमानत से हाईकोर्ट का इनकार

नई दिल्ली। छेड़छाड़ से परेशान युवती द्वारा खुदकुशी करने के मामले में दिल्ली हाई कोर्ट ने आरोपित को जमानत देने से इनकार कर दिया है। न्यायमूर्ति स्वर्ण कांता शर्मा की पीठ ने कहा कि मामले में आरोपित पर आरोप गंभीर है और उसने पीड़िता के साथ छेड़छाड़ करने के साथ ही यौन शोषण किया। मामले में सह-आरोपित ने उसके द्वारा दिए गए शिकायत पत्र को एसडीएम को देने के बजाए फाड़ तो वह पीड़िता काफी परेशान हुई और घर आकर उसने खुदकुशी कर ली। अदालत ने कहा कि उक्त तथ्यों और परिस्थितियों को देखते हुए आरोपित जमानत देने का आधार नहीं है और याचिका खारिज की जाती है। अदालत ने साथ ही निचली अदालत को मामले में दो महीने में सुनवाई पूरी करने को कहा और पक्षकारों को भी कहा कि वह मामले में बेवजह स्थगन की मांग न करें। याचिका के अनुसार पीड़िता सिविल डिफेंस के तहत एसडीएम आफिस स्थित टीकाकरण केंद्र में तैनात थी। युवती का आरोप है कि केंद्र के प्रभारी ने घटना के दिन बाकी कर्मचारियों को भेज दिया और उसे काम पर रोक लिया। इसके बाद उसके साथ आपत्तिजनक हरकत की थी। पीड़िता ने पूरी घटना और मामले में शामिल सात आरोपितों के नाम रजिस्टर में लिखे और सह-आरोपित को देकर चली गई। सह-आरोपित ने उसे आश्वस्त किया था कि वह रजिस्टर को एसडीएम को दे देगा, लेकिन उसने रजिस्टर में आरोपितों के नाम वाला पेज फाड़ दिया था। यह जानकारी मरने से पहले पीड़िता ने अपनी मां को बताई थी और मां से मिली उक्त जानकारी पर नरेला औद्योगिक क्षेत्र थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की थी। जांच में पता चला था कि विक्रम द्वारा संबंधित पेज फाड़ने का पता चलने पर पीड़िता ने खुदकुशी कर ली थी।

दोस्त की हत्या के आरोप में शख्स गिरफ्तार

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली के शास्त्री नगर इलाके में एक शख्स को उसके ही दोस्त ने मौत के घात उतार दिया। दिल्ली पुलिस ने रविवार को कहा कि एक 22 वर्षीय व्यक्ति को झगड़े के दौरान अपने दोस्त की हत्या करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने बताया कि पीड़ित की पहचान मुस्तकीम (22) के रूप में हुई है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान यासीन के रूप में हुई है। पुलिस ने बताया कि आरोपी के पास से एक 7.65 मिमी पिस्तौल और तीन जिंदा कारतूस जब्त किए गए। पुलिस ने बताया कि घटना 26 मार्च की सुबह दिल्ली की बुलंद मस्जिद के बाहर घटी।

लोगों में अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ गुस्सा है : सौरभ भारद्वाज

नई दिल्ली। दिल्ली में आज रामलीला मैदान में इंडिया गठबंधन की रैली पर दिल्ली सरकार में मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कहा, हम दिल्ली की सड़कों पर निकले और हमने देखा कि लोगों में अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ काफी गुस्सा है। लोगों को ये पसंद नहीं आया कि एक मुख्यमंत्री को जेल हो। दिल्ली के रामलीला मैदान में आज अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ महारैली का आयोजन किया जा रहा है। इंडिया गठबंधन की सभी पार्टियां और उनके नेता इसमें हिस्सा लेंगे। देश में एक बड़ा संदेश जाएगा और यह भाजपा के लिए एक बड़ी चुनौती होगी। वहीं रामलीला मैदान में होने जा रही इंडिया गठबंधन की इस महारैली के लिए दिल्ली पुलिस ने 20 हजार लोगों के जुटने की इजाजत दी है। दिल्ली पुलिस ने ट्रैफिक एडवाइजरी भी जारी की, साथ ही पुलिस ने कहा कि शहर में वाहनों की आवाजाही छह घंटे के लिए नियंत्रित की जाएगी। सुबह 9 बजे से दोपहर 3 बजे तक यातायात की आवाजाही को नियंत्रित किया जाएगा और यातायात प्रतिबंधित भी किया जा सकता है। कई जगहों पर ट्रैफिक रूट में भी बदलाव किया जा सकता है। वहीं मध्य जिले के डीसीपी एम हर्ष वर्धन ने कहा कि रामलीला मैदान में व्यापक सुरक्षा व्यवस्था की गई है ताकि आम लोगों को रैली के कारण किसी भी तरह की असुविधा का सामना न करना पड़े। साथ ही रामलीला मैदान के पास यातायात और पार्किंग को नियंत्रित करने के लिए यातायात पुलिस भी तैनात रहेगी।

रामलीला मैदान में उमड़ा जन सैलाब, तानाशाही के खिलाफ महासंग्राम का इंडिया ने किया शंखनाद

नई दिल्ली, प्रातः किरण संवाददाता

दिल्ली के ऐतिहासिक रामलीला मैदान में हुई इंडिया की महारैली में रविवार को जन सैलाब उमड़ पड़ा। इस दौरान इंडिया गठबंधन ने तानाशाही के खिलाफ महासंग्राम का शंखनाद किया। सीएम अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी और देश के संविधान व लोकतंत्र को बचाने के लिए इंडिया के सारे घटक दल एकजुट एक मंच पर आए और तानाशाह सरकार को संदेश दिया कि अब उसका अंत होने जा रहा है। इंडिया गठबंधन ने केंद्र सरकार के सामने पांच सूत्री मांगे रखी। इंडिया गठबंधन ने मांग की कि चुनाव आयोग लोकसभा चुनावों में सबको समान अवसर दे, चुनाव में हेराफेरी करने के उद्देश्य से विपक्षी दलों के खिलाफ जांच एजेंसियों द्वारा की जा रही कार्रवाई को रोका जाए। जेल में बंद अरविंद केजरीवाल और हेमंत सोरेन की तत्काल रिहाई हो, चुनाव के दौरान विपक्षी दलों का आर्थिक रूप से गला घोंटने की जबरन कार्रवाई बंद की जाए और चुनावी चंदे का उपयोग कर भाजपा द्वारा बदले की भावना, जबरन वसूली और मनी लॉन्ड्रिंग के आरोपों की जांच के लिए सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में एसआईटी गठित की जाए। पीएम मोदी देश में लोकतंत्र नहीं चाहते हैं, वो हमेशा से तानाशाही विचारधारा के रहे हैं- मल्लिकार्जुन खड़गे कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने मंच पर बैठे विभिन्न दलों के नेताओं की तरफ इशारा करते हुए कहा कि यही इस देश के लोकतंत्र की खूबी है। यानी कि विविधता में एकता। आज इंडिया गठबंधन के नेता अपने देश, एकता, लोकतंत्र और संविधान को बचाने के लिए इकट्ठे हुए हैं। पीएम मोदी देश में लोकतंत्र नहीं चाहते हैं, वो हमेशा से तानाशाही विचारधारा के रहे हैं। शनिवार को राष्ट्रपति भवन में आयोजित कार्यक्रम में पीएम मोदी समेत नेता मौजूद थे। इस बीच बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने मुझसे पूछा कि कांग्रेस कब से चुनाव प्रचार शुरू कर रही है। आपके उम्मीदवारों की लिस्ट कब फाइनल हो रही है? मैंने उनसे कहा कि लिस्ट तो फाइनल हो रही है, लेकिन हम जो चुनाव चाहते हैं, उस तरह का निष्पक्ष चुनाव नहीं हो रहा है। कांग्रेस के बैंक खाते सीज कर दिए गए हैं और 3,567 करोड़ रुपये की पेनल्टी लगाई गई है। पीएम मोदी ने हमको चुनाव प्रचार से रोकने के लिए यह तरीका अपनाया है।

इंडिया गठबंधन पूरे देश का विकास चाहता है, लेकिन मोदी जी चंद अमीर मित्रों का विकास चाहते हैं- मल्लिकार्जुन खड़गे

उन्होंने कहा कि ये लोग एक-एक करके हमारे संस्थाओं को खराब कर रहे हैं। उनका गैर इस्तेमाल कर रहे हैं। ये लोग ईडी, सीबीआई, सीवीसी या इनकम टैक्स विभाग का दुरुपयोग कर विपक्षी नेता और पार्टियों को डराकर कह रहे हैं कि अगर आप कांग्रेस से गठबंधन करेंगे, तो आपको जेल जाना होगा। पीएम मोदी की सांसदों और विधायकों को डरा-धमका कर सरकार बनाने की नीति है। पीएम नरेंद्र मोदी और उनकी विचारधारा को जब तक जनता नहीं हटाएंगी, इस देश में सुख-समृद्धि कभी नहीं आ सकती है। इसलिए हमको लोकतंत्र, संविधान और आरक्षण को बचाने के लिए लड़ना है। क्योंकि संविधान ने हमको मूलभूत अधिकार दिए हैं। संविधान नहीं रहेगा तो कुछ नहीं मिलेगा। बीजेपी अगर इस देश में संविधान बनाती तो वह पहला काम महिलाओं को मताधिकार से वंचित रखने का करती। लेकिन भारत में पंडित जवाहरलाल नेहरू और बाबा साहब आंबेडकर ने हर इंसान को वोटिंग का अधिकार दिया। हमने तो देश को आजादी दिलाने के लिए लड़ाई लड़ी और खून बहाया। देश की एकता के लिए इंदिरा गांधी और राजीव गांधी ने अपनी जान दे दी। तब यही बीजेपी, आरएसएस और जनसंघ वाले लोगों को सरकारी नौकरी में जाने के लिए कहते थे। ये लोग भारत छोड़ो आंदोलन में हिस्सा लेने के लिए मना करते थे। ये लोग कहते थे कि महात्मा गांधी की विचारधारा अच्छी नहीं है। इन्होंने देश की आजादी के लिए कभी लड़ाई नहीं लड़ी। कांग्रेस के लोग आजादी के लिए सूली पर चढ़े और लड़े। इसीलिए कांग्रेस का ध्यान संविधान बचाने की तरफ है। हम सबका विकास चाहते हैं, लेकिन पीएम मोदी चंद अमीर मित्रों का विकास चाहते हैं। अब यह जनता को तय करना है कि देश में लोकतंत्र चाहती हैं या तानाशाही।

इंडिया गठबंधन देश और लोगों की रक्षा के लिए बना है, संविधान बचा तभी हर व्यक्ति बचेगा- मल्लिकार्जुन खड़गे कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि बीजेपी और आरएसएस एक जहर की तरह है, जिसको चाट लिया तो वो मर जाएगा। युवाओं के लिए कोई नौकरी नहीं है। बीजेपी का कहना है कि हमारे पास आओ, गवाही दो नहीं, तो गूंगे हो जाओ। इसीलिए अरविंद केजरीवाल और हेमंत सोरेन को जेल के अंदर डाल दिया। एजेंसियां इनसे बाद में भी पूछताछ कर सकती थे। एक तरफ चुनाव की घोषणा हो रही है और दूसरी तरफ आप चुने हुए मुख्यमंत्रियों को गिरफ्तार कर रहे हैं। उनका यही कसूर था कि वह गठबंधन के साथ चलना चाहते थे। इसलिए पीएम मोदी ने केस बनाकर दोनों मुख्यमंत्रियों को जेल के अंदर डाल दिया। क्रिकेट के लिए अच्छा मैदान और पिच बनाई जाती है. तब जाकर लोग खेल पाते हैं। लेकिन यहां तो पीएम मोदी ने पूरे मैदान में गड्ढे कर दिए और फिर कह रहे हैं कि अब क्रिकेट खेलो। ऐसे इंसान को इस बार हराना चाहिए। जब तक इनको हराएंगे नहीं, तब तक शांति से नहीं बैठना चाहिए। यह केवल अरविंद केजरीवाल, हेमंत सोरेन और किसी व्यक्ति विशेश के लिए नहीं है।

सुनील जाखड़ ने कहा, पंजाब में कांग्रेसियों को जेल भेजने वाले मान के साथ हैं राहुल

- सबसे भ्रष्ट नेता को बचाने की कोशिश कर रहा है कांग्रेस नेतृत्व
- जालंधर के कई पार्षद और आप नेताओं ने ली भाजपा की सदस्यता

नई दिल्ली, प्रातः किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी पंजाब के कई नेता रविवार को भाजपा में शामिल हो गए। पंजाब प्रदेश भाजपा अध्यक्ष सुनील जाखड़, दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा, राष्ट्रीय मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने उनका पार्टी में स्वागत किया। उन्होंने कहा, पिछले दिनों सुशील रिंकू के भाजपा में शामिल होने के बाद लोकसभा में अब आम आदमी पार्टी का एक भी सदस्य नहीं है। आने वाले चुनाव में भी यही स्थिति रहेगी। कांग्रेस के नेता रामलीला मैदान में जाकर अरविंद केजरीवाल के समर्थन करने से पहले एक बार भी नहीं सोचा कि वह सबसे भ्रष्ट व्यक्ति के समर्थन में खड़े हैं। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने वहां के कांग्रेस नेताओं को किसी न किसी आरोप में फंसाकर जेल में डाल रहे हैं। इसकी परवाह किए बिना राहुल गांधी रामलीला मैदान में मान के बगल में बैठकर नजदीकी बढ़ा रहे हैं। उन्हें बताना चाहिए कि मान द्वारा पंजाब के नेताओं पर लगाए गए आरोप सही है या नहीं?

कांग्रेसी चोरी-छिपे श्रीराम के दर्शन करने पहुंचे उन्होंने कहा कि इससे स्पष्ट हो गया है कि कांग्रेस नेतृत्व को अपने नेताओं व कार्यकताओं की कोई चिंता नहीं है। वह दिल्ली में कांग्रेस की बबार्दी का जश्न मना रहे हैं। इससे कांग्रेस कार्यकर्ता निराश हैं। बचे हुए कांग्रेस नेता भी पार्टी छोड़ेंगे। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी ने कांग्रेसियों को अयोध्या में बालक राम के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में जाने से मना किया। वह स्वयं तो अयोध्या नहीं गए, लेकिन अन्य कांग्रेसी चोरी छिपे वहां पहुंचकर भगवान श्री राम के दर्शन कर लिए। अपना घर नहीं संभालने वाला कांग्रेस नेतृत्व देश को संभालने की बात कर रहा है। बीजेपी में ये नेता हुए शामिल

भाजपा की सदस्यता लेने वालों में पंजाब खादी बोर्ड के उपाध्यक्ष व जालंधर के पूर्व उपमहापौर कमलजीत सिंह भाटिया, जालंधर में दो बार पार्षद रही सुनीता रिंकू, पूर्व पार्षद विरेश मिंटू, पार्षद राधिका पाठक, आप नेता हरजिंदर सिंह लाडा, पार्षद विपन चड्ढा, पार्षद चंद्रजीत कौर, आप के पंजाब ओबीसी इकाई के पूर्व अध्यक्ष अमित सिंह संड्ढा, बलविंदर सिंह बीरा, संदीप, कविता सेठ व सौरभ सेठ, नवीन सोनी, जसवंत सिंह जस्सा, सुनील मोंटू, राजेश अग्निहोत्री, जीवन ज्योति टंडन, मोहित शामिल हैं। पिछले दिनों आप छोड़कर भाजपा में शामिल होने वाले विधायक शीतल अंगुराल सहित अन्य नेता उपस्थित थे।

राष्ट्रीय दैनिक
प्रातः किरण
देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran
www.pratahkiran.com
नई दिल्ली, सोमवार, 01 अप्रैल, 2024

केजरीवाल ने इंडिया की ओर से देश को दी छह गारंटी, हमें सत्ता दो-हम सब मिलकर एक नया भारत बनाएंगे

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

आप के राष्ट्रीय संयोजक एवं दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल ने जेल से संदेश भेज कर भारत को दुनिया का नंबर वन देश बनाने के लिए 140 करोड़ भारतवासियों का आह्वान किया। सीएम केजरीवाल के संदेश को उनकी पत्नी सुनीता केजरीवाल ने मंच से पढ़कर देशवासियों को सुनाया। सीएम ने गारंटी देते हुए देशवासियों से अपील की है कि इंडिया गठबंधन को देश की सत्ता दें, हम सब मिलकर एक नया भारत बनाएंगे। देश में 24 घंटे बिजली देने का इंतजाम करेंगे, गरीबों की बिजली मुफ्त होगी। हर बच्चे को अच्छी और समान शिक्षा देने के लिए हर गांव-मोहल्ले में शानदार सरकारी स्कूल बनाएंगे। हर गांव-मोहल्ले में शानदार सरकारी अस्पताल और मोहल्ला क्लीनिक बनाकर सबको अच्छा और मुफ्त इलाज देंगे। देश के अन्य राज्यों की अपेक्षा दिल्लीवालों के अधिकार बेहद कम हैं और उनकी चुनी हुई सरकार पंगु है। इसलिए दिल्ली को पूर्ण राज्य बनाकर दिल्लीवासियों को उनका हक दिलाएंगे। भारत एक ऐसा देश होगा, जहां उंच-नीच, नफरत, मारपीट, गाली गलौंज नहीं होगी। सबको न्याय मिलेगा और आपस में भाईचारा होगा

रामलीला मैदान में आयोजित इंडिया गठबंधन की महारैली में सुनीता केजरीवाल ने मंच से सीएम अरविंद केजरीवाल के जेल से भेजे गए संदेश को पढ़कर देशवासियों को सुनाया। सीएम ने अपने संदेश में लिखा है, ह्यह्यमेरे प्यार भारतवासियों! जेल से आप अपने इस भाई और बेटे का प्रणाम स्वीकार कीजिए। मैं आज आपसे वोट नहीं मांग रहा हूं। आने वाले चुनाव में मैं आपसे किसी को हराने या जीताने की बात भी नहीं कर रहा हूं। आज मैं देश के 140 करोड़ लोगों को एक नया भारत बनाने के लिए सहयोग मांगता हूं। 140 भारतवासियों को एक नया भारत बनाने के लिए आमंत्रित करता हूं। भारत एक महान देश है। हमारी संस्कृति कई हजार वर्ष पुरानी है। भारत में भगवान का दिया सबकुछ है। फिर भी हम पिछड़े क्यों हैं, हमारे लोग अनपढ़ क्यों हैं? गरीब क्यों है? मैं यहां जेल में हूं। यहां सोचने के लिए काफी समय मिलता है। रात को टूट-टूट कर नींद आती है। भारत मां के लिए सोचता हूं। भारत मां बहुत दुखी हैं, भारत मां दर्द में हैं और दर्द से कराह रहीं हैं। जब महंगाई के कारण लोगों को दो वक्त की रोटी नसीब नहीं होती है, तो भारत मां को बहुत दुख होता है। जब भारत मां के बच्चों को अच्छी शिक्षा नहीं मिलती है, आजादी के 75 बाद भी लोग इलाज के बिना मर जाते हैं, तो भारत मां बेबस और लाचार महसूस करती हैं। जब देश के कई हिस्सों में लंबे-लंबे पावर कट लगते हैं, सड़कें टूटी हैं तो मां को बहुत पीड़ा होती है। ऐसी स्थिति में भी कुछ नेता लच्छेदार भाषण देते हैं। शान-ए-शौकत की जिंदगी जीते हैं। अपने चंद दोस्तों के साथ मिलकर देश लूटने में लगे हैं, तो भारत मां को बहुत गुस्सा आता है। ऐसे लोगों से भारत मां को सख्त नफरत है।

आइए, मिलकर एक नया भारत बनाते हैं, जो 140 करोड़ लोगों के सपनों का भारत होगा। एक ऐसा भारत, जहां हर इंसान को भरपेट खाना मिलेगा, हर हाथ को काम मिलेगा, कोई बेरोजगार नहीं होगा, कोई गरीब नहीं होगा, कोई अनपढ़ नहीं होगा, हर बच्चे को अच्छी शिक्षा मिलेगी, चाहे वो अमीर हो या गरीब हो। हर बीमार को अच्छा इलाज मिलेगा, चाहे वो अमीर हो या गरीब हो। देश के कोने-कोने में 24 घंटे बिजली होगी, देश के हर गांव में शानदार सड़कें होंगी। एक ऐसा भारत होगा, जो पूरे विश्व में शिक्षा का केंद्र होगा। जहां दुनिया भर के युवा पढ़ने के लिए आएंगे। एक ऐसा भारत बनाएंगे, जो सांइस और टेक्नोलॉजी में विश्व का लीडर होगा। भारत के अध्यात्म को दुनिया के कोने-कोने तक पहुंचाएंगे। एक ऐसा भारत बनाएंगे, जहां उंच-नीच नहीं होगी, नफरत नहीं होगी, मारपीट, गाली गलौंज नहीं होगी, जहां सबको न्याय मिलेगा और भाईचारा होगा। आज मैं देश के 140 करोड़ लोगों को ऐसा भारत बनाने के लिए आह्वान करता हूं। यदि आप सब इंडिया गठबंधन को मौका देते हैं, जिम्मेदारी सौंपते हैं तो हम सब मिलकर एक ऐसे महान राष्ट्र का निर्माण करेंगे। सीएम केजरीवाल ने अपने संदेश में लिखा है कि केवल नाम में इंडिया नहीं है, बल्कि हमारे दिल में इंडिया है। मैं इंडिया गठबंधन की ओर से देश के 140 करोड़ देशवासियों से छह गारंटी देता हूं-

पहला- पूरे देश में 24 घंटे बिजली का इंतजाम करेंगे। कहीं कोई पावर कट नहीं होगा।

दूसरा- पूरे देश में गरीबों की बिजली फ्री करेंगे।

रेप के आरोपी के घर के बाहर प्रदर्शन, पुलिस फोर्स रही मौजूद

संवाददाता

पुर्वी दिल्ली के पांडव नगर इलाके में चार साल की बच्ची के साथ हुई रेप की घटना के विरोध में आज पांडव नगर इलाके में एक संगठन ने आरोपी के घर के बाहर जमकर विरोध प्रदर्शन किया। मामले की गंभीरता को देखते हुए दिल्ली पुलिस ने इसके सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए थे। गौरतलब है कि 23 मार्च को ट्यूशन पढ़ाने वाले टीचर ने बच्ची के साथ दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया था। जिसके बाद पुलिस आरोपी को गिरफ्तार कर लिया था। जिसके बाद स्थानीय लोगो ने आरोपी की दुकान में जमकर तोड़फोड़ की थी। आज एक संगठन के सैकड़ो कार्यकर्ता आरोपी के घर के पास एकत्रित हुए और हाथ में झंडे लेकर जमकर नारे बाजी की। आरोपी को फांसी की मांग की। पुलिस के मुताबिक मौके पर भारी पुलिस बल के साथ पैरामिलिट्री फोर्स को भी तैनात किया गया था। इलाके में शांति बनी हुई है।

इलाके में धमक किसकी बनी रहे, इसी को लेकर किया जानलेवा हमला

• क्राइम ब्रांच ने पुलिस ने दो घोषित बदमाश भाइयों सहित तीन को दबोचा

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

मंगोलपुरी इलाके में सनसनीखेज हत्या के प्रयास के मामले का खुलासा करते हुए क्राइम ब्रांच की टीम ने 5 दिन बाद तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। जिसमें से दो दिल्ली पुलिस के घोषित बेड करेक्टर है। जिसके ऊपर मंगोलपुरी थाने में कई मामले दर्ज हैं। जिस शख्स पर जानलेवा हमला हुआ था, वह भी पुलिस का घोषित बौसी है। गिरफ्तार तीन में से दो आरोपी सगे भाई हैं। जबकि तीसरा उनका भतीजा है। पुलिस को पता चला कि यह हमला इलाके में बादशाहत बरकरार रखने के लिए की गई थी। एसीपी सेंट्रल रेंज पंकज अरोड़ा की देखरेख में इंस्पेक्टर गौरव चौधरी, सब इंस्पेक्टर ऋषि कुमार और महक सिंह की टीम ने इन तीन बदमाशों को गिरफ्तार करने में कामयाबी पाई है। जिनकी पहचान आसमा, बलदेव और राज उर्फ गोल्डी के रूप में हुई है। यह तीनों 26 मार्च को मंगोलपुरी थाने में दर्ज 307 मामले में वांटेड थे। एडिशनल कमिश्नर संजय भाटिया ने मामले की जानकारी देते हुए बताया कि बलदेव, आसमा और राज उर्फ गोल्डी यह तीनों ही मंगोलपुरी इलाके में रहते हैं। बलदेव 2004 में झगड़े के मामले में गिरफ्तार हुआ था और उसके बाद यह फिर अपने साथियों के साथ मिलकर वारदात करने लगा। इसके ऊपर पहले से 12 मामले हत्या के प्रयास, लूट, डकैती, आर्म्स एक्ट और एनडीपीएस एक्ट के चल रहे हैं। जबकि उसका भाई आसमा 2007 में पहली बार गिरफ्तार हुआ था। इसके ऊपर डकैती, लूट, हत्या के प्रयास और चोरी के 09 मामले चल रहे हैं।

जबकि इनका भतीजा स्क्रैप डीलर का काम करता है और यह अपने अंकल के साथ इलाके में वरदहस्त बनाने के लिए उनका साथ देता था। इन तीनों को मंगोलपुरी इंडस्ट्रियल एरिया के दुर्बल नाथ जी पार्क के पास से पकड़ा गया। इन्होंने 25 मार्च को सुमित कुमार के घर पर हमला किया था, उसकी हत्या करने के लिए। लेकिन एन वक्त पर सुमित का भाई मनु उर्फ मोहित ने शोर मचा दिया जिसकी वजह से ये तीनों वहां से भाग गए। जिसकी वजह से उसकी जान बच गई लेकिन वह गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस से बचने के लिए इन लोगों ने बाहर छुपकर कुछ दिन रहने का प्लान बनाया। लेकिन पुलिस टीम को इसके बारे में जानकारी मिल गई तो यह तीनों दबोचे गए।

फोर्चुनर से आए स्कूटी लूटकर फरार हो गए,,,

• छावला पुलिस ने हरियाणा से तीन को किया गिरफ्तार

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

छावला थाना की पुलिस टीम ने तीन डेसपरेट लुटेरे को गिरफ्तार किया है। इनके पास से लूटी गई स्कूटी और वारदात में इस्तेमाल फॉर्च्यूनर कार को पुलिस ने बरामद किया है। गिरफ्तार किए गए बदमाशों की पहचान सत्येंद्र उर्फ काला मनजीत और राहुल के रूप में हुई है। यह तीनों हरियाणा के गुड़गांव स्थित इस्लामपुर के रहने वाले हैं। इनकी गिरफ्तारी से छावला थाना में दर्ज लूट के मामले का पुलिस ने खुलासा किया है।

डीसीपी द्वारका अंकित सिंह ने मामले की जानकारी देते हुए बताया कि 16 मार्च को छावला थाना इलाके में पुलिस को एक पीसीआर कॉल मिली थी। जिसमें बताया गया कि खैरा गांव सीएनजी पेट्रोल पंप के पास फॉर्च्यूनर कार सवार बदमाश ने उनकी स्कूटी लूट ली। पीड़ित के कंप्लेंट पर पुलिस ने एफआईआर दर्ज किया और छानबीन शुरू की।

पूछताछ में पता चला कि दिल्ली नंबर की फॉर्च्यूनर गाड़ी रोड के किनारे खड़ी थी। इस दौरान स्कूटी पर जा रहा सख्स का स्कूटी गाड़ी के दरवाजे से टच हो गया। जिसपर गाड़ी वाले ने 5000 की डिमांड की। स्कूटी सवार ने देने से मना किया तो उसका स्कूटी लेकर वहां से भाग गए। एसएचओ पंकज कुमार की देखरेख में पुलिस टीम ने छानबीन शुरू की और फिर हरियाणा के गुरुग्राम और इस्लामपुर में छापा मारकर इन तीनों आरोपी को पकड़ा। स्कूटी तो बरामद किया ही, साथ ही वारदात के दौरान इस्तेमाल फॉर्च्यूनर कार को भी जप्त किया। आगे की छानबीन की जा रही है।

ब्रह्माकुमारी चाणक्य प्लेस में पहुंचे वर्ल्ड रिकर्डधारी जादूगर हैरी

• एशिया का सबसे कम उम्र का जादूगर मास्टर जतिन ने भी सबको चौंकाया

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

प्रजापति ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थानीय शाखा चाणक्य प्लेस की तरफ से मेजिक शो आयोजित किए जा रहे हैं। इसमें चाणक्य प्लेस सेवा केन्द्र, मधुविहार सेवा केन्द्र, सीतापुरी सेवा केन्द्र, राजापुरी सेवा केन्द्र और भारत विहार केंद्र में आयोजित किए जा रहे हैं। इसमें भारत, एशिया और वर्ल्ड रिकार्डधारी मेजेश्यिन हास्य सम्राट जादूगर हैरी और एशिया का सबसे छोटा जादूगर मास्टर जतिन शामिल हैं। इन लोगों ने सबका मन तो मोह ही लिया, बीच बीच में हंसा हंसाकर सबको लोटपोट भी कर दिया।

जादूगर हैरी चार चार घंटे ब्रफ पर खड़े रह सकते हैं और दांत से एक बार में तीन ट्रक को खींच सकते हैं। यहां ब्रह्माकुमारी में निशुल्क शो किया। बोला यह जादू केवल हाथ की सफाई है। जादूगर तो स्वयं परमशक्ति है, जो हमारे अंदर से दुगुर्णो को मिटाकर गुणों मिटाकर गुण भरता है। क्रोध को मिटाकर शांति भरता है। इस सेवा केंद्र पर आकर आप भी क्रोध पर काबू पा सकते हैं। इसके साथ साथ ब्रह्मकुमारी आसपास सेवा विस्तार कर रही है।

नशा मुक्ति और बच्चों की शिक्षा के लिए और कई तरह के निशुल्क सेवा कर रही है। चाणक्य प्लेस सेवा केंद्र की प्रमुख बीके वृंदा ने बताया कि खुद के परिवर्तन से ही विश्व का परिवर्तन संभव है। हम सब चाहते हैं, की हमारा देश खुशहाल हो, लेकिन वह तभी खुशहाल हो सकता है जब हम खुद खुश होंगे, हर एक व्यक्ति खुश रहेगा। उदासी और निराशा से घिरा हर व्यक्ति देश को कैसे खुशहाल बना सकता है।

ईडी ने केजरीवाल के फोन को अनलॉक करने के लिए एप्पल को लिखा खत

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली शराब घोटाला मामले में सीएम अरविंद केजरीवाल ईडी की रिमांड में हैं। अरविंद केजरीवाल से प्रवर्तन निदेशालय की पूछताछ जारी है।

इस सबके बीच सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार अरविंद केजरीवाल के यहां से जब्त किए गए उनके फोन और डिजिटल डिवाइसेज का एक्सेस ईडी हासिल नहीं कर पाई है। सूत्रों की मानें तो ईडी केजरीवाल से बार-बार इन डिवाइसेज का पासवर्ड बताने को कह रही है। लेकिन, अरविंद केजरीवाल पासवर्ड बताने से इनकार कर रहे हैं। ऐसे में सूत्रों के हवाले से खबर आ रही है कि ईडी ने केजरीवाल के आवास से बरामद 4 आईफोन को अनलॉक करने के लिए एप्पल से खत के जरिए संपर्क किया है। वहीं, एप्पल की तरफ से ईडी को जवाब दिया गया है कि वह इन फोन का पासवर्ड का पता लगे बिना नहीं खोल सकते हैं और ऐसे में इन फोन का डाटा मिलना बेहद मुश्किल होगा।

ईडी ने जब केजरीवाल को 21 मार्च की रात उनके आवास से गिरफ्तार किया था तो उनके आवास से 4 फोन भी बरामद किए थे। इसके साथ ही केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल का फोन भी ईडी ने जब्त किया था। ऐसे में कोर्ट में ईडी ने बताया था कि केजरीवाल की पत्नी के फोन का एक्सेस मिल गया है और उसका डाटा निकाल लिया गया है।

लेकिन, दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल अपने फोन का पासवर्ड नहीं बता रहे हैं। वहीं, अरविंद केजरीवाल दावा कर रहे हैं कि ईडी उनके फोन का एक्सेस लेकर उनकी चुनावी रणनीति और गठबंधन से संबंधित डाटा हासिल करना चाहती है। यही बात आप नेता और दिल्ली सरकार में मंत्री आतिशी ने भी मीडिया के सामने कही थी।

केजरीवाल की गिरफ्तारी पर भ्रष्टाचारियों का गैंग रामलीला मैदान में रो रहा है : मनोज तिवारी

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

रामलीला मैदान में इंडिया गठबंधन की रैली पर भारतीय जनता पार्टी के सांसद मनोज तिवारी ने निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचारियों का एक बड़ा गैंग रामलीला मैदान में खड़ा होकर अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी पर रो रहा है और यह दृश्य उसी जगह हो रहा है, जहां एक बार अरविंद केजरीवाल चिल्ला-चिल्ला कर इन सभी लोगों को भ्रष्टाचारी बता रहे थे और उनकी गिरफ्तारी की मांग कर रहे थे। सोनिया गांधी को गिरफ्तार करो के नारे लगा रहे थे। आज जब वो खुद शराब घोटाले का एक बड़ा भ्रष्टाचारी बनकर जेल के अंदर हैं, तो उनकी पार्टी कांग्रेस के साथ मिलकर मंच साझा कर रही है। मनोज तिवारी ने कहा कि इस दिल्ली में मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर और धर्मालयों के सामने शराब के ठेके खोले गए। अरविंद केजरीवाल को दिल्ली की माताओं-बहनों की हाय लगी है।

मनोज तिवारी ने आगे कहा कि कांग्रेस और अन्य पार्टियों के वरिष्ठ नेता आज मन ही मन खूब मुस्कुरा रहे होंगे। अरविंद केजरीवाल हमें भ्रष्टाचारी कहने चला था। उन्होंने कहा, याद रखिए सोनिया गांधी, राहुल गांधी को जब भ्रष्टाचार की जांच के लिए ईडी का समन भेजा गया, तो उन्होंने उसका जवाब दिया और लड़ भी रहे हैं। लेकिन अरविंद केजरीवाल ने ईडी का समन 9-9 बार ठुकरा दिया। आज इन सभी भ्रष्टाचारी लोगों का गैंग वहां इकठ्ठा हुआ है, वह सभी मन ही मन मुस्कुरा रहे होंगे कि अरविंद केजरीवाल से ठीक बदला लिया। केजरीवाल ने गरीबों, झुग्गीवालों और बुजुर्गों के साथ धोखा किया है, आज उनको इसका परिणाम मिल रहा है।

उन्होंने कहा, मुझे पूरा विश्वास है कि जिस रामलीला मैदान से आम आदमी पार्टी और अरविंद केजरीवाल ने अपनी राजनीति की शुरूआत की थी। उसी रामलीला मैदान में उनका पतन भी होगा और दिल्ली की जनता भी यही चाहती है। गौरतलब है कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ रविवार को दिल्ली के रामलीला मैदान में इंडिया गठबंधन लोकतंत्र बचाओ रैली कर रहा है। इसमें कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, राहुल गांधी, लालू यादव, फारूख अब्दुल्ला, शरद पवार, तेजस्वी यादव समेत आप के भी कई नेता शामिल हैं।

दिल्ली में कपड़ा दुकान के सेल्समैन की हत्या के आरोप में एक गिरफ्तार

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

राष्ट्रीय राजधानी के शास्त्री पार्क इलाके में झगड़े के बाद एक कपड़ा दुकान के सेल्समैन की हत्या के आरोप में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी। मृतक की पहचान इलाके के निवासी मुस्तकीम के रूप में हुई, जो चांदनी चौक में एक कपड़ा दुकान में काम करता था। आरोपी की पहचान चौहान बांगर निवासी यासीन (24) के रूप में हुई। पुलिस को मंगलवार को बुलंद मस्जिद, शास्त्री पार्क के पास गोलियां चलने की सूचना मिली थी। इसके बाद पुलिस टीम मौके पर पहुंची। पुलिस उपायुक्त (उत्तरपूर्व) जॉय टिर्की ने कहा, मुस्तकीम को सीने में गोली मारी गई। उसे तुरंत जग प्रवेश चंद्र अस्पताल ले जाया गया, जहां मृत घोषित कर दिया गया। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए जीटीबी अस्पताल ले जाया गया। शुरूआती जांच में पता चला कि न्यू सीलमपुर निवासी सोहेल खान (22) और मुस्तकीम दोनों दोस्तों ने इशरत से मिलने का फैसला किया था। डीसीपी ने कहा, सोहेल ने चार साल पहले यूपी के गाजियाबाद के कौशांबी में द बैंग बैंग बार में बार गर्ल के रूप में कार्यरत इशरत से शादी की थी और उनकी एक बेटी है। लेकिन, नवंबर, 2023 में उनका तलाक हो गया। सोहेल से तलाक के बाद इशरत का इरादा यासीन से शादी करने का थाा। डीसीपी ने कहा, यासीन को सोहेल और मुस्तकीम का इशरत से मिलना नापसंद था। यासीन ने मुस्तकीम पर तीन राउंड गोलियां चलाईं। गोलियां मुस्तकीम को सीने में लगीं।

डीसीपी ने कहा, घटनास्थल पर दो खाली खोल और 7.65 मिमी का एक जिंदा कारतूस बरामद किया गया। उन्होंने कहा कि आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है और अपराध में इस्तेमाल हथियार भी बरामद कर लिया गया है।

चुनाव एक क्रांति का रूप ले चुका : गोपाल राय

नई दिल्ली। रामलीला मैदान में विपक्षी नेताओं ने केंद्र सरकार पर जमकर हमला बोला। देशभर की विभिन्न पार्टियों ने एकजुटता प्रदर्शित की और लोगों से लोकतंत्र बचाने की अपील की। वहीं रैली के बाद दिल्ली के मंत्री गोपाल राय ने अपनी प्रतिक्रिया दी। गोपाल राय ने कहा- देश भर से इंडिया गठबंधन के सभी वरिष्ठ नेता रामलीला मैदान में एकत्र हुए। आज रैली में हमने जो विशाल जनसमूह देखा, वह दशार्ता है कि अरविंद केजरीवाल जेल के बाहर से ज्यादा खतरनाक हैं। लोग उनसे बहुत मोहब्बत करते हैं। उन्होंने कहा कि आपने सोचा कि केजरीवाल को जेल में डालकर उनकी लड़ाई खत्म कर देंगे। लेकिन उनके जेल में जाने के बाद लड़ाई शुरू हो चुकी है। इस बार का चुनाव एक क्रांति का रूप ले चुका है। आम लोग इस चुनाव को आंदोलन के रूप में आगे बढ़ेंगे।

छेड़छाड़ के बाद युवती ने की खुदकुशी, आरोपित को जमानत से हाईकोर्ट का इनकार

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

छेड़छाड़ से परेशान युवती द्वारा खुदकुशी करने के मामले में दिल्ली हाई कोर्ट ने आरोपित को जमानत देने से इनकार कर दिया है। न्यायमूर्ति स्वर्ण कांता शर्मा की पीठ ने कहा कि मामले में आरोपित पर आरोप गंभीर है और उसने पीड़िता के साथ छेड़छाड़ करने के साथ ही यौन शोषण किया। मामले में सह-आरोपित ने उसके द्वारा दिए गए शिकायत पत्र को एसडीएम को देने के बजाए फाड़ तो वह पीड़िता काफी परेशान हुई और घर आकर उसने खुदकुशी कर ली। अदालत ने कहा कि उक्त तथ्यों और परिस्थितियों को देखते हुए आरोपित जमानत देने का आधार नहीं है और याचिका खारिज की जाती है। अदालत ने साथ ही निचली अदालत को मामले में दो महीने में सुनवाई पूरी करने को कहा और पक्षकारों को भी कहा कि वह मामले में बेवजह स्थगन की मांग न करें। याचिका के अनुसार पीड़िता सिविल डिफेंस के तहत एसडीएम आफिस स्थित टीकाकरण केंद्र में तैनात थी। युवती का आरोप है कि केंद्र के प्रभारी ने घटना के दिन बाकी कर्मचारियों को भेज दिया और उसे काम पर रोक लिया। इसके बाद उसके साथ आपत्तिजनक हरकत की थी। पीड़िता ने पूरी घटना और मामले में शामिल सात आरोपितों के नाम रजिस्टर में लिखे और सह-आरोपित को देकर चली गई। सह-आरोपित ने उसे आश्वस्त किया था कि वह रजिस्टर को एसडीएम को दे देगा, लेकिन उसने रजिस्टर में आरोपितों के नाम वाला पेज फाड़ दिया था। यह जानकारी मरने से पहले पीड़िता ने अपनी मां को बताई थी और मां से मिली उक्त जानकारी पर नरेला औद्योगिक क्षेत्र थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की थी। जांच में पता चला था कि विक्रम द्वारा संबंधित पेज फाड़ने का पता चलने पर पीड़िता ने खुदकुशी कर ली थी।

2 लाख की चोरी की संपत्ति के साथ आरोपी गिरफ्तार, दो शराब तस्करों को पुलिस ने दबोचा

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दक्षिण पश्चिम जिले के आरके पुरम थाने की पुलिस टीम में एक ऐसे कुख्यात अपराधी को गिरफ्तार किया है, जो पहले भी कई आपराधिक मामलों में शामिल था। सरोजिनी नगर थाने का बैड करेक्टर घोषित है। गिरफ्तार किए गए आरोपी की पहचान संदीप उर्फ काला पुत्र लेफ्टिनेंट कालीचरण निवासी झुकी अंतराम डेयरी आरके पुरम दिल्ली उम्र 23 साल के रूप में हुई है। आरोपी संदीप पिछले कई वर्षों से नशे का आदी है और अपने नशे की लत को पूरा करने के लिए चोरी की घटनाओं को अंजाम देता था। गिरफ्तार किए गए आरोपी के कब्जे से अपराध में इस्तेमाल एक इलेक्ट्रिक स्कूटी और दो अल्युमिनियम एस्केलेटर फ्लोर प्लेट बरामद की है, जिसकी अनुमानित कीमत 2 लाख रुपए है।

दक्षिण पश्चिम जिले के डीसीपी रोहित मीणा ने बताया कि 27 मार्च को शिकायतकर्ता ऋषि राज निवासी गांव जरोला बिहार (जो मेसर्स सोम प्रोजेक्ट प्राइवेट लिमिटेड में पर्यवेक्षक के रूप में कार्य करते हैं) ने रिपोर्ट दर्ज करवाई। इसके बाद मामला दर्ज कर आगे की जांच शुरू की गई।

पुलिस टीम ने आरोपियों की धर पकड़ के लिए लगातार कोशिश की और अपराध स्थल पर लगे सीसीटीवी फुटेज का गहनता से विश्लेषण किया गया। इसमें पता चला कि अपराध को अंजाम देने में इस्तेमाल किया गया वाहन एक इलेक्ट्रिक स्कूटी थी। जांच करने पर स्कूटी नंबर वढ14ऋ5187 मेसर्स बटुक मोटर प्राइवेट लिमिटेड गाजियाबाद यूपी के नाम पर पंजीकृत पाई गई। पुलिस टीम ने आरोपी का पता लगाने के लिए सभी संभावित स्थानों पर कड़ी जांच की और आखिरकार आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। एंटी स्नैचिंग सेल की टीम ने दो शराब तस्करों को किया गिरफ्तारः वहीं, दक्षिण पश्चिम जिले के एंटी स्नैचिंग सेल की टीम ने दो शराब तस्करों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान राहुल गुप्ता उर्फ मोटा पुत्र सुनील कुमार गुप्ता निवासी हुमायूंपुर सफदरजंग एनक्लेव दिल्ली उम्र 32 वर्ष के रूप में हुई है। आरोपी राहुल पहले भी एक आपराधिक मामले में शामिल पाया गया है। दूसरे आरोपी की पहचान विकास कुमार उर्फ वंशु पुत्र साहिब सिंह निवासी पालम नई दिल्ली उम्र 22 वर्ष के रूप में हुई है। गिरफ्तार किए गए दोनों आरोपी के कब्जे से 20 कार्टन बियर 22 हाफ 40 क्वार्टर रॉयल ग्रीन व्हिस्की 18 हाफ मैजिक मोमेंट 44 क्वार्टर पार्टी स्पेशल तीन कार्टन देसी संतरा बरामद किया गया है।

एक व्यक्ति और एक पार्टी की सरकार देश के लिए खतरनाकः ठाकरे

• तानाशाही के खिलाफ यह नारा देना होगा कि अबकी बार, भाजपा तड़ीपार।

• सभी प्रांतों का सम्मान करने वाली सरकार बनाने से ही देश बच सकता है।

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

शवसेना (यूबीटी) के प्रमुख उद्धव ठाकरे ने रविवार को दावा किया कि देश तानाशाही की तरफ बढ़ रहा है तथा एक व्यक्ति और एक पार्टी की सरकार भारत के लिए खतरनाक है। उन्होंने यहां रामलीला मैदान में इंडिया गठबंधन की लोकतंत्र बचाओ महारैली में लोगों का आह्वान किया कि वे लोकसभा चुनाव में भाजपा को पराजित करें और अबकी बार, भाजपा तड़ीपार का नारा दें।

इस रैली में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी और महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एससीपी) के प्रमुख शरद पवार, समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव सीताराम येचुरी, राष्ट्रीय जनता दल के नेता तेजस्वी यादव, नेशनल कांफ्रेंस के फारूक अब्दुल्ला शामिल थे। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, कुछ दिन पहले आशंका जताई जा रही थी कि देश तानाशाही की तरफ बढ़ रहा है। अब यह सच्चाई बन गयी है। उन्होंने कहा कि एक व्यक्ति और एक पार्टी की सरकार देश के लिए खतरनाक है। ठाकरे ने लोगों का आह्वान किया, अब हमें मिलीजुली सरकार लानी होगी। उनका कहना था, सभी प्रांतों का सम्मान करने वाली सरकार बनाने से ही देश बच सकता है। ठाकरे ने कहा, हम चुनाव के लिए एकत्र नहीं है, हम लोकतंत्र बचाने के लिए आए हैं। शिवसेना (यूबीटी) के प्रमुख ने कहा, जो सरकार किसानों को आतंकवादी मानती है उसे सत्ता में आने से रोकना होगा। जैसे किसानों को दिल्ली आने से रोका गया उसी तरह भाजपा को भी दिल्ली (सत्ता में) आने से रोकना होगा। ठाकरे ने कहा, मैं आपका आह्वान करता हूं कि तानाशाही के खिलाफ यह नारा देना होगा कि अबकी बार, भाजपा तड़ीपार। उन्होंने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल और झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना सोरेन के प्रति समर्थन जताया और कहा कि पूरा देश उनके साथ है।

पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की प्रमुख महबूबा मुफ्ती ने आरोप लगाया कि चुनावी बॉण्ड का मामला सबसे बड़ा घोटाला है और केंद्र की मौजूदा सरकार सबसे भ्रष्ट सरकार है। उन्होंने दावा किया कि इस सरकार ने लोकतंत्र को दबाने के लिए जम्मू-कश्मीर को प्रयोगशाला बना दिया है और वहां प्रयोग करने के बाद उसे पूरे देश में लागू करती है।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (माले) के महासचिव दीपांकर भट्टाचार्य ने दावा किया कि सभी लोकतांत्रिक संस्थाओं को खत्म करने का प्रयास किया जा रहा है तथा चुनावी बॉण्ड से मिले धन का उपयोग विपक्ष को तोड़ने के लिए हो रहा है।

संक्षिप्त खबरें

अग्निकांड में तीन घर राख

महनार - महनार थाना क्षेत्र के पहाड़पुर विशुनपुर पंचायत के वार्ड संख्या दो में शनिवार को बिजली के शार्ट सर्किट से आग लगने से तीन घर जलकर राख हो गया।इस अगलगी की घटना हजारों की संपत्ति जलकर राख हो गया।बताया गया कि इस अगलगी में घर मे रखा बर्तन,अनाज,कपड़ा आदि सहित अन्य सामान जलकर राख हो गया। रास्ता नही होने के कारण दमकल मौके पर नही पहुंच सका।जिसके बाद ग्रामीणों ने काफी मशक्कत कर आग पर पाया काबू। इस अगलगी की घटना में किशुन पासवान पिता विरेन्द्र पासवान,राम ईश्वर पासवान पिता स्व सुखदेव पासवान एवं दूर्गा पासवान पिता राम ईश्वर पासवान का घर पुरी तरह जल गया। घटना के बाद पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि राजू सिंह ने अंचलाधिकारी से बात कर सभी अग्निपिड़ितो को नियमानुसार सरकारी मुआवजा देने का मांग किया।

व्यवसायी से माँगी पाँच लाख की रंगदारी, 24 घण्टे के भीतर पुलिस ने किया गिरफ्तार

प्रातः किरण, संवाददाता

मधेपुरा जिले के उदाकिशुनगंज के आलमनगर रतवारा थाना क्षेत्र अंतर्गत एक व्यवसायी से अपराधियों ने मोबाइल से फोन कर पाँच लाख रुपये की रंगदारी माँगी।अपराधियों ने रंगदारी नहीं देने पर जान से मारने की धमकी दी।फोन पर रंगदारी माँगते हुए अपराधियों ने रुपये लेकर बिहारीगंज आने को कहा।रंगदारी मांगने की सूचना व्यवसायी ने रतवारा पुलिस को दिया।जिसके बाद पुलिस ने अपराधियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। जानकारी के अनुसार पुलिस मुख्यालय एवं पुलिस उप-महानिरीक्षक कोशी क्षेत्र सहरसा के निदेर्शानुसार मधेपुरा पुलिस द्वारा लगातार विशेष अभियान चलाया जा रहा हैं। इसी बीच पीड़ित मक्का व्यापारी विनोद पोद्दार उम्र-42 वर्ष पे०-कैलाश पोद्दार ग्राम+पो० खापुर वार्ड नं0-14 थाना-रतवारा जिला-मधेपुरा द्वारा 29 मार्च को रतवारा थाना में एक आवेदन दिया गया।दिए गए आवेदन में बताया गया कि 28 मार्च को उनके मो0 नं0-9534322468 पर समय 3:38 बजे अपराह्न बजे में मो0नं0-8900372127 से कॉल कर व्यवसायी से गाली-गलौज कर धमकी देते हुये (500000/-) पाँच लाख रुपए रंगदारी की मांग की गई।उसके बाद पुनः 29 मार्च को पूर्वाह्न में 4 बजे फोन कर रंगदारी में रूपया की मांग किया गया।आप्राधियों ने रंगदारी का रूपया लेकर बिहारीगंज पेट्रौल पम्प के पास बुलाया।रंगदारी नहीं देने पर अपराधियों ने व्यवसायी और उनके परिवार को जान से मारने का धमकी दी।जिससे व्यवसायी पूरी तरह से डर गया।इसके बाद इस संबंध में थानाध्यक्ष, रतवारा द्वारा तत्क्षण सूचना पुलिस अधीक्षक मधेपुरा एवं अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अविनाश कुमार को दिया।व्यवसायी के आवेदन के आधार पर प्राथमिकी दर्ज कर ली गई।

उसके बाद पुलिस अधीक्षक मधेपुरा के निदेर्शानुसार अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अविनाश कुमार के नेतृत्व में रतवारा थानाध्यक्ष त्रिलोकी नाथ शर्मा,आलमनगर थानाध्यक्ष अखिलेश कुमार तथा टेक्निकल सेल के पुलिस कर्मी के साथ एक टीम का गठन किया गया। अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अविनाश कुमार के नेतृत्व में टीम द्वारा बेहतर एवं सराहनीय कार्य करते हुये टेक्निकल सेल की मदद से घटना में संलिप्त पुरैनी थाना क्षेत्र के अपराधी मेघो कुमार,रतवारा थाना क्षेत्र के अपराधी रंजीत कुमार उर्फ झबरा, राजकुमार को पुलिस ने 24 घंटे के अन्दर घटना का सफल उद्भेदन करते हुये गिरफ्तार किया।जिस मोबाईल एवं सीम से धमकी दिया गया था उसे विधिवत जप्त किया गया हैं। इन सभी के द्वारा योजना बनाकर फर्जी सीम कार्ड का उपयोग कर मक्का व्यापारी विनोद पोद्दार से रंगदारी की मांग किया गया था। इन अपराधियों में मेघो कुमार का पूर्व का अपराधिक इतिहास भी रहा हैं वहीं रंजीत कुमार उर्फ झबरा एवं राज कुमार का अपराधिक इतिहास खंगाला जा रहा हैं। इस कांड में अन्य अपेक्षित बिन्दुओं पर जॉच एवं अनुसंधान जारी हैं।

चचरी के भरोसे बच्चों का भविष्य

- सात दशक बाद भी पुल नहीं बनने से ग्रामीणों में पनप रहा है आक्रोश

प्रातः किरण, संवाददाता

आलमनगर,मधेपुरा बसनवाड़ा पंचायत स्थित पुरैनी बासा में नदी के दूसरे किनारे पर स्थित स्कूलों व आंगनबाड़ी केंद्र जाने के लिए चचरी पुल ही एकमात्र सहारा है। इस चचरी पुल के भी क्षतिग्रस्त होने के कारण अब उस पर से होकर आवाजाही करना खतरे से खाली नहीं है। तीन स्कूल व एक आंगनबाड़ी केंद्र के नदी के उस पर रहने के कारण उसमें पढ़ने जाने वाले बच्चों के पास केवल चचरी पुल का ही विकल्प है। इसके बावजूद सरकार द्वारा इस गंभीर समस्या को दूर करने के लिए कोई पहल नहीं किए जाने से लोगों में आक्रोश पनप रहा है। चचरी के क्षतिग्रस्त होने के कारण अक्सर दुर्घटनाएं होती रहती है। ढाई साल पहले एक बच्ची की इस चचरी पुल से नदी में गिर जाने से डूबने से मौत हो गई थी। बसनवाड़ा पंचायत स्थित पुरैनी बासा में नदी के एक किनारे गांव बसा है। दूसरे किनारे स्कूल व आंगनबाड़ी केंद्र है। गांव की दूसरी ओर जाने के लिए स्थानीय लोगों को चचरी का पुल पार करना पड़ता है। क्षेत्र के कुंजौरी पंचायत स्थित बजरहा वार्ड सात प्राथमिक विद्यालय सुलेमान टोला, नवसृजित प्राथमिक विद्यालय ब्रह्म ज्ञानी टोला व प्राथमिक विद्यालय पुरैनी बासा स्थित है। स्कूल जाने के लिए विद्यालय के बीच नदी है। नदी पर ग्रामीणों द्वारा बांस का चचरी पुल बनाया गया था। अब पूरी तरह जर्जर हो चुका है। इसको लेकर स्कूल के शिक्षक व ग्रामीणों द्वारा प्रखंड विकास पदाधिकारी, प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी, अंचला अधिकारी सहित अन्य वरीय अधिकारियों, सांसद व विधायक को पत्र लिखा गया है। लेकिन अब तक इस दिशा में कोई सकारात्मक पहल नहीं हो की गई है। छात्र छात्रों की संख्या प्राथमिक विद्यालय सुलेमान टोला में बच्चों की संख्या 227, नवसृजित प्राथमिक विद्यालय ब्रह्म ज्ञानी टोला में बच्चों की संख्या 106, प्राथमिक विद्यालय पुरैनी बासा में नामांकित बच्चों की संख्या 158। क्या कहते हैं प्रखंड विकास पदाधिकारी ग्रामीण व स्कूल के शिक्षकों द्वारा जर्जर चचरी पुल के क्षतिग्रस्त होने व नए पुल निर्माण को लेकर आवेदन दिया गया है। आवेदन के आधार पर समस्या को वरीय पदाधिकारी के पास प्रेषित कर दिया गया है।

वैशाली की बेटी ने पूरे बिहार में तीसरा स्थान हासिल कर जिले का किया नाम रौशन

प्रातः किरण, संवाददाता

वैशाली। वैशाली की बेटी ने पूरे बिहार में तीसरा स्थान हासिल कर जिले का नाम रौशन कर दिया है।वैशाली प्रखंड क्षेत्र के मदरना पंचायत स्थित वार्ड नंबर-6 निवासी शिक्षक मोहम्मद साजिद की सबसे बड़ी बेटी साजिया प्रवीण ने 486 अंक लाकर पूरे बिहार में तीसरा स्थान हासिल किया है जिससे पूरे परिवार में खुशी का माहौल है। साजिया ने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता पिता को दिया है और आगे चलकर डॉक्टर बनने की इच्छा जाहिर की है।खास बात यह है कि साजिया के पिता उसी विद्यालय में गणित के शिक्षक है जिस विद्यालय में साजिया पढ़ती है साथ साजिया की मां भी राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय मन्नीपुर में उर्दू शिक्षिका के पद पर तैनात है।साजिया परवीन ने बताया कि उसको बचपन से माता और पिता का साथ मिला इसलिए सफलता का श्रेय अपने माता पिता को देना चाहती हूं।साजिया ने बताया कि 6 से 7 घण्टे सेल्फ स्टडी के बाद यह सफलता मिली है और जो बच्चे मैट्रिक की परीक्षा देते है उन्हें 6 से 7 घण्टा पढ़ाई करनी चाहिए।वहीं साजिया के शिक्षक पिता मोहम्मद साजिद ने बताया कि बचपन से साजिया अपनी मां के साथ स्कूल जाती थी और बड़ी होने पर वह खुद अपने साथ उसे लेकर स्कूल जाते थे जहाँ अपनी देख रेख में ही साजिया की पढ़ाई होती थी और इस सफलता से वह काफी खुश है।उन्होंने बताया कि साजिया आगे चलकर डॉक्टर बनना चाहती है और अपनी बेटी के इस सपने को पूरा करने का वह प्रयास करेंगे और साजिया जितना पढ़ना चाहेगी उतना उसे पढ़ाएंगे।बहरहाल शिक्षक माता पिता की सबसे बड़ी संतान साजिया ने अपनी एक छोटी बहन और दो छोटे भाई के साथ साथ तमाम वैसे छात्राओ के लिए एक मिसाल बन गई है जो ग्रामीण क्षेत्र में रहते हुए कम संसाधन के कारण सफलता के मुकाम तक नहीं पहुंच पाते है।साजिया की इस सफलता से पूरे परिवार में खुशी का माहौल है क्योंकि उनकी बेटी ने ना सिर्फ उनका बल्कि जिले का नाम भी रौशन कर दिया है।

बदमाशों की गोली से घायल युवक की 17 दिन बाद मौत

बाईक छीनने के दौरान बदमाशों ने मारी थी गोली

- थाना क्षेत्र के कोल्हायपट्टी, रजनी प्रतापनगर रोड में हुई थी घटना

प्रातः किरण, संवाददाता

मुरलीगंज (मधेपुरा) बाइक छीनने के दौरान बदमाशो ने बाइक सवार युवक को गोली मारी थी। गोली लगने से युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसे सीएचसी से प्राथमिक उपचार के बाद निजी नर्सिंग मे रखकर ईलाज करवाया जा रहा था। करीब 16 दिन बाद रविवार की दोपहर युवक की मौत हो गयी। मौत के बाद पीड़ि।त स्वजन का रो रोकर बुराहाल है। मृतक युवक रजनी पंचायत के प्रतापनगर वार्ड तीन निवासी लंबू मुखिया (38) वर्ष है। बता दे कि लंबू मुखिया अपने करीबी को मुरलीगंज रेलवे स्टेशन पर छोड़कर वापस घर लौट रहे थे। इस दौरान कोल्हायपट्टी चौक पर दो युवक गाड़ी रोकवाकर थोड़ी दूर छोड़ने की बात कहे। इसपर उक्त युवक अपने साथ दोनो युवको को बैठाकर आगे बढ़ गये। इसी बीच कोल्हायपट्टी नहर समीप पहुंचते ही दोनो युवक बाइक चालक को रोकवा दिया और रुपए की मांग करने लगा। रूपया नही देने के बाद बाइक की चाभी लेने लगे। जिसका लंबू मुखिया द्वारा विरोध करने के दौरान उक्त दोनो बदमाशों ने सामने से गोली मारकर जख्मी करते हुए बाइक लेकर फरार हो गया। घटना की सूचना मिलते हीं क्षेत्र में पुलिस की दबिश बढ़ाई गई है। लेकिन इसके बावजूद बदमाश पुलिस पकड़ से बाहर है। और ना ही बाईक बरामद हो पाया है। थानाध्यक्ष मंजू कुमारी ने कहा कि मामले में अज्ञात पर प्राथमिकी दर्ज की गई थी। बदमशों की गिरफ्तारी नही हुई है। छानबीन जारी है।

महनार का नाका बन्द रहने से व्यवसायियों में दहशत

प्रातः किरण संवाददाता

महनार। 31 मार्च। महनार नगर का एक मात्र पुलिस नाका पिछले बीस साल से बन्द रहने के कारण बाजार में अपराधियों के हौसले बुलन्द है और व्यवसायियों में दहशत है। विदित हो कि वर्ष 2003 में बल के आभाव में इस नाका को बन्द कर दिया गया था और तब से यह बन्द ही है । बढ़ती आबादी के मद्देनजर नगर में दो अन्य नाका की स्थापना करनी चाहिए थी तो इसके विपरीत एक नाका पूर्व से था उसको भी बन्द कर दिया गया । इस नाका के बन्द होने से नगर में साईकल, बाइक चोरी व सड़क पर झपटमार की वारदात बढ़ गई और यातायात व्यवस्था भी चरमरा गयी। रात में दुकान का ताला तोड़ने की भी घटना होने लगी जिस कारण व्यवसायियों में दहशत है। वर्तमान में कई नये थाना खोले गए व लालगंज में बन्द पड़े नाका को भी चालू किया गया एवं हाजीपुर में नाका को ओपी का दर्जा दे कर उसे उत्क्रमित किया गया किन्तु महनार अनुमंडल मुख्यालय है किंतु इसके बावजूद भी नगर के एक मात्र नाका में पुलिस बल पदस्थापित कर इसे चालू करने का कष्ट पुलिस अधीक्षक ने नही किया जो कि महनार के साथ सौतेला व्यवहार का नमूना है। यहां के जनप्रतिनिधि भी इतने निकम्मे है कि चुनाव लड़ने व वोट लेने के लिए दर्जनों लोग मैदान में आजाते है किंतु इस काम के लिए पुलिस अधीक्षक से भेंट करने की बात तो दूर एक पत्र भी यह लोग उनको नही लिखते है ।

सिमुलतला आवासीय विद्यालय ने बिहार बोर्ड मैट्रिक रिजल्ट में फिर जलवा दिखाया

प्रातः किरण, संवाददाता

जमुई बिहार बोर्ड के मैट्रिक रिजल्ट में सिमुलतला आवासीय विद्यालय का फिर से जलवा देखने को मिला है। इस स्कूल के 6 छात्र टॉप टेन में शामिल हैं। रविवार का दिन इस विद्यालय के लिए फिर से खास रहा. इस स्कूल के अदित्य कुमार को थर्ड रैंक मिला है जबकि विक्की कुमार ने छठा स्थान हासिल किया। सिमुलतला स्कूल के मित्तल कुमार और अमन कुमार मैट्रिक के नतीजों की मेरिट लिस्ट में 9 वें स्थान पर रहे, वहीं विक्की और सावन 10 वे रैंकर बने। जमुई जिले का सिमुलतला आवासीय विद्यालय जो कि सरकार का ड्रीम प्रोजेक्ट की स्थापना नेतरहाट की कमी को दूर करने के लिए 2010 में हुई थी। इस स्कूल में पढ़ने वाले छात्र पहली बार साल 2015 में मैट्रिक की परीक्षा में शामिल हुए थे। तब से परीक्षा परिणाम में यह स्कूल टॉप करते आ रहा है। यहां के छात्र मैट्रिक परीक्षा में टॉपर्स होते हैं और इसी कारण इस स्कूल को टॉपर्स की फैक्ट्री कहा जाता है। बात अगर 2015 के मैट्रिक परीक्षा परिणाम की करें तो इस स्कूल के 108 छात्र उस साल मैट्रिक परीक्षा में शामिल हुए थे जिसमें टॉप 10 में शामिल 31 छात्रों में 30 छात्र इसी स्कूल के थे. साल 2016 में इस स्कूल के 121 छात्र मैट्रिक परीक्षा में शामिल हुए और टॉप 10 की लिस्ट में इस स्कूल के 42 छात्र शामिल रहे. 2017 में इस स्कूल के 113 छात्र मैट्रिक परीक्षा में शामिल हुए जिसमें टॉप 10 की लिस्ट में इस स्कूल के 12 छात्र शामिल थे. साल 2018 में 112 छात्र परीक्षा में शामिल हुए टॉप 10 में उसी साल इस स्कूल के 17 छात्र शामिल थे। साल 2019 में सिमुलतला आवासीय विद्यालय के कुल 119 छात्र मैट्रिक परीक्षा में शामिल हुए जिसमें टॉप 10 में इस स्कूल के 16 छात्रों ने अपनी जगह बनायी थी. ।

महुआ के ग्रामीण परिवेश में पढ़ी छात्रा ने मैट्रिक परीक्षा में राज्य में लाया नौवां स्थान

प्रातः किरण, संवाददाता

महुआ बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के द्वारा मैट्रिक परीक्षा का परिणाम जारी कर दिया जाने के बाद प्रखंड क्षेत्र में कहीं खुशी कहीं गम का माहौल बना हुआ है। रविवार के दोपहर जैसे ही मैट्रिक की परीक्षा देने वाले छात्राओं को रिजल्ट जारी होने का पता चला तो सभी ने साइबर कैफे के साथ-साथ मोबाइल नेट से ही अपना रिजल्ट चेक करना शुरू कर दिया। अपना अपना रिजल्ट देखते ही छात्र-छात्राओं के चेहरे खुशी से खिल उठे। वही बेहतर प्रदर्शन करने वाले छात्राओं और उनके परिजनों के साथ-साथ उनके विद्यालय परिवार और कोचिंग संस्थानों में भी जश्न का माहौल बना हुआ है।इसी कड़ी में महुआ प्रखंड क्षेत्र के उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय रसूलपुर मुबारक की छात्रा स्मृति कुमारी ने पुरे बिहार में 9वा स्थान लाते हुए अपने परिजनों के साथ-साथ अपने विद्यालय परिवार और गांव समाज और जिले का भी नाम रौशन किया है। विद्यालय के शिक्षक विद्यालय के शिक्षक मनमोहन कुमार, अरविंद कुमार, शिक्षिका नीतू कुमारी आदि ने बताया कि स्मृति कुमारी गुड्डू राय की पुत्री है। स्मृति की मां स्मृति की मां प्रमिला देवी ग्रहणी है और स्मृति के पिता गुड्डू राय मेहनत मजदुरी करते है शिक्षक मनमोहन कुमार ने बताया कि हमे इस छात्रा को वर्ग प्रथम से ही लगातार दसवीं तक पढ़ने का मौका मिला। वह शुरू से ही मेधावी छात्रा थी और पूरे लगन के साथ अपनी पढ़ाई किया करती थी। हालांकि काफी निर्धन परिवार से होने के कारण उसे अपने पढ़ाई के दौरान काफी आर्थिक दिक्कतों का भी सामना करना पड़ा। जिसे समय-समय पर हमने भी उसकी पूरी सहायता की ।आज स्मृति की सफलता पर उसके परिजनों के साथ-साथ विद्यालय में भी उत्सवी माहौल बना हुआ है। उन सभी ने स्मृति के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए उसके बेहतर भविष्य की कामना की है। वही स्मृति के पूरे बिहार में 9 वा स्थान लाने की खबर सुनते ही उसके ननिहाल हरपुर ओस्टी में भी खुशी से लोग उछल पड़े वही स्मृति को ननिहाल में पहुंचकर दर्जनों लोगों ने उसे मिठाई खिलाकर खुशी का इजहार करते हुए उसके पूरे परिवार को बधाइयां दी है। स्मृति को बधाई देने वालों में विपिन कुमार, संजय चौधरी,संतोष कुमार रोशन कुमार प्रमोद कुमार शिवेंद्र कुमार सरोज कुमार राजेश कुमार गौरव कुमार आदि शामिल हैं।वही द हॉप कोचिंग संस्थान कन्हौली के निदेशक पंकज कुमार सुमन ने भी बताया की हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी उनके कोचिंग संस्थान के साथ छात्राओं ने बिस्तर प्रदर्शन करते हुए कोचिंग संस्थान के साथ-साथ अपने परिवार गांव समाज प्रखंड और जिले का नाम और आसान किया है बेहतर प्रदर्शन करने वाले छात्राओं में कुणाल जयसवाल - 438,कुणाल पटेल 392, शिवम पटेल 374,साहिल जयसवाल 335,रूबी कुमारी 325,अनुराधा 313अंजली - 327रिया -318,सुरभि 312 पियूष 337,ऋतिक 300 रौशन ने 300 अंक ला कर बेहतर प्रदर्शन किया है।

ग्राम कचहरी रौन में दो वादों का किया गया सफलता पूर्वक निष्पादन

प्रातः किरण, संवाददाता

अलौली। ग्राम कचहरी रौन में दो वादों का निपटारा किया गया। ग्राम कचहरी में आए दो वादों में एक बड़तर सतघट्टा के पति पत्नी घरेलू विवाद संबंधित तथा दूसरा लदौड़ा का जमीन विवाद से संबंधित मामला को निष्पादन किया गया। विदित हो कि लदौड़ा का जमीन संबंधित विवाद काफी पुराना है। विगत तीन बार स्थल एवं ग्राम कचहरी में पंचायत हुई थी। आज सफलतापूर्वक पुराने विवादों का निपटारा किया गया। पंचायत में पंच सरपंच संघ के जिला अध्यक्ष किरण देव यादव, ग्राम कचहरी रौन के सरपंच श्रवण कुमार, पैक्स अध्यक्ष रविंद्र यादव, पूर्व सरपंच राजकुमार यादव, गणमान्य पंच रामशोभा यादव, पक्षरान राम उदगार यादव दिनेश यादव राम सागर यादव अरुण यादव गंगाराम यादव मुसहरु यादव धनंजय यादव महेश वर्मा शिवशंकर नीतीश कुमार, जयराम यादव, सुशीला देवी आदि मौजूद थे।

लोकसभा चुनाव : 2024 , नामांकन पत्रों की जांच का पहला चरण पूरा

- सात अभ्यर्थियों का पर्चा स्वीकृत , पांच किए गए निरस्त
- नाम वापसी के साथ प्रतीक वितरण 02 को , 19 अप्रैल को मतदान
- केकेएम कॉलेज में होगी 04 जून को वोटों की गिनती
- निष्पक्ष चुनाव के लिए जिला प्रशासन कटिबद्ध : डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट

प्रातः किरण, संवाददाता

जमुई लोकसभा क्षेत्र (सु.) के चुनाव के लिए दाखिल कुल बारह नामांकन पत्रों की जांच का काम पूरा हो गया। भारत निर्वाचन आयोग के गाइडलाइंस के मुताबिक सात नामजदगी के पर्चे स्वीकृत किए गए वहीं विभिन्न वजहों से पांच नामांकन पत्रों को निरस्त कर दिया गया। संविक्षा कार्य को लेकर समाहरणालय में खास गहमा-गहमी देखी गई। जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट राकेश कुमार ने बताया कि 40 जमुई लोकसभा क्षेत्र (सु.) के लिए निर्वाचन प्रक्रिया जारी है। भारत निर्वाचन आयोग के गाइडलाइंस के मुताबिक इस क्षेत्र के लिए मतदान प्रथम चरण में 19 अप्रैल को कराया जाना है। इसके लिए शनिवार को दाखिल किए गए नामजदगी के पर्चों की जांच की गई। राजद उम्मीदवार अर्चना कुमारी , एसयूसीआई प्रत्याशी संतोष कुमार दास , बसपा उम्मीदवार सकलदेव दास , लोकतांत्रिक सामाजिक न्याय पार्टी के उम्मीदवार डॉ. जगदीश प्रसाद , लोजपा रामबिलास के उम्मीदवार अरुण कुमार भारती , राष्ट्रीय जन संभावना पार्टी के प्रत्याशी श्रवण कुमार और निर्दलीय सुभाष पासवान का पर्चा वैध पाए जाने के बाद इसे स्वीकृत कर दिया गया वहीं विभिन्न वजहों के चलते भारतीय लोक चेतना पार्टी के उम्मीदवार गुड़िया देवी , समझदार पार्टी के उम्मीदवार गौतम पासवान , भारतीय एकता पार्टी के उम्मीदवार अनिल चौधरी , निर्दलीय चंद्रशेखर कुमार और उपेंद्र रविदास के नामांकन पत्रों को निरस्त कर दिया गया। जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने आगे कहा कि भारत निर्वाचन आयोग के निदेर्शानुसार अभ्यर्थी 02 अप्रैल तक नाम वापस ले सकेंगे। इसी दिन अपराह्न 03 : 00 बजे से सुपात्र अभ्यर्थियों के बीच प्रतीक का वितरण किया जाएगा। उन्होंने 40 जमुई लोकसभा क्षेत्र (सु.) के लिए 19 अप्रैल को सुबह 07 : 00 बजे से अपराह्न 04 : 00 बजे तक मतदान कराए जाने की बात बताते हुए कहा कि स्थानीय केकेएम कॉलेज में 04 जून को वोटों की गिनती कराई जाएगी और इसी दिन परिणाम घोषित कर दिए जाने की उम्मीद है। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने कहा कि लोकसभा का चुनाव किताबी ढंग से संपन्न कराना जिला प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने सुपात्र वोटरों से अपील करते हुए कहा कि 19 अप्रैल को पहले मतदान फिर जलपान करें और प्रजातंत्र की जड़ों को और अधिक मजबूत करने में अहम भूमिका निभाएं। जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने प्रजातंत्र के महापर्व को उल्लास के वातावरण में मनाए जाने की अपील की।

इस ब्रह्माण्ड में हर छठे मौत के लिए प्रदुषण जिम्मेदार- पर्यावरणविद् आनंद किशोर मिश्रा

- द बीएमजे के रिपोर्ट के अनुसार बाहरी वायु प्रदूषण भारत में प्रति वर्ष 21 लाख 80 हजार लोगों की जिंदगी छीन लेता है

प्रातः किरण, संवाददाता

जमुई। साईकिल यात्रा एक विचार, जमुई के बैनर तले आज अपने रविवारीय यात्रा के 430 वीं क्रम में श्री कृष्णा सिंह स्टेडियम से बाजार बुधवन तालाब चौंक होते हुए विट्ठलपुर ग्राम पहुंच कर लोगों को अपने आसपास पर्यावरण को सुरक्षित करने की अपील की गई। इस अवसर पर लवकिशोर मिश्रा के निजी जमीन पर पौधा रोपण किया गया एवं उनके द्वारा ही सभी पौधे को संरक्षण रखने का भी संकल्प लिया गया। मौके पर उपस्थित शिक्षक एवम पर्यावरणविद् आनंद किशोर मिश्रा द्वारा बताया गया की दुनिया भर में हर तरह के प्रदूषण का कहर बढ़ता ही जा रहा है। 2019 में विश्व के करीब 90 लाख लोगों की मौत के लिए प्रदूषण जिम्मेदार था। प्रकाशित अध्ययन के अनुसार बाहरी वायु प्रदूषण भारत में प्रति वर्ष 21 लाख 80 हजार लोगों की जिंदगी छीन लेता है। जो की हर छठा मौत का जिम्मेदार है। यह आंकड़े हर साल बढ़ता जाता है। जो भविष्य के लिए खतरनाक साबित होता जा रहा है। इसके बचाव के लिए जहां भी संभव हो पौधा रोपण करना चाहिए ताकि हमारा वातावरण स्वच्छ रह सकें। सदस्य विवेक कुमार ने कहा कि बढ़ते प्रदूषण के बचाव के लिए अपने आसपास जितना भी संभव हो हरा भरा क्षेत्र बनाने का प्रयास करें प्राकृतिक संसाधनों को बचाव के लिए सामूहिक रूप से जागरूक होकर कार्य करना चाहिए। ताकि अपने भविष्य को सुरक्षित वातावरण दें सकें। इस अवसर पर आनंद किशोर मिश्रा, राहुल सिंह, धीरज कुमार सिंह, शैलेश भारद्वाज, विवेक कुमार, मोहित कुमार, लड्डू मिश्रा, हर्ष कुमार सिन्हा, लव किशोर मिश्रा, रवि मिश्रा, डबलु पासवान सहित दर्जनों ग्रामीण उपस्थित थे।

सेवानिवृति पर सम्मान समारोह आयोजित

प्रातः किरण, संवाददाता

हाजीपुर।शिक्षक को समयनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ एवं ज्ञाननिष्ठ होना चाहिए।शिक्षक ही ऐसा प्राणी है जिसके हाथों से निर्माण एवं प्रलय दोनों संभव है। शिक्षा रुपी प्रकाश से वह अज्ञान रुपी अंधकार को भगाकर अपने छात्रों में एक जिम्मेदार नागरिक होने का संस्कार देता है। मध्य विद्यालय कुतुबपुर हाजीपुर में शिक्षिका सुमन सिन्हा की सेवा निवृत्ति के अवसर पर आयोजित सम्मान समारोह में वक्ताओं ने उक्त बातें कही। विद्यालय के प्रधानाध्यापक डॉ पंकज कुमार ने कहा कि शिक्षक को शालीन होने के साथ ही अपने ज्ञान कौशल को हमेशा अपडेट करते रहना चाहिए। सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले गरीब बच्चों को शिक्षित एवं संस्कारित करने की जिम्मेदारी शिक्षकों की है। शिक्षकों को सरकार एवं समाज दोनों की कसौटी पर खड़ा उतरना होगा।इस अवसर पर शिक्षिका डॉ सुधा कुमारी शर्मा ने कहा कि महिलाओं के लिए प्रारंभिक शिक्षा में अवसर बढ़े हैं। क्योंकि शिक्षा शास्त्र भी महिलाओं को प्रारंभिक शिक्षा के लिए सर्वाधिक उपयुक्त मानता है। इसलिए हम महिलाओं को अपेक्षाओं पर खरा उतरने हेतु सचेष्ट रहना होगा। मोहम्मद मुमताज ने भी आदर्श शिक्षक की व्याख्या की और कहा कि सुमन सिन्हा में आदर्श शिक्षक में पाए जाने सभी गुण थे। अमरेंद्र कुमार ने बताया कि अपने ही समाज के बच्चों को हम शिक्षित करते हैं।हमारा समाज हमसे अपेक्षा भी करता है और सामाजिक चेतना का हमें केंद्र बिंदु भी मानता है। इसलिए हमें सजग,सहज एवं शिष्ट रहते हुए बच्चों के ज्ञान ,कौशल में वृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। समारोह को मधु कुमारी,अरबिंद कुमार, सरोज सिन्हा, अनीता कुमारी, विद्याभूषण,रंजीत झा, रानी विभा,सौरभ कुमार, रंजन कुमार, रेखा कुमारी, सुप्रिया, नलिनी एवं अनामिका आदि ने भी संबोधित किया एवं सेवानिवृत्त शिक्षिका सुमन सिन्हा को भावभीनी बिदाई दी।

हथियार के बल पर लोजल मैन से लूट लिए हजारों रुपए

प्रातः किरण, संवाददाता

महुआ। महुआ थाना क्षेत्र के हकीमपुर पेट्रोल पंप पर एक बाइक सवार अपराधियों ने हथियार के बल पर 60 हजार रुपए लूट कर फरार हो गए। घटना शनिवार की रात आठ बजे के आसपास की बताई जाती हैं।वहीं घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंचीं और मामले की छानबीन में जुट गई। मिली जानकारी के अनुसार शनिवार की रात के लगभग 8 बजे के आसपास महुआ मुजफ्फरपुर मुख्य सड़क मार्ग के हकीमपुर गांव स्थित मां पेट्रोल पंप पर एक बाइक पर सवार दो युवक पहुंचे और पहुंचते ही हथियार निकाल कर नोजल मैन को अपने कब्जे में ले लिया और उससे लगभग 60 हजार लुटकर हथियार लहराते हुए आराम से वहां से भाग निकलने में कामयाब रहे। घटना के बाद लोगों ने इसकी सूचना महुआ थाने की पुलिस को दी। सूचना मिलते ही महुआ पुलिस मौके पर पहुंचीं और मामले की छानबीन में जुट गई। बताया जाता है।

सम्पादकीय

मजबूत बैंकिंग जरूरी

तकरीबन एक दशक तक फंसे कर्ज यानी गैर निष्पादित परिसंपत्तियों (एनपीए) में इजाफा होने तथा जोखिम आंकने, खासकर कॉर्पोरेट ऋण के जोखिम के अंकन में शिथिलता के बाद अब देश का बैंकिंग क्षेत्र अच्छी स्थिति में नजर आ रहा है। उसका मुनाफा बढ़ रहा है और निवेशकों का विश्वास नए सिरे से बहाल हो रहा है। हाल ही में फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स ऐंड इंडस्ट्री तथा इंडिया बैंक्स एसोसिएशन के एक सर्वेक्षण में इसकी पुष्टि हुई है। सर्वेक्षण में 23 बैंकों को शामिल किया गया था और उसने दिखाया कि बैंकिंग क्षेत्र कई मानकों पर बेहतर प्रदर्शन कर रहा है। इसमें परिसंपत्ति की गुणवत्ता तथा ऋण वृद्धि शामिल थी। सर्वे के निष्कर्षों में यह भी कहा गया कि बैंक अपेक्षित ऋण हानि (ईसीएल) व्यवस्था को अपनाने को भी तैयार हैं और वे जलवायु अनुकूलन तथा उत्सर्जन में कमी की दिशा में भी कदम उठा रहे हैं। इसमें पर्यावरण के अनुकूल गतिविधियां अपनाने को आर्थिक मदद देने, कागज का इस्तेमाल कम करने तथा तटीय इलाकों में जैव ईंधन का इस्तेमाल रोकने जैसे कदम शामिल हैं। ये पर्यावरण, सामाजिक और संचालन (ईएसजी) पहलों का हिस्सा हैं। सर्वेक्षण में शामिल बैंकों में से 83 फीसदी ने कहा कि उनके ऋण मानक आसान हुए हैं या अपरिवर्तित रहे हैं। उन्होंने अर्थव्यवस्था के लिए सकारात्मक वृद्धि का अनुमान दशार्या, एनपीए में कमी आने की बात कही और कहा कि क्षेत्रवार जोखिम में कमी आने की उम्मीद है। चुनिंदा क्षेत्रों के लिए दीर्घकालिक ऋण वितरण में इजाफा हुआ है। इसमें अधोसंरचना, लौह और इस्पात, खाद्य प्रसंस्करण तथा औषधि क्षेत्र शामिल हैं। ध्यान देने वाली बात यह है कि ये वही क्षेत्र हैं जहां एनपीए का स्तर भी अधिक है। अगर इन क्षेत्रों की पहुंच आसान ऋण तक बनी रहती है तो इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। बैंकों को एक बार फिर फंसे हुए कर्ज के चक्र में फंसने से बचना चाहिए। आमतौर पर बैंक अपने बही खातों में संकटग्रस्त परिसंपत्तियों को लेकर संतुष्ट हैं। सर्वेक्षण में शामिल 77 फीसदी बैंकों ने कहा कि बीते छह महीनों में उनके एनपीए में कमी आई है। आधे से अधिक बैंकों का मानना है कि अगले छह महीनों में सकल एनपीए 3-3.5 फीसदी के दायरे में रहेगा। यह आशावाद बेवजह नहीं है क्योंकि सकल एनपीए वित्त वर्ष 2018 के अंत के 11.6 फीसदी से कम होकर गत वर्ष सितंबर में 3.2 फीसदी रह गया था।

क्या है आचार संहिता ?

संजय गोस्वामी

लोकतांत्रिक प्रणाली में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव लोकतंत्र के आधार हैं। इसमें मतदाताओं के बीच अपनी नीतियों तथा कार्यक्रमों को रखने के लिए सभी उम्मीदवारों तथा सभी राजनीतिक दलों को समान अवसर और बराबरी का स्तर प्रदान किया आचार संहिता के तहत बताया गया कि क्या करें और क्या न करें। 1962 के लोकसभा आम चुनाव में पहली बार चुनाव आयोग ने इस संहिता को सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों में वितरित किया। इसके बाद 1967 के लोकसभा और विधानसभा के चुनावों में पहली बार राज्य सरकारों से आग्रह किया गया कि वे राजनीतिक दलों से इसका अनुपालन करने को कहें और कमोबेष ऐसा हुआ भी। इसके बाद से लगभग सभी चुनावों में आदर्ष आचार संहिता का पालन कमोबेष होता रहा है। गौरतलब यह भी है कि चुनाव आयोग समय-समय पर आदर्ष आचार संहिता को लेकर राजनीतिक होते ही राज्य सरकारों और प्रशासन पर कई तरह के अंकुश लग जाते हैं। सरकारी कर्मचारी चुनाव प्रक्रिया पूरी होने तक निर्वाचन आयोग के तहत आ जाते हैं। आचार संहिता में सभी दलों के लिये कुछ खास दिशा-निर्देश दिए गए हैं। इनमें सरकारी मषीनरी और सुविधाओं का उपयोग चुनाव के लिये न करने और मंत्रियों तथा अन्य अधिकारियों द्वारा अनुदानों, नई योजनाओं आदि का ऐलान करने की मनाही है। मंत्रियों तथा सरकारी पदों पर तैनात लोगों को सरकारी दौरे में चुनाव प्रचार करने की इजाजत भी नहीं होती। सरकारी पैसे का इस्तेमाल कर विज्ञापन जारी नहीं किये जा सकते हैं। दलों से चर्चा करता रहता है, ताकि इसमें सुधार की प्रक्रिया बराबर चलती रहे। भारत में होने वाले चुनावों में अपनी बात मतदाता तक पहुंचाने के लिये चुनाव सभाओं, जुलूसों, भाषणों, नारेबाजी और पोस्टरों आदि का इस्तेमाल किया जाता है। इसी के मद्देनजर आदर्ष आचार संहिता के तहत क्या करें और क्या न करें की एक लंबी-चौड़ी फेहरिस्त है, लेकिन हम बात उन्हीं मुद्दों पर करेंगे, जो आदर्ष आचार संहिता को इतना अहम बना देते हैं। वर्तमान में प्रचलित आदर्ष आचार संहिता में राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों के सामान्य आचरण के लिये दिशा -निर्देष दिये गए हैं। सबसे पहले तो आदर्श आचार संहिता लागू इनके अलावा चुनाव प्रचार के दौरान किसी की प्राइवेट लाइफ का जिक्र करने और सांप्रदायिक भावनाएं भड़काने वाली कोई अपील करने पर भी पाबंदी लगाई गई है। यदि कोई सरकारी अधिकारी या पुलिस अधिकारी किसी राजनीतिक दल का पक्ष लेता है तो चुनाव आयोग को उसके खिलाफ कार्रवाई करने का अधिकार है। इसके अलावा चुनाव सभाओं में अनुषासन और शिस्टाचार कायम रखने तथा जुलूस निकालने के लिये भी दिशा-निर्देश बनाए गए हैं। किसी उम्मीदवार या पार्टी को जुलूस निकालने या रैली और बैठक करने के लिये चुनाव आयोग से अनुमति लेनी पड़ती है और इसकी जानकारी निकटतम थाने में देनी होती है। आचार संहिता की नवीन तकनीकें जब डिजिटलीकरण और हाई-टेक होने का दौर चल रहा हो तो भला चुनाव आयोग क्यों पीछे रहता। आदर्ष आचार संहिता को और यूजर-फ्रेंडली बनाने के लिये कुछ समय पहले चुनाव आयोग ने ह्यबटप्ळप्स्ह्ल एप लॉन्च किया। तेलंगाना, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेष, मिजोरम और राजस्थान के हालिया विधानसभा चुनावों में इसका इस्तेमाल हो रहा है। ईविम के जरिये चुनाव वाले राज्यों में कोई भी व्यक्ति आदर्ष आचार संहिता के उल्लंघन की रिपोर्ट कर सकता है। इसके लिये उल्लंघन के दृष्य वाली केवल एक फोटो या अधिकतम दो मिनट की अवधि का वीडियो रिकॉर्ड करके अपलोड करना होता है। उल्लंघन कहां हुआ है, इसकी जानकारी जरिये ऑटोमेटिकली संबंधित अधिकारियों को मिल जाती है। शिकायत करने वाला का पहचान गोपनीय रखते हुए रिपोर्ट के लिये यूनीक आईडी दी जाती है। यदि षिकायत सही पाई जाती है तो एक निष्चित समय के भीतर कार्रवाई की जाती है। यह तो बात हुई इस एप के फायदों की, लेकिन हम सब यह भी जानते हैं कि नफे के साथ नुकसान भी जुड़ा होता है। इसी के मद्देनजर इस एप के गलत इस्तेमाल को रोकने के भी इंतजाम किये गए हैं। यह एप केवल आदर्ष आचार संहिता के उल्लंघन के बारे में काम करता है। तस्वीर लेने या वीडियो बनाने के बाद यूजर्स को रिपोर्ट करने के लिये केवल पाँच मिनट का समय मिलता है और इसमें पहले से ली गई फोटोज या वीडियो अपलोड नहीं किये जा सकते। हाई-टेक होने की दौड़ में सीविजिल एप के अलावा चुनाव आयोग ने और कई एडवांस तकनीकों को भी अपनाया है। इनमें नेषनल कंप्लेंट सर्विस, इंटीग्रेटेड कॉन्टैक्ट सेंटर, सुविधा सुगम, इलेक्षन मॉनिटरिंग डैषबोर्ड और वन वे इलेक्ट्रॉनिकली ट्रांसमिटेड पोस्टल बैलट आदि शामिल हैं। चुनाव आयोग आदर्श आचार संहिता तथा अन्य उपायों के जरिये चुनावों को निश्पक्ष और साफ-सुथरा बनाने के प्रयास लगातार करता रहता है और इसके लिये उसे अंतर्राश्ट्रीय स्तर पर सराहा भी गया है, लेकिन यह भी उतना ही सच है कि भारत जैसे बड़े देष में चुनावों को केवल आदर्ष आचार संहिता के रहमो-करम पर नहीं छोड़ा जा सकता है। हैलीपैड, मीटिंग ग्राउंड, सरकारी बंगले, सरकारी गेस्ट हाउस जैसी सार्वजनिक जगहों पर कुछ उम्मीदवारों का कब्जा नहीं होना चाहिये। इन्हें सभी उम्मीदवारों को समान रूप से मुहैया कराना चाहिये। इन सारी कवायदों का मकसद सत्ता के गलत इस्तेमाल पर रोक लगाकर सभी उम्मीदवारों को बराबरी का मौका देना है। आचार संहिता को लेकर सर्वाच्च न्यायालय का नजरिया इस मुद्दे पर देष की आला अदालत भी अपनी मुहर लगा चुकी है। सर्वाच्च न्यायालय इस बाबत 2001 में दिये गए अपने एक फैसले में कह चुका है कि चुनाव आयोग का नोटिफिकेषन जारी होने की तारीख से आदर्ष आचार संहिता को लागू माना जाएगा। इस फैसले के बाद आदर्ष आचार संहिता के लागू होने की तारीख से जुड़ा विवाद हमेषा के लिये समाप्त हो गया। अब चुनाव अधिसूचना जारी होने के तुरंत बाद जहां चुनाव होने हैं, वहां आदर्ष आचार संहिता लागू हो जाती है। यह सभी उम्मीदवारों, राजनीतिक दलों तथा संबंधित राज्य सरकारों पर तो लागू होती ही है, साथ ही संबंधित राज्य के लिये केंद्र सरकार पर भी लागू होती है। संबंधी मामलों को तेजी से निपटाने का जाता है। इस संदर्भ में आदर्श आचार संहिता का उद्देश्य सभी राजनीतिक दलों के लिए बराबरी का समान स्तर उपलब्ध कराना प्रचार, अभियान को निष्पक्ष तथा स्वस्थ्य रखना, दलों के बीच झगड़ों तथा विवादों को टालना है।

छपास और दिखास के स्वगढ़ित मापदंड

जिन चर्चित परन्तु विवादित सांसदों को इसबार पार्टी ने प्रयाशी नहीं बनाया है उनमें भोपाल की सांसद प्रज्ञा ठाकुर, उत्तरा कन्नड़ा के सांसद व पूर्व केंद्रीय मंत्री अनंत कुमार हेगड़े, दक्षिणी दिल्ली के सांसद रमेश बिधूड़ी तथा पश्चिमी दिल्ली के सांसद परवेश सिंह वर्मा जैसे नाम शामिल हैं। जबकि गाजियाबाद से सांसद केन्द्रीय मंत्री जनरल वीके सिंह, बाराबंकी के सांसद उपेन्द्र रावत, बदायूं से स्वामी प्रसाद मौर्य की बेटी संघमित्रा मौर्य, कानपुर नगर सीट से सत्यदेव पचौरी केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, गुजरात के वडोदरा से बीजेपी सांसद रंजनबेन भट्ट, साबरकांठा से भीखाजी दुधाजी ठाकोर, हजारी बाग के सांसद जयंत सिन्हा जैसे और भी कई नेता हैं जो किसी न किसी कारणवश स्वयं चुनाव लड़ना ही नहीं चाहते। जिन सांसदों के टिकट काटे गए हैं उनमें कई विवादित चेहरों पर यह चर्चा छिड़ी है कि खांटी हिंदुत्ववाद की राजनीति पर विश्वास करने वाली तथा इसी एजेंडे पर चलते हुये सफलता की मंजिलें तय करने वाली भाजपा ने आखिर उन सांसदों का टिकट क्यों काट दिया जो पार्टी के ही एजेंडे को समय समय पर आगे बढ़ाते हुये मुखरित होकर अपनी बात कहते रहे हैं ? उदाहरण के तौर पर प्रज्ञा ठाकुर को 2019 में जिस समय भाजपा ने मध्यप्रदेश के भोपाल की सीहोर लोकसभा क्षेत्र से अपना प्रत्याशी बनाया था उससे पूर्व वे मालेगांव आतंकी घटनाओं के लिए जेल जा चुकी थीं तथा चुनाव के समय जमानत पर थीं। उनकी यही उपलब्धि उनकी लोकप्रियता का कारन बनी। चुनाव जीतने के बाद एक के बाद एक कर उन्होंने कई ऐसे बयान दिये जिससे पार्टी की किरकिरी होने लगी। कभी गांधी के विरुद्ध बोलना तो कभी गाँधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे को देशभक्त बताना, कभी शहीद हेमंत करकरे को श्राप देने जैसी शर्मनाक बात कहना तो कभी हिन्दू समाज के लोगों को चाकू तेज करवाकर घरों में रखने की सलाह देना

तनवीर जाफरी
लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं स्तम्भकार हैं

आगामी लोकसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी ने अपने कई पूर्व सांसदों को पुनः पार्टी प्रत्याशी नहीं बनाया। यदि आंकड़ों के हिसाब से देखा जाए तो बीजेपी ने अभी तक लगभग 34 प्रतिशत वर्तमान सांसदों के टिकट काटे हैं। कहा जा रहा है बीजेपी ने यह कदम सत्ता विरोधी लहर से बचने के लिए उठाया है। जिन चर्चित परन्तु विवादित सांसदों को इसबार पार्टी ने प्रयाशी नहीं बनाया है उनमें भोपाल की सांसद प्रज्ञा ठाकुर, उत्तरा कन्नड़ा के सांसद व पूर्व केंद्रीय मंत्री अनंत कुमार हेगड़े, दक्षिणी दिल्ली के सांसद रमेश बिधूड़ी तथा पश्चिमी दिल्ली के सांसद परवेश सिंह वर्मा जैसे नाम शामिल हैं। जबकि गाजियाबाद से सांसद केन्द्रीय मंत्री जनरल वीके सिंह, बाराबंकी के सांसद उपेन्द्र रावत, बदायूं से स्वामी प्रसाद मौर्य की बेटी संघमित्रा मौर्य, कानपुर नगर सीट से सत्यदेव पचौरी केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, गुजरात के वडोदरा से बीजेपी सांसद रंजनबेन भट्ट, साबरकांठा से भीखाजी दुधाजी ठाकोर, हजारी बाग के सांसद जयंत सिन्हा जैसे और भी कई नेता हैं जो किसी न किसी कारणवश स्वयं चुनाव लड़ना ही नहीं चाहते। जिन सांसदों के टिकट काटे गए हैं उनमें कई विवादित चेहरों पर यह चर्चा छिड़ी है कि खांटी हिंदुत्ववाद की राजनीति पर विश्वास करने वाली तथा इसी एजेंडे पर चलते हुये सफलता की मंजिलें तय करने वाली भाजपा ने आखिर उन सांसदों का टिकट क्यों काट दिया जो पार्टी के ही एजेंडे को समय समय पर आगे बढ़ाते हुये मुखरित होकर अपनी बात कहते रहे हैं ?

उदाहरण के तौर पर प्रज्ञा ठाकुर को 2019 में जिस समय भाजपा ने मध्यप्रदेश के भोपाल की सीहोर लोकसभा क्षेत्र से अपना प्रत्याशी बनाया था उससे पूर्व वे मालेगांव आतंकी घटनाओं के लिए जेल जा चुकी थीं तथा चुनाव के समय जमानत पर थीं। उनकी यही उपलब्धि उनकी लोकप्रियता का कारन बनी। चुनाव जीतने के बाद एक के बाद एक कर उन्होंने कई ऐसे बयान दिये जिससे पार्टी की किरकिरी होने लगी। कभी गांधी के विरुद्ध बोलना तो कभी गाँधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे को देशभक्त बताना, कभी शहीद हेमंत करकरे को श्राप देने जैसी शर्मनाक बात कहना तो कभी हिन्दू समाज के लोगों को चाकू तेज करवाकर घरों में रखने की सलाह देना, ऐसी कई बातें थीं जो विवादित व आपत्तिजनक तो जरूर होती थीं परन्तु देश में बढ़ते वर्तमान साम्प्रदायिक वैमनस्यपूर्ण वातावरण में प्रज्ञा ठाकुर जैसे कट्टरवादी लोगों को लोकप्रियता व प्रसिद्धि भी दिलाती थीं। ऐसा ही एक नाम अनंत कुमार हेगड़े का भी है। जन्म से ही यह संघ संस्कारी हैं लिहाजा यह माना जा सकता है कि इनके मुंह से निकले हर बोल संघ की विचारधारा का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। यह मनुस्मृति लागू करने की बात खुलकर करते रहे हैं। संविधान से धर्मनिरपेक्ष शब्द हटाने के लिए संविधान में संशोधन की बात करते हैं। हेगड़े ताज महल को मूल रूप से एक शिव मंदिर और ताज महल को तेजो महालय बताते फिरते हैं। हेगड़े न केवल राहुल गांधी को कांग्रेस प्रयोगशाला में पाया जाने वाला हाइब्रिड उत्पाद बता चुके हैं बल्कि राहुल को यह भी कह चुके हैं कि राहुल गांधी मुस्लिम पिता और ईसाई मां से पैदा होने के बावजूद ब्राह्मण होने का दावा करते हैं। सत्ता के अहंकार के नशे में चूर हेगड़े ने एक पूर्व आईएएस अधिकारी एस. शशिकांत सेंथिल को केवल गद्दार ही नहीं कहा था बल्कि उन्हें पाकिस्तान जाने की सलाह भी दे डाली थी। हेगड़े की बदजुबानी व उनके संघी संस्कार का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि वे महात्मा गांधी के नेतृत्व वाली आजादी की लड़ाई को महज एक नाटक मानते हैं। वे गांधी को महात्मा भी नहीं मानते साथ ही यह संगीन आरोप भी लगाते हैं कि भारत में स्वतंत्रता आंदोलन अंग्रेजों की सहमति और समर्थन से चलाया गया था। कुछ समय पूर्व ही हेगड़े भाजपा द्वारा 400 सीटें जितने के दावे की वजह संविधान संशोधन कर मनुस्मृति लागू करना बता चुके हैं। इसी तरह दक्षिणी दिल्ली के जिस सांसद रमेश बिधूड़ी का टिकट कटा है ये वही हैं जिन्होंने लोकसभा में अमरोहा के संसद दानिश अली के विरुद्ध धर्म आधारित अपमानजनक टिप्पणी भी की थी और उन्हें धमकाया भी था। अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में देश को बदनाम करने वाली इस घटना ने सुर्खियां बटोरी थीं। जबकि पश्चिमी दिल्ली के सांसद परवेश सिंह वर्मा भी वह नेता हैं जिन्होंने शाहीन बाग आंदोलन के समय बेहद घटिया व अपमानजनक बातें की थीं। परन्तु मौजूदा बढ़ते साम्प्रदायिक राजनैतिक रुझान के अनुसार इन सभी नेताओं का कद इनकी विवादित टिप्पणियों से जरूर ऊंचा हुआ भले ही इनकी पार्टी को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शर्मिन्दिगी का सामना क्यों न करना पड़ा हो। उपरोक्त नेताओं के विवादित बोल और इसके चलते इन्हें मिलने वाली शोहरत के सन्दर्भ में अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 25 मई 2019 को दूसरी बार चुनकर आने के बाद अपने नवनिर्वाचित सांसदों को दिया गया सफलता का मोदी मंत्र जरूर याद करिये जब उन्होंने कहा था कि यदि कुछ करना है तो छपास और दिखास से बचें। अखबार में छपने और टीवी पर दिखने से बचें। नेता कम, शिक्षक अधिक नजर आयें। केवल सांसदों को ही नहीं बल्कि 2020 में सिविल सर्विसेज प्रोबेशनर्स को भी प्रधानमंत्री मोदी दिखास और छपास रोगों से दूर रहने की सलाह दे चुके हैं।

सवाल यह है कि क्या प्रज्ञा ठाकुर, अनंत कुमार हेगड़े, रमेश बिधूड़ी, व परवेश सिंह वर्मा जैसे लोगों का टिकट उनके अनर्गल बयानों की वजह से काटा गया ? यदि इसे मापदंड माना जाये तो अनुराग ठाकुर का टिकट क्यों नहीं काटा गया जिसने ह्यगोली मारो सालो को जैसा नारा दिया था ? फिर बेंगलुरु दक्षिणी से तेजस्वी सूर्या का टिकट क्यों नहीं काटा गया जिनके विवादित बयानों से मध्य एशिया के कई अरब देश भारत को अपना विरोध दर्ज करा चुके हैं? दरअसल किसी को पार्टी प्रत्याशी बनाने या न बनाने का यह कोई निर्धारित फामूर्ला है ही नहीं। स्वयं नरेंद्र मोदी भी कई अवसरों पर अत्यंत अमर्यादित व स्तरहीन टिप्पणियां करते सुने जा चुके हैं। कभी मोदी 50 करोड़ की गर्ल फ्रेंड कहते सुने गये तो कभी कांग्रेस की विधवा कभी ह्यशमशान कब्रिस्तान तो कभी दीदी ओ दीदी तो कभी ह्यइनकी पहचान कपड़ों से होती है ह्य, और न जाने क्या क्या। प्रधानमंत्री के स्तर की कोई भाषा नहीं है फिर भी उनके इन विवादित बयानों से उन्हें दिखास और छपास दोनों खूब मिली। तो क्या प्रधानमंत्री मोदी ने दिखास और छपास को केवल अपने लिये सर्वाधिकार सुरक्षित कर लिया है या विवादित बयान देने वाले अपने कई नेताओं के टिकट काट कर शेष नेताओं को यह सन्देश देने की कोशिश है कि दिखास और छपास की रेस में वे आगे न रहें बल्कि इसपर पहला अधिकार केवल उन्हीं का है और यह भी कि विवादित बयान देने वाले किस नेता को मुआफ करना है और किसे नहीं यह निर्धारित करना भी उन्हीं का काम है? छपास और दिखास के इस तरह के स्वगढ़ित मापदंड देखकर तो यही कहा जा सकता है।

भाजपा में शामिल होने वालों की हुयी किरकिरी

भाजपा से निष्कासित नेताओं की घर वापसी मजाक का पात्र बन रही है। गत दिनो इसी तरह का नजारा भाजपा कार्यालय में देखने को मिला। जहां सीकर, झुंझुनू से आए नेता और कार्यकताओं को चार घंटे इंतजार के बाद भी भाजपा में ज्वाइनिंग नहीं हो पाई। उन्हे बैरंग ही अपने घर लौटना पड़ा। सीकर जिले के फतेहपुर से पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा टिकट नहीं मिलने पर निर्दलिय चुनाव लड़ने वाने पूर्व विधायक नन्दकिशोर महरिया अपने समथकों को लेकर भाजपा कार्यालय में घर वापसी करने आये थे। उन्ही की तरह फतेहपुर नगर पालिका के पूर्व चैयरमैन मधूसुदन भिंडा, झुंझुनू से निर्दलिय चुनाव लड़ने वाले राजेन्द्र भाम्भू, पिलानी से निर्दलिय चुनाव लड़ने वाले कैलाश मेघवाल अपने काफी समर्थकों के साथ भाजपा में शामिल होने आये थे। भाजपा कार्यालय में चार घंटे तक इंतजार करवाने के बाद भी उनको कियी ने पार्टी की सदस्यता नहीं दिलवायी तो मजबूरन उन्हे भाजपा में शामिल हुये बिना ही बैरंग अपने घर लौटना पड़ा। इस घटना पर कई नेताओं ने अपने अपमान पर भाजपा नेताओं को खरी–खरी भी सुनाई। चर्चा है कि इस घटनाक्रम से पहले सभी नेताओ ने चार घंटे तक नरेन्द्र मोदी के जयकारे भी लगवाये गये। मगर फिर भी इन्हे भाजपा में शामिल नहीं किया गया। मीडिया से बात करते हुए नंदकिशोर महरिया ने कहा कि छात्र जीवन से ही वह एबीवीपी से जुड़े रहें हैं।

रमेश सर्राफ धमोरा
लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार हैं

इन दिनो बीजेपी में कांग्रेस सहित अन्य राजनीतिक दलों से आने वाले नेताओं को शामिल करने का सिलसिला लगातार जारी है। दूसरे दलों के दागी नेताओं को भी भाजपा में दनादन शामिल कर उन्हे दाग मुक्त किया जा रहा है। लेकिन हाल ही में भाजपा के जयपुर मुख्यालय पर एक अजीब ही नजारा देखने को मिला जिसे देखकर भाजपा में शामिल होने वाले नेताओं की किरकिरी हो रही है। भाजपा से निष्कासित नेताओं की घर वापसी मजाक का पात्र बन रही है। गत दिनो इसी तरह का नजारा भाजपा कार्यालय में देखने को मिला। जहां सीकर, झुंझुनू से आए नेता और कार्यकताओं को चार घंटे इंतजार के बाद भी भाजपा में ज्वाइनिंग नहीं हो पाई। उन्हे बैरंग ही अपने घर लौटना पड़ा। सीकर जिले के फतेहपुर से पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा टिकट नहीं मिलने पर निर्दलिय चुनाव लड़ने वाने पूर्व विधायक नन्दकिशोर महरिया अपने समथकों को लेकर भाजपा कार्यालय में घर वापसी करने आये थे। उन्ही की तरह फतेहपुर नगर पालिका के पूर्व चैयरमैन मधूसुदन भिंडा, झुंझुनू से निर्दलिय चुनाव लड़ने वाले राजेन्द्र भाम्भू, पिलानी से निर्दलिय चुनाव लड़ने वाले कैलाश मेघवाल अपने काफी समर्थकों के साथ भाजपा में शामिल होने आये थे। भाजपा कार्यालय में चार घंटे तक इंतजार करवाने के बाद भी उनको कियी ने पार्टी की सदस्यता नहीं दिलवायी तो मजबूरन उन्हे भाजपा में शामिल हुये बिना ही बैरंग अपने घर लौटना पड़ा। इस घटना पर कई नेताओं ने अपने अपमान पर भाजपा नेताओं को खरी-खरी भी सुनाई। चर्चा है कि इस घटनाक्रम से पहले सभी नेताओ ने चार घंटे तक नरेन्द्र मोदी के जयकारे भी लगवाये गये। मगर फिर भी इन्हे भाजपा में शामिल नहीं किया गया। मीडिया से बात करते हुए नंदकिशोर महरिया ने कहा कि छात्र जीवन से ही वह एबीवीपी से जुड़े रहें हैं। उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि भी भाजपा की रही है। उनके बड़े भाई सुभाष महरिया भी तीन बार भारतीय जनता पार्टी से सांसद व बाजपेयी सरकार में मंत्री रहे हैं। वो खुद भी 2013 में फतेहपुर से निर्दलीय विधायक बने और उसके बाद भी विधानसभा में भारतीय जनता पार्टी की नीति के साथ रहे। उन्होंने बताया कि 2018 व 2023 में पार्टी से टिकट मांगा था लेकिन किसी कारण से नहीं मिला। भावनाओं में आकर निर्दलीय चुनाव लड़ा लेकिन अब भी पार्टी से जुड़ाव है। ऐसे में भाजपा का दमन थामने आए हैं। 2023 विधानसभा चुनाव में फतेहपुर सीट से नन्द किशोर महरिया ने जेजेपी पार्टी से ताल ठोकी थी। उनके प्रचार अभियान में जेजेपी और हरियाणा के चौटाला परिवार के दिग्गज नेता भी शामिल हुए थे। लेकिन चुनाव नतीजों में वे तीसरे नंबर पर रहे थे। इससे पहले नन्द किशोर महरिया 2003 और 2008 में फतेहपुर से भाजपा के टिकट पर चुनाव लड़ चुके हैं। 2013 में टिकट नहीं मिलने पर निर्दलीय चुनाव लड़कर विधायक बने थे। झुंझुनू के राजेंद्र भांभू ने कहा कि विचारधारा से हम शुरू से ही संघ पृष्ठभूमि के लोग हैं। राष्ट्रवाद हमारे अंदर कूट-कूट कर भरा हुआ है.। विधानसभा चुनाव में कुछ बातों को लेकर पार्टी से बगावत की थी। एक व्यक्ति विशेष को हमने स्वीकार नहीं किया। इसलिए निर्दलीय चुनाव लड़ने का कदम उठाना पड़ा। हालांकि वैचारिक रूप से भारतीय जनता पार्टी से रंगे बसे हैं इसलिए घर वापसी के लिए आए हैं। भाम्भू 2018 में भाजपा टिकट पर झुंझुनू से विधानसभा चुनाव लड़ कर हार चुके थे। वहीं पिलानी के कैलाश मेघवाल ने कहा कि वो पार्टी के समर्पित कार्यकर्ता रहे हैं। काफी सालों से पार्टी से जुड़े हुए हैं। लेकिन किसी परिस्थितियों के चलते 2023 में विधानसभा से टिकट कट गया। इसके चलते निर्दलीय चुनाव लड़ना पड़ा लेकिन इस गलती को मैंने भी एहसास किया। अब फिर से पार्टी के साथ जुड़ने का फैसला किया। इस बात की खुशी है कि पार्टी ने 6 साल की बजाय 3 महीने में ही घर वापसी का मौका दिया है। कैलाश मेघवाल भाजपा से प्रधान रह चुके हैं तथा 2018 में भाजपा टिकट पर पिलानी सीट से चुनाव लड़ कर हार चुके हैं। इनके पिता सुन्दरलाल सूरजगढ़ व पिलानी से आठ बार विधायक व मंत्री रह चुके हैं। फतेहपुर से मधूसुदन भिंडा के पिता फूलचंद भिंडा भाजपा से विधायक रह चुके हैं। दरअसल, राजेंद्र भांभू, कैलाश मेघवाल, मधूसुदन भिंडा और नंदकिशोर महरिया को 2023 के राजस्थान विधानसभा चुनाव में भाजपा से टिकट नहीं मिला था। इस पर चारों ने बगावती तेवर अपनाते हुए निर्दलीय चुनाव लड़ा। नंदकिशोर महरिया व मधूसुदन भिंडा ने फतेहपुर से राजेंद्र भांभू ने झुंझुनू और कैलाश मेघवाल ने पिलानी सीट से भाजपा के खिलाफ चुनाव लड़ा। पार्टी के खिलाफ जाकर चुनाव लड़ने वाले राजेंद्र भांभू और कैलाश मेघवाल को पार्टी ने 6 साल के लिए निष्कासित कर दिया था।

भाजपा में शामिल होने वाले नेताओं को पार्टी में शामिल नहीं किये जाने के अलग-अलग कारण बताये जा रहें हैं। लोगों का कहना है कि जिन्होने पार्टी टिकट पर चुनाव लड़ा था उनके विरोध के चलते इनकी घर वापसी नहीं हो पायी। वहीं कुछ लोगों का मानना है कि भाजपा हर किसी को शामिल कर रही है। ऐसे में इनको इंतजार करवा कर खाली हाथ घर भेजने के पीछे पार्टी से जुड़े किसी बड़े नेता का हाथ बताया जा रहा है। बहरहाल इनके साथ चैबे जी छब्बे जी बनने के चक्कर में दुबे जी बन गये वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। इस घटना के बाद भाजपा में शामिल होने वाले विशेष सतर्कता बरतने लगे हैं कि कहीं उनके साथ भी ऐसा खेला ना हो जाये।

सरकार रूपी रोटी को उलटते-पलटते रहें

रघु ठाकुर

2024 के लोकसभा चुनाव देश के लिये विशेष महत्व और चिंता के चुनाव है। जहां एक तरफ देश का एक बौद्धिक हिस्सा चुनाव के बाद की संभावनाओं को लेकर आशंका व्यक्त कर रहा है तो वहीं दूसरी ओर देश के ग्रामीण और आम आदमी प्रधानमंत्री के प्रति उत्साह से सराबोर है। विशेषतरू राम मंदिर के निर्माण, फिर प्राण प्रतिष्ठा, फिर अबूधावी में स्वामी नारायण मंदिर का शिलान्यास और अब बनारस की ज्ञानव्यापी और मथुरा के श्रीकृष्ण मंदिर को लेकर एक जुनूनी वातावरण जैसा है। देश के बौद्धिक जगत के एक बड़े हिस्से में जो आशंकायें हैं वह हो सकता है कुछ कि राजनैतिक प्रतिद्वंदिता की वजह से भी हों या सत्ता हासिल करने के लिये पिछले कुछ समय से जिस प्रकार के आरोप-प्रत्यारोप चुनावी बहस का आधार बनाये जाते हैं उन्हें देखते हुए इन आशंकाओं के पूर्वाग्रह होने के आरोप को भी एकदम नकारा नहीं जा सकता। परंतु कुछ समय से और विशेषतरू मप्र, छग और राजस्थान के विधानसभा चुनाव में भाजपा की कार्य पद्धति में जो परिवर्तन दिख रहे हैं वे कुछ आशंकाओं को सिद्ध तो करते हैं। वैसे तो पिछले लगभग आजादी के बाद से ही राज्यों के मुख्यमंत्रियों के चयन में देश के सत्ताधारी दल के केंद्रीय नेतृत्व और प्रधानमंत्री का निर्णायक हस्तक्षेप रहा है। परंतु पिछले 55 वर्षों से यानि 1971 में श्रीमती इंदिरा गांधी के बहुमत से जीत जाने के बाद श्हाईकमान्य के नाम से मुख्यमंत्री नामजदगी की परंपरा शुरू हुई और यह बीमारी यहां तक पहुंची कि चुनाव के बाद पार्टियों के विधायक दल चाहे मुख्यमंत्री के पद का चुनाव हो या नेता प्रतिपक्ष का चयन हो, चयन करने के लिये स्वतंत्र नहीं होते तथा एक लाइन का प्रस्ताव पारित करते हैं कि हाईकमान को अधिकार दिया जाता है। यह एक प्रकार से दलों में लोकतांत्रिक प्रणाली का समापन और चरम व्यक्तिवाद और केंद्रीयकरण का उदभव था। यह चलन कांग्रेस के अलावा क्षेत्रीय पार्टियों में भी रहा क्योंकि क्षेत्रीय पार्टियों के राज्य प्रमुख जो होते हैं वे स्वयंभू सर्वेसर्वा होते हैं। हालांकि भाजपा में यह चलन एकदम उस रूप में शुरू नहीं हुआ था जिस रूप में कांग्रेस में आया था। और वहाँ एक स्तर पर विधायकों की राय को भी जाना जाता था, जो संघ के लोग संगठन मंत्री होते थे वे भी अघोषित रायसुमारी विधायकों में करते थे और इन सब सूचनाओं के आधार पर केंद्रीय नेतृत्व मुख्यमंत्री के पद का चयन करता था। परंतु इन तीन राज्यों के चुनाव में अप्रत्याशित और विशाल बहुमत की जीत ने भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व और विशेषतरू प्रधानमंत्री को एक छत्र शक्तिशाली बना दिया है। तथा केंद्रीयकरण का चरम रूप देखने को मिल रहा है। इन तीनों राज्यों में मुख्यमंत्रियों की नामजदगियाँ बगैर किसी रायशुमारी के सीधे केंद्रीय नेतृत्व ने की है और लोकतांत्रिक प्रक्रिया को दिखाने का प्रयास भी नहीं किया। विधायक दलों की बैठक में जो केंद्रीय पर्यवेक्षक भेजे गये उन्होंने विधायकों को एक पर्ची दिखाकर बता दिया कि यह केंद्र का निर्णय है और विधायकों ने बिना चू-चपड़ के पर्ची के आदेश को शिरोधार्य किया। पर्ची से मुख्यमंत्री के जन्म की यह नई परिपाटी जो भाजपा में शुरू हुई है यह लोकतांत्रिक तो नहीं ही है इसके साथ ही एक खतरनाक केंद्रीयकरण की भी शुरूआत है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संचालक और उनकी टीम की क्या भूमिका है मैं नहीं जानता, परंतु इसके पहले तक विधायक दलों के चुनाव में जो भूमिका संगठन मंत्रियों के माध्यम से संघ की सुनने या जानकारी में आती थी वह इस बार नहीं लग रही है। हालांकि संघ का शिक्षण व संस्कार भी एक अंधानुकरण का है, याने जिस प्रकार एक गड़रिया समूचे भेड़ों के समूह को हाँकता है और वे उसका आदेश मानकर चलती हैं वही अनुशासन की परिपाटी संघ की रही है। एक राजनैतिक दल के रूप में जनसंघ व भाजपा इस परिपाटी से अभी तक कम से कम दिखावे में मुक्त थी परंतु अब वह दिखावे का हिस्सा भी भाजपा ने छोड़ दिया। हालांकि इसका एक अच्छा भी परिणाम हुआ है कि लंबे समय तक मुख्यमंत्रियों के पदों पर बैठे रहे जो अपना गुट या समर्थकों अथवा कृपा वालों का गुट बनाकर स्थाई जैसे हो गये थे, उनके हाथ से सत्ता छिन गई।

संक्षिप्त खबरें

बिना चालन के ओवरलोड बालू ले जा रहे तीन हाइवा जब्त, चालक गिरफ्तार

परसा। शीतलपुर-परसा मुख्य मार्ग पर हाइस्कूल चौक से जिला खान निरिक्षक पदाधिकारी अंजनी कुमार के द्वारा परसा पुलिस सहयोग से बिना चलना ओवरलोड बालू ले जा रहे तीन हाइवा ट्रक को जब्त कर लिया.इस दौरान तीन चालक को भी गिरफ्तार कर लिया.खान निरिक्षक पदाधिकारी अंजनी कुमार खनन विभाग के तहत गाड़ी मालिक व चालक पर प्राथमिकी दर्ज की गईं.इस संबंध में थानाध्यक्ष सुनील कुमार ने बताया की बिना चालन व ओवरलोड बालू जाया जा रहा था. इसी क्रम में परसा हाई स्कूल चौक से तीन हाइवा ट्रक को जब्त कर चालक को गिरफ्तार कर लिया गया. एवं खान निरिक्षक पदाधिकारी द्वारा चालक व ट्रक मालिक पर प्राथमिकी कर ली गईं है .तीनो चालक को रविवार को जेल भेजा जाएगा।

माँझी के मटियार में तीन घरों में लगी आग, बकरी समेत अन्य सामग्री जलकर राख

प्रात : किरण, संवाददाता

माँझी। माँझी थाना क्षेत्र के मटियार गाँव में रविवार को गति आगलगी की घटना में तीन घरों में रखा सारा सामान जलकर राख हो गया जबकि उक्त घटना में एक बकरी जिन्दा जल गई। मौके पर बड़ी संख्या में पहुँचे ग्रामीणों के अलावा चार अग्निशमन वाहन लगभग दो घण्टे में पूरी तरह आग बुझाने में कामयाब हुई। सूचना पाकर पहुँचे माँझी के सीओ सौरभ रंजन, बीडीओ रंजीत सिंह व थानाध्यक्ष अमित कुमार राम ने आग बुझाने में जुटे ग्रामीणों का आभार जताया। मौके पर बड़ी संख्या में पुलिस बल के जवान आदि भी मौजूद रहे। घटना के सम्बन्ध में ग्रामीणों ने बताया कि अचानक एक झोपड़ी में आग लगी और देखते ही देखते आस पास के तीनों घरों में आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। लोगों ने बताया कि घर के अंदर रखे साइकिल, सिलाई मशीन, गहने, बैंक के कागजात व नगद आदि भी जलकर राख हो गए। बताते चलें कि अग्नि पीड़ित परिवार के लोग सुबह नाश्ता करके सरयु नदी के उस पार खेत की कटनी करने गए हुए थे तथा सूचना पाकर परिजन वापस लौट कर आग बुझाने में जुट गए। ग्रामीणों ने बताया कि पीड़ितों के पास जीवन बसर करने के लिए तक कुछ नही बचा है। घर में रखे अनाज पानी कपड़े व जेवर आदि सब कुछ जल कर राख हो गए। पीड़ित त्रिलोकी बीन, धनेश बीन, रमेश बीन, नारद साह, नन्हे साह, बाबू साह, केवनचन साह, निर्मल माली समेत उनके परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो गया है। आग बुझाने में लगे लोगों ने बताया कि बगल में खड़ा पम्पिंग सेट तथा नलजल की टँकी का मशीन भी धोखा दे गया। पास में मौजूद महज एक चापाकल के सहारे ही लोग आग बुझाने में जुटे रहे। मौके पर पहुँचे सीओ सौरभ रंजन ने बताया कि सोमवार को पीड़ितों के बीच सरकारी सहायता राशि वितरित की जाएगी।

बाजितपुर में आधी रात को एक घर से लाखों की चोरी, परिवार वालों को नहीं लगी भनक

प्रात : किरण, संवाददाता

परसा : थाना क्षेत्र के सगुनी पंचायत स्थित बाजितपुर गांव में शुक्रवार की देर रात एक घर में बेखौफ चोरों ने घर से लाखों की चोरी कर ली है। चोर सारी कीमती सामान ले कर चंपत हो गए। पीड़ित बाजितपुर गांव निवासी स्व दिनेश सिंह के पुत्र हैप्पी कुमार सिंह के घर से लाखों की चोरी हुई है । दिए आवेदन में हैप्पी कुमार सिंह ने कहा कि शुक्रवार की रात हम सभी परिवार घर में खाना खाकर सोए गए थे जब सुबह 4 बजे उठा तो देखा कि घर के सभी चार कमरे का ताला खुला हुआ है और घर के अंदर रखा सारा सामान बिखरा पड़ा हुआ है। गोदरेज में रखे सोने और चांदी के जेवरात गायब है। त्वरित करवाई करते हुए पुलिस दो लोगो को हिरासत में लेकर कड़ी पूछताछ कर रही है ।

खैरा पुलिस ने वाहन जांच के दौरान अपाची बाइक के साथ दो युवक को किया गिरफ्तार

प्रात : किरण, संवाददाता

नगरा। खैरा थाना क्षेत्र के कृष्णा चौक एसएसटी प्वाइंट से खैरा पुलिस ने वाहन जांच के दौरान चोरी की अपाची बाइक के साथ दो युवकों को गिरफ्तार कर लिया.उक्त गिरफ्तार युवक भोजपुर जिला के अगियाव थाना क्षेत्र के लहरपा गांव निवासी अभय सिंह का पुत्र अंकित कुमार तथा स्व. राम प्रवेश सिंह का पुत्र रणबीर राज बताया जाता है.वहीं इस संबंध में खैरा थानाध्यक्ष अनिमा राणा ने जानकारी देते हुए बताया की लोकसभा चुनाव को लेकर सघन वाहन जांच अभियान चलाया जा रहा है,वाहन जांच के दौरान दोनो युवक उक्त अपाची बाइक पर सवार होकर आ रहे थे ,दोनो युवकों से पूछ ताछ कर अपाची बाइक की कागजात की मांग की गई ,लेकिन उक्त युवकों द्वारा कोई भी बाइक की कागजात प्रस्तुत नही किया गया,जिसके बाद बाइक को जब्त कर दोनो युवक को जेल भेज दिया गया.तथा गिरफ्तार युवकों की जिला में अन्य इतिहास खंगाली जा रही है. की इन दोनो युवकों पर अपराधिक इतिहास है या नही,दोनो युवक द्वारा कोई भी स्पष्ट जवाब नही दिया गया की भोजपुर जिले से खैरा होकर किस जगह जा रहे थे। खैरा थाना के पीटीसी से एएसआई बनाए गए बबलू कुमार नगरा ।खैरा थाना के एक पीटीसी को एएसआई के पद पर प्रोन्नति मिली है. खैरा थानाध्यक्ष अनिमा राणा ने बताया कि बबलू कुमार पहले पीटीसी थे. अब उनका प्रमोशन एएसआई यानि सहायक अवर निरीक्षक पद पर किया गया है.उन्होंने कहा की अब उक्त एएसआई की जिम्मेदारी भी बढ़ गई है अपनी पूरी जिम्मेदारी के साथ ड्यूटी निभाये,वहीं पीटीसी से प्रमोशन हुए एएसआई बनाए जाने पर खैरा थाना के पुलिस पदाधिकारी व कर्मियों ने बधाई दी है।

लोकसभा चुनाव को लेकर एसडीओ ने मढ़ौरा के कई बूथो का किया निरीक्षण

प्रात : किरण, संवाददाता

मढ़ौरा विधानसभा क्षेत्र के आधा दर्जन से अधिक संवेदनशील बूथों का एसडीओ डॉक्टर प्रेरणा सिंह ने किया निरीक्षण। इस दौरान एसडीओ के नेतृत्व में नगरा प्रखंड के तुजारपुर स्थित बूथ संख्या 225 उत्क्रमित मध्य विद्यालय पटेरा बूथ संख्या 226 यादव टोला उच्च विद्यालय खुदाईबाग बूथ संख्या 279 व 280 और उत्क्रमित मध्य विद्यालय जगदीशपुर उत्तर भाग और दक्षिण भाग बूथ संख्या 285 और 286 का भी लिया जाएजा। एसडीओ के साथ सभी पदाधिकारीयो ने स्थानीय लोगों से पूर्व चुनाव से संबंधित स्थिति को जाना और बूथ पर होने वाली घटनाओं से अवगत करते हुए कई सारी जानकारियां भी दी। इस मौके पर मढ़ौरा एसडीओ डॉक्टर प्रेरणा सिंह के अलावे खैरा थाना अध्यक्ष एनिमा राणा वीडियो प्रशांत कुमार इमो सीडीपीओ सहित कई पदाधिकारी मौजूद थे।

एसडीएस गर्ल्स स्कूल की तनुश्री 445अंको के साथ बनी टापर

प्रात : किरण, संवाददाता

जलालपुरे स्थानीय शंकर दयाल सिंह बालिका उच्च विद्यालय के छात्रा व संवरी पूरी टोला निवासी रिटायर्ड आर्मी जवान अमर कुमार राय एवं गीता देवी की पुत्री तनुश्री ने मैट्रिक बोर्ड परीक्षा मे 445अंक लाकर संयुक्त रूप से प्रखंड टापर बनकर सभी को गौरवान्वित किया है विदित हो कि उसकी दो जुड़वा बहने भी मैट्रिक और इंटरमीडिएट में टॉपर हुई थी आज दोनो बड़ी बहनें अनु और अंजली दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी में पढ़ाई कररही हैं अपनी छात्रा की सफलता पर शंकर दयाल सिंह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्य दिलीप कुमार सिंह ने उसे बधाई देते हुए कुशाग्र बुद्धि का बताया `विद्यालय के सभी शिक्षकों ने उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की और बताया कि तीनों बहनें एक दिन हमारे जिले के साथ-साथ इस देश का नाम रोशन करेंगीवही कोपा स्थित गांधी स्मारक उच्च विद्यालय की छात्रा व कोपा निवासी सुनील प्रसाद व रानी कुमारी की पुत्री आराध्या कुमारी ने भी 445 अंक प्राप्तकर अपने विद्यालय को गौरवान्वित किया हैआराध्या आई आई टी से इंजीनियर बनना चाहती हैवहीं समृध्दि कुमारी पिता प्रभाकर शर्मा ने गांधी स्मारक विद्यालय कोपा से 424अंक प्राप्त किया हैजलालपुर हाई स्कूल के राहुल कुमार पिता मैनेजर राय ने 446 अंक प्राप्त किया हैउसकी उपलब्धि पर विद्यालय की प्राचार्य रीता पाल ने उसे बधाई दी हैवही कोपा स्थित गांधी स्मारक से दीपक यादव पिता रणजीत यादव ने 433अंक प्राप्त किया हैं

मशरक में लगने के साथ बुझ रही है स्ट्रीट लाइटें

प्रात : किरण, संवाददाता

मशरक (सारण)।मशरक नगर पंचायत क्षेत्र में पिछले महीने ही 16 वार्डो में प्रकाश के लिए करोड़ों की लागत से 2 हजार से ज्यादा स्ट्रीट लाइट लगाई गई थी। नगर पंचायत द्वारा लगाए गए स्ट्रीट लाइट लगने को अभी महीने ही बीते हैं कि कुछ लाइटें लगने के कुछ ही दिन बाद खराब होने शुरू हो गए हैं। अधिकांश स्ट्रीट लाइटों के खराब होने से वार्डों में अंधेरा पसर गया है, स्ट्रीट लाइट की खराबी ठीक करने की मांग को लेकर कई वार्डवासी वार्ड पार्षद से शिकायत दर्ज कराते हैं पर कोई भी सुनवाई नहीं हो पाती है। ग्रामीणों ने बताया कि शुरूआत में वार्डों में एक साथ वार्डों में बिजली के पोल पर लाइटे लगीं तो नगर पंचायत का इलाका रात होते ही रौशनी से गुलजार हो जाता था। स्थानीय ग्रामीणों ने बताया कि लगता है कि लाईटे लगाने मे घोर अनियमितता बरती गई है, जिसके चलते गारंटी पीरियड में ही लाइटें खराब हो गई। वही वार्ड पार्षदों ने दबी जुबान से बताया कि स्ट्रीट लाईटे लगाने में जबरदस्त धांधली की गई है । जिसकी जांच पड़ताल कर दी जाए तब अनियमितता का खुलासा हो सकता है। बताया गया कि जब से टेंडर की प्रकिया हुई तब से कौन ठेकेदार इसका टेंडर लिया है पता ही नहीं चल पाया। जबकि नियमानुसार टेंडर में ठेकेदार का नाम और मोबाइल नम्बर स्पष्ट होना चाहिए, वही यदि बिजली के पोल पर ठेकेदार का नम्बर सार्वजनिक रूप से अंकित रहता तो फोन कर मरम्मत कार्य कराया जा सकता है।

न्यायालय कर्मी आज मनाएंगे ब्लैक डे

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा कोर्ट।बिहार राज्य व्यवहार न्यायालय कर्मचारी संघ की कार्यकारिणी की बैठक बिहार राज्य व्यवहार न्यायालय कर्मचारी संघ के अध्यक्ष राजेश्वर तिवारी एवं महामंत्री सत्यार्थ सिंह के संयुक्त अध्यक्षता में हुई। जिसमें बिहार राज्य व्यवहार न्यायालय कर्मचारी संघ द्वारा पुरे बिहार में 1 अप्रैल 2024 को ब्लैक डे के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया है। अध्यक्ष तिवारी ने कहा कि पूर्व में कितने बार माननीय मुख्य न्यायाधीश , उच्च न्यायालय पटना और पटना महानिबंधक को बिहार सरकार के द्वारा माननीय सर्वोच्च न्यायालय एवं माननीय उच्च न्यायालय पटना के आदेश का अनुपालन नहीं करने को लेकर पत्र दिया गया है। परंतु आज तक कोई सरकार के द्वारा व्यवहार न्यायालय के कर्मचारियों के हित में फैसला नहीं दिया गया। जिसको लेकर यह निर्णय लिया गया है। आगे बताया कि 1 अप्रैल 2003 के पूर्व वेतनमान व संगति को छोड़कर अन्य मामलों में जैसे व्यवहार न्यायालय में नियमित समय पर नियुक्ति, पदोन्नति एवं अनुकंपा के आधार पर नियुक्ति नही करने जो पूर्व में नियमित होता था। जिसके कारण असमानता की स्थिति उत्पन्न हो गई है। आज एक कर्मचारी को 4 से 5 पदों का प्रभारी बनाया जा रहा है और समय पर कार्य संपादित नहीं होने पर उन्हें प्रशासनिक दंडित किया जा रहा है। जिसके कारण कर्मचारी मानसिक तनाव मे रह रहे हैं । कुछ कर्मचारी तो कार्य के अधिकता और प्रतिष्ठा बचाने के कारण आत्महत्या करने को भी विवश हो जा रहे है अपने पूर्व के मांगों को को पुर्ण कराने को लेकर बिहार के संपूर्ण व्यवहार न्यायालय के कर्मचारी कल ब्लैक डे मनाएंगे।

सारण रसूलपुर की बेटी पलक बनी बालिका वर्ग की टॉपर

प्रात : किरण, संवाददाता

रसूलपुर। सारण जिले की एकमा प्रखंड की रसूलपुर थाना व पंचायत के धानाडीह गांव की पलक ने 486 अंक लाकर बिहार बोर्ड 2024 की परीक्षा में टॉप श्री में स्थान बना जिला को गौरवान्वित किया है।पलक के पिता राजेश सिंह कोलकाकता में टैक्सी ड्राइवर हैं तो मां सरोज देवी गृहणी हैं।पलक ने सफलता का श्रेय अपने विद्यालय हुस्सेपुर हाइस्कूल,मां भारती सेंट्रल स्कूल संचालक उमाशकर चौबे ,बड़ा भाई छोटू सिंह की प्रेरणा बताया है।पलक के बड़े पापा पत्रकार देवेन्द्र सिंह ,बड़ी मां प्रमिला देवी ,ग्रामीण परशुराम सिंह कहते हैं कि पलक बचपन से ही मेघावी रही है इसकी प्रतिभा से हमारा क्षेत्र का नाम रौशन हो गया है।

सामूहिक जन्मोत्सव और नवनिर्मित वर्ग कक्षा का सारण कमिश्नर ने किया उद्घाटन

मायाजाल से आध्यात्मिक गुरु ही मुक्ति दिला सकते हैं : डॉ एच के वर्मा

● हम जो भी कार्य करते हैं वह ठाकुर की इच्छा से ही कर पाते हैं : श्री सरवणन एम

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा सदर : स्वामी विवेकानंद संघ कोहबरावां आर्य नगर में रविवार को श्री रामकृष्ण देव, मां शारदा ,स्वामी विवेकानंद एवं स्वामी अद्भुतानंद महाराज की सामूहिक जयंती मनाने के साथ-साथ संघ परिसर में नवनिर्मित वर्ग कक्षा का उद्घाटन रविवार को उद्घाटन सारण कमिश्नरी के कमिश्नर सारणन एम के द्वारा किया गया । वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रोफेसर एच के वर्मा ने कहा कि माया जाल से मुक्ति दिलाने का कार्य आध्यात्मिक गुरु का होता है और गुरु को जांच करके ही गुरु बनाना चाहिए। इस वाक्य पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि विवेकानंद जी भी अपने गुरु श्री रामकृष्ण देव की जांच उनके आसन के नीचे रुपए रख करके किए थे । श्री रामकृष्ण देव जी ने ही यह बात विवेकानंद को बताया था कि जब भी गुरु किसी को बनाएं तो गुरु की जांच कर लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि आज का शिष्य यदि गुरु का जांच करें तो गुरु नाराज भी हो जाते हैं। लेकिन पहले के गुरुओं में यह बात नहीं थी। वहीं डॉ उषा वर्मा ने ठाकुर जी पर बोलते हुए कहा कि ठाकुर जी ही सब कुछ हैं और उन्होंने यह भी बताया कि जब रामकृष्ण देव जी समाज सुधार में लगे हुए थे तो उस समय सनातन के लोग विभिन्न देवी देवताओं के पूजा में बटे थे और वे दुर्गा के उपासना करने वाले शिव के उपासक की शिकायत करते थे। इसी तरह अन्य देवी देवता के उपासना करने वाले अन्य देवी देवताओं के उपासक की शिकायत करते थे तो इन सबों को एक करने का कार्य रामकृष्ण देव ने किया।

वहीं मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए सारण के कमिश्नर सरवणन एम ने कहा कि कोई भी कार्य ठाकुर की कृपा से ही होती है। हम कोई काम करते हैं सोते हैं, जागते हैं, गाड़ी में सफर करते हैं तो उन्हीं की कृपा से हो पाती है । मां की भूमिका का महत्व जीवन में बताते हुए श्री सरवणन ने कहा कि लाख मजबूरी हो मुसीबत हो लेकिन यदि मैं यह बात करता हूं कि मेरे पास मेरी मां है तो एक बहुत बड़ी शक्ति मिलती है। उन्होंने यह बात मां शारदा पर बोलते हुए कहा । स्वामी विवेकानंद आश्रम, छपरा के सचिव अतिदेवानंद महाराज ने मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए कहा कि इस ग्रामीण क्षेत्र में संघ के द्वारा पाठशाला खोलकर गरीब एवं असहाय बच्चों को शिक्षा देने का काम किया जा रहा है लेकिन यहां तक पहुंचाने के रास्ते नहीं है। यह गांव आज भी मुख्य सड़क से कटा हुआ है। इस पर सारण कमिश्नर ने आश्वासन दिया कि विकास के जितने भी कार्य हैं बैठकर वार्ता कर इसको किया जाएगा। वहीं संघ के अध्यक्ष हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ राजीव रंजन ने ठाकुर जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। स्वामी विवेकानंद संघ, कोहबरावां के पदाधिकारियों के द्वारा आगत अतिथियों को अंग वस्त्र तथा प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया गया। वहीं स्वामी विवेकानंद संघ, कोहबरावां के द्वारा दिसंबर 2023 में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को सारण कमिश्नर द्वारा पुरस्कृत किया गया। पुरस्कृत होने वालों में अनुष्का कुमारी, नैंसी कुमारी, स्वीटी कुमारी सहित दर्जनों प्रतिभागी सम्मिलित थे। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सदर एस डी ओ संजय कुमार राय, सदर बीडीओ विनोद आनंद,पूर्व शिक्षा उप निदेशक सह हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष ब्रजेंद्र कुमार सिन्हा,डॉक्टर सत्यनारायण प्रसाद स्वामी विवेकानंद संघ आश्रम के अध्यक्ष हृदय रोग विशेषज्ञ डॉक्टर राजीव रंजन ,सचिव अजीत कुमार, उपाध्यक्ष ऋषिकेश पांडेय, उप सचिव विशाल कुमार,कोषाध्यक्ष रोहित कुमार,राधे कृष्ण सिंह, नीरज कुमार सहित आश्रम के सभी पदाधिकारी एवं कर्मचारी शामिल थे मंच का संचालन अनुष्का कुमारी,मनीषा,अंशु,स्वाति ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन संघ के उपाध्यक्ष ऋषिकेश पांडेय के द्वारा किया गया।

पत्रकार के पुत्र ने मैट्रिक में 446 अंक लाकर लहराया परचम

प्रात : किरण, संवाददाता

परसा। बिहार मैट्रिक की परीक्षा की परिणाम जारी होते ही छात्र छात्राओं के बीच कही खुशी कही गम का महौल मन गया।मैट्रिक परीक्षा में परसा थाना क्षेत्र के जमलकी गांव निवासी पत्रकार दीपक कुमार का पुत्र अमन आनंद ने 446 अंक प्राप्त कर माता पिता के साथ प्रखंड तथा विद्यालय का नाम रौशन किया है।वंशी लाल संत लाल हाई स्कूल कोहरा मठिया प्रखंड परसा से पढ़ाई कर सफलता हासिल किया।मैट्रिक की परिणाम मिलते ही पिता दीपक कुमार,माता रेखा देवी,बहन कृति कुमारी,भाई अनुज आनंद ने मिठाई खिलाकर खुशी का इजहार किया।अमन आनंद ने अपनी सफलता का श्रेय माता,पिता तथा शिक्षकों को दिया।आगे बीपीएससी की तैयारी कर यूपीएससी उतीर्ण कर देश की सेवा करने की बातें कही।अमन आनंद की सफलता पर शंभु साह,नंदकिशोर साह,सोहन ठाकुर,मो यूसुफ,पप्पू मिश्रा नरेश सिंह,सनोज साह समेत सैकड़ो लोगो ने बधाई देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना किया।वही सोनहो संचालित हाई इम्पैक्ट एकेडमी में सबसे ज्यादा अंक लाने पर सभी शिक्षकों द्वारा बधाई दिया तथा उज्ज्वल भविष्य की कामना किया। सर मेरा पुत्र का खबर है।लगा दीजिए गा।

शारदा इंग्लिश क्लासेज ने छात्रों को मेडल व स्मृति चिह्न देकर किया सम्मानित

● इंटर परीक्षा में शारदा इंग्लिश क्लासेज के छात्र-छात्राओं ने लहराया परचम

प्रात : किरण, संवाददाता

परसा:-नगर पंचायत परसा बाजार क्षेत्र के बस स्टैंड के समीप संचलित शारदा इंग्लिश क्लासेज द्वारा रविवार को प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें इंटर परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को संस्थान के निदेशक विपिन भरद्वाज द्वारा मेडल,स्मृति चिन्ह देकर और मिठाई खिलाकर खुशी का इजहार किया गया।संस्थान मे 456 अंको के साथ शीर्ष पे रहे सोनहो निवासी नंदकुमार तिवारी के पुत्र प्रिंस कुमार, 431 अंको के साथ बाजितपुर निवासी ओमप्रकाश सिंह के पुत्र आकाश कुमार साथ मे अनेकों छात्र- छात्रा अच्छे अंकों से सफल हुए जिसमे आदित्य,गोलू,आरती, खुशी इत्यादि शामिल है।सफल छात्र छात्राओं का कहना है की अंग्रेजी और हिंदी मे अच्छे अंकों के कारण उन्हे ज्यादा नंबरों के साथ सफलता मिली है।वही छात्रों को प्रोत्साहित करते हुए विपिन भरद्वाज सर ने कहा कि किसी भी क्षेत्र में सफलता हासिल करने के लिये ईमानदारी पूर्वक कठिन परिश्रम की जरूरत होती हैं। पढ़ाई को गम्भीरता से लेने वाले छात्र छात्राएं ही शिक्षा के क्षेत्र में देश दुनिया मे परचम लहराते हैं।

अपराधियों के खिलाफ चलाए गए अभियान में कल 53 अपराधी हुए गिरफ्तार

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा। विधि व्यवस्था को लेकर सारण पुलिस द्वारा जिला भर में की गई कार्रवाई में कुल 53 अभियुक्त को गिरफ्तार करने में सारण पुलिस को कामयाबी मिली है। इस संबंध में पुलिस अधीक्षक कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार गिरफ्तार अभियुक्त में लूट कांड के एक,आर्म्स एक्ट के दो,एसटीएससी एक्ट के दो, हत्या के प्रयास का दो,खनन के 17, उत्पादन के 25,फरार वारंटी एक तथा अन्य कांड के तीन अभियुक्त शामिल है। इसके अलावा 36 वारंट का भी निष्पादन भी किया गया है। पुलिस द्वारा की गई कार्रवाई में देसी शराब 255.6 लीटर, विदेशी शराब 629.57 लीटर जप्त किया गया है। इस अभियान में वाहन चेकिंग के दौरान 108500 नगद जुमार्ना स्वरूप वसुला गया है। इसके अतिरिक्त देसी कट्टा एक, जिंदा कारतूस एक, ट्रक 35, ट्रैक्टर 9, मोटरसाईकिल 5, पिकअप 1, मोबाईल सेट तीन, नाव एक, लोडर वाहन एक, एक-एक चांदी एवं सोना का लॉकेट, चांदी का अंगूठी एक तथा नगद 9010 रुपए भी बरामद किया गया है।

रिविलगंज थाना कांड का फरार अभियुक्त गोलू तिवारी गिरफ्तार

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा। रिविलगंज थाना कांड के फरार चल रहे अभियुक्त गोलू तिवारी को सारण पुलिस ने गिरफ्तार पर जेल भेज दिया है। गोलू तिवारी रिविलगंज थाना कांड संख्या 192/23 का मुख्य अभियुक्त है, जो पिता अशोक तिवारी टेकनिवास गांव का निवासी बताया गया है। गिरफ्तार अभियुक्त का आपराधिक रिकार्ड रहा है, रिविलगंज थाना कांड संख्या 200/23, 185 /21/एवं 189/ 21 का अभियुक्त है। इस आशय की जानकारी पुलिस अधीक्षक कार्यालय के द्वारा दी गई।

अंबेडकर जयंती मानने को लेकर हुई बैठक

प्रात : किरण, संवाददाता

तरैया डॉ.भीमराव अंबेडकर जयंती समारोह मनाने को लेकर अंबेडकर विचार मंच के तत्वाधान में एक बैठक चैनपुर खराटी बाजार पर किया गया।बैठक में 14 अप्रैल को संविधान निमार्ता बाबा साहब डॉ.भीमराव अंबेडकर की जयंती धूमधाम से मनाने की तैयारी पर चर्चा की गई।बैठक में अंबेडकर विचार मंच के अध्यक्ष, सचिव और प्रखंड के सभी पंचायत अध्यक्ष शामिल हुए।जिसमे अंबेडकर विचार मंच के अध्यक्ष देवनाथ राम,सचिव तरैया व्यापार मंडल अध्यक्ष ललन प्रसाद यादव,तरैया मुखिया संघ के अध्यक्ष मुकेश यादव,मुखिया ओम प्रकाश कुमार,मुखिया प्रतिनिधि शैलेंद्र राम,सुभाष कुमार सिद्धार्थ,जितेंद्र कुमार, पंकज कुमार,शंकर राम,सुदेश महरा,लालजीत राम,आनंद मिलन,तेरस कुमार,राज बलम राम,विनय राम,बबलू राम,विनोद राम,शिक्षक कमलेश राम सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

बाबा चौहरमल जयंती पर होगा अखंड अष्टयाम व सांस्कृतिक कार्यक्रम

प्रात : किरण, संवाददाता

डोरीगंज। धार्मिक नगरी चिरांद के बाबा चौहरमल मंदिर में रविवार को राष्ट्रीय बाबा चौहरमल संघर्ष मोर्चा की बैठक आयोजित कर 12मइ को जयन्ति मनाने का निर्णय लिया गया इस संबंध मे संगठ के संयोजक जंग बहादुर माझी ने बताया कि आयोजन के तहत 10 मई को जलभरी 11मई से 24घंटे का अखंड अष्टयाम तथा 12मई को दोपहर से बाबा चौहरमल की पुजा अर्चना तथा रात्री मे सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित की जाएगी। बैठक की अध्यक्षता संगठन के अध्यक्ष बीगन माझी,सचिव रामनाथ माझी, शिवलाल माझी चिरांद के सरपंच अजय माझी,मोहन पासवान,शंकर पासवान,शत्रुघ्न पासवान,अम्बीका माझी सहित जिले के कई सदस्य उपस्थित हुए।

संक्षिप्त खबरें

तीन दिवसीय आचार्य कार्यशाला में मुख्य बिंदुओं पर हुई चर्चा

नावानगर (बक्सर) सरस्वती शिशु विद्या मंदिर सोनवर्षा के परिसर में तीन दिवसीय आचार्य कार्यशाला का आयोजन किया गया।जिसका उद्घाटन विद्यालय प्रबंधकारिणी समिति के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ साह, भोजपुर विभाग के विभाग प्रमुख वीरेंद्र कुमार,समिति सदस्य विश्वकर्मा शर्मा, भूमि दात्री परिवार के आशुतोष कुमार पाण्डेय द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन एवं पुष्पांजलि अर्पित कर किया। कार्यशाला की प्रस्तावना एवं अतिथि परिचय प्रधानाचार्य प्रकाश चंद्र राय राय के द्वारा किया गया।जिसके प्रथम दिन विभाग प्रमुख वीरेन्द्र कुमार की गरिमामय उपस्थिति रही।जबकि विभाग प्रमुख के द्वारा कार्यशाला के उद्देश्य की चर्चा विस्तार से की गयी। इसके साथ ही विद्यालय के सर्वांगीण विकास में सहायक अनेक बिंदुओं पर चर्चा वार्ता हुई।साथ ही भाई बहनों के लिए अध्यापन के समय ध्यान में रखने वाले महत्वपूर्ण तथ्यों को आचार्यो के समक्ष प्रस्तुत कर प्रांत द्वारा निर्धारित आज के सभी विषयों को कार्यशाला में संपादित किया।

अभिभावक शिक्षक संगोष्ठी कार्यक्रम का हुआ आयोजन

नावानगर (बक्सर) बिहार सरकार के दिबीशा निर्देश के आलोक में अभिभावक शिक्षक संगोष्ठी का आयोजन विद्यालय किया गया।उक्त संगोष्ठी मध्य विद्यालय रामनगर और मध्य विद्यालय बिक्रम इंग्लिश समेत प्रखण्ड के सभी विद्यालयों में हुआ। जिसमेशिक्षा समिति के सदस्यों,विद्यालय में अध्यनरत विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों तथा विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाओं की उपस्थित रहे सगोष्टि में वर्ग 5 एवं 8 के विद्यार्थियों को प्रगति-पत्रक वितरण किया गया। अवसर पर संगोष्ठी को संबोधित करते हुए प्रधानाध्यापक ने सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं तहत मिशन दक्ष, एफएलएन स्टूडेंट्स बैग वितरण,बेंच-डेस्क आपूर्ति,टीएलएम किट आपूर्ति, पाठ्य पुस्तक के बारे में बताया गया। साथ ही संगोष्ठी के अंत में वार्षिक परीक्षा में विद्यार्थियों द्वारा अच्छे अंक एवं ग्रेड लाने पर प्रधानाध्यापक द्वारा उन्हें बधाई एवं उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं प्रदान की गयी।

ट्रेन की चपेट में आने से एक व्यक्ति की मौत

सासाराम (रोहतास) रेलवे जंक्शन सासाराम ट्रैक पर ट्रेन की चपेट में आने से एक व्यक्ति की मौत हो गई। जिस घटना में व्यक्ति का सिर धड़ से अलग हो गया।जिसकी घटना स्थल पर ही मौत गई। मृतक की पहचान सासाराम वार्ड 24 के बड़का शेखपुरा निवासी गोपाल प्रसाद के रूप में बताया जा रहा है।इस घटना की रेलवे पुलिस ने पुष्टि करते हुए बताया कि शव को कब्जे में लेते हुए सदर अस्पताल सासाराम में पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया गया है। वही रेलवे पुलिस द्वारा अगली कार्रवाई जारी है। बताया गया कि सासाराम जंक्शन पर ट्रेन की चपेट में आने से गोपाल प्रसाद की मौत हो गई।

श्री रुद्र महायज्ञ शुभारंभ को लेकर हुआ झंडारोहण

नोखा (रोहतास) थाना क्षेत्र के खैरही गांव में बालक दास बाबा के द्वारा श्री श्री रुद्र महायज्ञ द्वारा रविवार को झंडारोहण किया गया। अवसर पर बालक दास बाबा ने बताया कि 20 अप्रैल से 5 मई तक श्री श्री रुद्रमा यज्ञ एवं महापुराण कथा का प्रत्येक दिन आयोजन भी किया जाएगा। इसकी जानकारी देते हुए महायज्ञ के संचालनकर्ता सुनील सिंह ने बताया कि यह यज्ञ 20 अप्रैल से 5 तक तक चलेगा बाल दास बाबा के नेतृत्व में यह महायज्ञ आयोजित होगी। जिस के कथावाचक अमित महाराज होंगे। इस झंडारोहण में उपस्थित अखिल भारतीय चंद्रवंशी क्षत्रिय महासभा के रोहतास जिलाध्यक्ष प्रकाश चंद्रवंशी, प्रेम प्रकाश सिंह, वकील साहब सहित सैकड़ो लोग मौजूद थे।

भोजपुर में कीटनाशक का सेवन करने से युवती की हालत बिगड़ी

आरा। भोजपुर भोजपुर जिले के कोईलवर थाना क्षेत्र के दौलतपुर गांव में रविवार की दोपहर कीटनाशक का सेवन करने से एक युवती की हालत काफी गंभीर हो गई।जिसके बाद पर परिजन द्वारा उसे इलाज के लिए आरस सदर अस्पताल ले गया जहां उसका इलाज कराया जा रहा है।जानकारी के अनुसार उक्त युवती कोईलवर थाना क्षेत्र के दौलतपुर गांव निवासी लाल बहादुर प्रसाद की 26 वषीर्या पुत्री मंजू कुमारी है।घटना के संबंध में बताया जाता है कि रविवार की दोपहर जब घर के सभी लोग अपने काम में लगे हुए थे।उसी दौरान उक्त युवती ने कीटनाशक का सेवन कर लिया। जिससे उसकी हालत काफी गंभीर हो गई। इसके बाद परिजन द्वारा उसे इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया जहां उसका इलाज कराया जा रहा है।हालांकि उक्त युवती ने कीटनाशक का सेवन क्यों किया। इसका कारण स्पष्ट नहीं हो सका है।

भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय मे एनडीए कार्यकर्ताओं का बैठक

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय मे राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) का बैठक आयोजित हुआ ।उक्त बैठक की अध्यक्षता भाजपा जिलाध्यक्ष दुर्गा राज और धन्यवाद ज्ञापन जदयू जिलाध्यक्ष संजय सिंह ने किया ।कार्यक्रम का संचालन भाजपा जिला उपाध्यक्ष सह आरा सांसद प्रतिनिधि ई.धीरेन्द्र सिंह ने किया।

बैठक मे केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री सह एनडीए समर्थित भाजपा प्रत्याशी आर के सिंह मुख्य रुप से शामिल थे ।इसके अलावा मंचासीन बड़हरा विधायक सह पूर्व मंत्री राघवेन्द्र प्रताप सिंह,विधानपार्षद जीवन कुमार,तरारी के पूर्व विधायक लोजपा नेता सुनील पांडेय,पूर्व मंत्री सह पूर्व विधायक जदयू नेता श्रीभगवान सिंह कुशवाहा, अगिआंव पूर्व विधायक प्रभुनाथ राम,जदयू जिलाध्यक्ष संजय सिंह, लोजपा(रा) जिलाध्यक्ष राजेश्वर पासवान, राष्ट्रीय लोक मोर्चा जिलाध्यक्ष रोहित कुशवाहा, हम जिलाध्यक्ष महेश्वर मिश्रा,भाजपा जिला प्रभारी संजय कुशवाहा को अंगवस्त्र के साथ सम्मानित किया गया।एनडीए कार्यकर्ता बैठक को संबोधित करते हुए केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री सह आरा लोकसभा से घोषित एनडीए समर्थित भाजपा प्रत्याशी आर के सिंह ने कहा कि भोजपुर जिला की जनता और एनडीए गठबंधन के कार्यकताओ के प्रेम और स्नेह से मुझे दस साल जनता की सेवा करने का मौका मिला और फिर से आपलोगो के स्नेह ने मुझे पार्टी द्वारा प्रत्याशी बनाया गया है। मै आप सभी को धन्यवाद देता हूँ। आप लोगो का सहयोग हमे हमेशा से मिलता रहा है ।मेरा इस जिले से 1975 से ही संबंध है ।मै आप लोगो का बेटा,दामाद हूँ। सांसद बनने से पहले से ही इस जिला का विकास करता आ रहा हूँ ।दस साल के काल मे मेरे द्वारा अपने विवेक से भोजपुर जिला का विकास किया गया है ।आज लगभग सभी गाँवो मे मेरी योजनाएँ दिख जाएगी ।जिले का विकास की यात्रा अभी पूरा नही हुआ है। जिले की जनता के सपनो को पूरा करना है ।विकसित भारत के साथ-साथ विकसित भोजपुर भी बनेगा। पटना ग्रेटर के अंतर्गत भोजपुर जिला आएगा ।बिहटा मे हवाई अड्डा होगा और आरा को रिंग रोड से पूर्वांचल एक्सप्रेस वे को जोड़ा जाएगा। ये सभी तभी पूरा होगा जब आप सभी का सहयोग प्राप्त होगा और मुझे विश्वास है कि आप सभी मुझे इतना स्नेह देते है कि इस बार आरा लोकसभा से ढाई लाख से अधिक मतो से जीत मिलेगा। भारत मे एक ही गठबंधन राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन है,जो सबसे अधिक मजबुत भी है ।इस बार देश की जनता ने तय कर ली है कि चार सौ पार सीटे जीतकर नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाएँगे। आज देश तेजी से विकास कर रहा है और विकसित भारत की ओर अग्रसर है। हम बहुत जल्द तीसरी अर्थव्यवस्था बन जाएँगे ।बिहार की चालीस के चालीस सीट हम जीत रहे है।

बड़हरा विधायक सह पूर्व मंत्री राघवेन्द्र प्रताप सिंह ने कार्यकताओं मे बल भरते हुए कहा कि भोजपुर जिला की मिट्टी मे बहुत ताकत है और हमारे सांसद आर के सिंह हो तो फिर जिले को विकसित बनने से कोई रोक नही सकता ।यहाँ की जनता ने पहले से ही इन्हे फिर से सांसद मान चुकी है ।आजादी के बाद जिले मे विकास करने वाला पहला ऐसा सांसद मिला ।इनका सामना किसी से नही है ।ये जनता के प्रिय है और जनता द्वारा उन्हे पूर्ण आशीर्वाद मिल चुका है। आर के सिंह ने रेल,सड़क,जलमार्ग तीनो मे विकास किए है ।इनका विकास कार्य पूरे देश मे चर्चित रहता है ।इनके प्रयास से आरा मे मेडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेज भी खुला। इस बार बड़हरा विधानसभा सहित पूरे जिला से अभूतपूर्व मत प्राप्त करेंगे ।

वहीं तरारी के पूर्व विधामक सुनील पांडेय ने कहा कि आर के सिंह का पहचान एक साफ-सुथरा,इमानदारी का छवी का रहा हैं ।उनका कार्य निःस्वार्थ होता है। एनडीए के सांसदो से रिपोर्ट कार्ड मांगने वाले को जनता रिपोर्ट कार्ड दिखाएगी ।जो अपने क्षेत्र के रोड का डीपीआर नही बनवा सका,वह रिपोर्ट कांड मांगता है ।जनता दिखा देगी। पूरा एनडीए एकजुट है।

पूर्व मंत्री जदयू के वरिष्ठ नेता श्रीभगवान सिंह ने कहा कि देश मे नरेन्द्र मोदीऔर बिहार मे नीतीश कुमार की डबल इंजन की सरकार देश और बिहार का विकास तेजी से कर रही है ।आर के सिंह के बारे मे जितना कुछ कहा जाए कम ही होगा ।वे इस बार रिकॉर्ड मतो से जीतेंगे। विधानपार्षद जीवन कुमार ने कहा कि आजादी के बाद देश मे जितना विकास प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया अभी तक नही हुआ था ।यह सरकार सबका साथ सबका विकास वाली सरकार है ।महिला, युवा,किसान और गरीबों का विकास वाली सरकार है ।बिहार मे एनडीए की सरकार अनवरत विकास की राह पर है और आर के सिंह का विकास जिले मे चारो तरफ दिख रहा है। अगिआंव के पूर्व विधायक प्रभुनाथ राम ने कहा कि आरा लोकसभा के साथ-साथ अगिआंव विधानसभा का भी चुनाव हो रहा है और इस बार भोजपुर जिला देश मे ऐतिहासिक जीत का संदेश देने जा रहा है ।पूरा एनडीए गठबंधन एकसाथ जुटकर विरोधियों को छठी का दूध याद दिलवाएगा।

भाजपा जिलाध्यक्ष दुर्गा राज ने अध्यक्षता करते हुए सभी एनडीए घटक दलो के कार्यकताओ से एकजुटता के साथ आरा लोकसभा एनडीए प्रत्याशी को रिकार्ड मतो से जिताने की बात कही। जदयू जिलाध्यक्ष संजय सिंह ने बैठक मे आए सभी कार्यकताओ को धन्यवाद देते हुए अबकी बार चार सौ पार के संकल्प को दुहराया। कार्यक्रम मे जदयू वरिष्ठ नेता भाई ब्रहमेश्वर,राष्ट्रीय लोक मोर्चा नेता संजय मेहता,भाजपा नेता परशुराम चौधरी,हरेन्द्र पांडेय,उदय प्रताप सिंह,वंदना राजवंशी, प्रेम पंकज ललन,मीरा यादव,कौशल यादव,रामदिनेश यादव,जदयू नेता प्रिंस सिंह बजरंगी, भाजपा महामंत्री राकेश सिंह,पुनम कुशवाहा, संतोष चंद्रवंशी, मधु मिश्रा, संजय कुमार सिंह,नवीन प्रकाश,धीरज सिंह,राजेश सिंह,संतोष तिवारी, निशांत सिंह सेंगर,संजय सिंह,राहुल सिंह,ममता सिंह,अजय गुप्ता, मनीष कुमार सहित एनडीए घटक दल भाजपा, जदयू,लोजपा, राष्ट्रीय लोक मोर्चा, हम के वरिष्ठ नेता और कार्यकर्ता शामिल थे।

भाजपा सरकार द्वार कांग्रेस पार्टी को परेशान व बदनाम करने के खिलाफ मे विशाल प्रदर्शन किया गया

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। केंद्र की भाजपा सरकार द्वारा ईडी और अपने तमाम जांच एजेंसियों के माध्यम से कांग्रेस पार्टी को परेशान व बदनाम करने के खिलाफ भोजपुर जिला कांग्रेस किमिटी के अध्यक्ष अशोक राम के नेतृत्व में शहीद चौक, आरा पर विशाल प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन को सम्बोधित करते हुए जिला अध्यक्ष अशोक राम ने कहा कि जिस तरह से भाजपा लगातार देश की लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं की हत्या कर रही हैं, अब यह खतरनाक रूप लेते जा रही है। देश की प्रमुख विपक्षी दल होने के बावजूद चुनाव से ठीक पहले कांग्रेस पार्टी का खाता सील कर दिया गया और तुरन्त बाद आयकर विभाग की ओर से पार्टी को नया नोटिश दिया गया हैं, जिसमें 1823.08 करोड़ रूपया जमा करने के लिए कहा गया है, यह साजिश के तहत किया गया घिनौना कृत्य हैं। आगे उन्होंने कहा कि चुनाव के मध्य में जिस तरह से लोकतंत्र के ऊपर हमला कर देश में 'कर आतंक' का साम्राज्य स्थापित किया जा रहा है, अब यह बर्दास्त से बाहर है। देश की जनता इसे कभी माफ नही करने वाली है और चुनाव में भी इसका माकूल जबाब मिलने वाला हैं। प्रदर्शन में भोजपुर जिला कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष अशोक राम, घनश्याम उपाध्याय, सत्य प्रकास राय, रजी अहमद, जितेंद्र शर्मा, प्रमोद राय, रतन धमालिया, लाल मोहर सिंह, सत्य नारायण लाल, चितरंजन सिंह मुन्ना, शिवशंकर चौबे, अब्दुल सलाम कुरैशी, सम्पत सिंह, राकेश कुमार त्रिपाठी, परमात्मा यादव, रवि कुमार रवि, सूरज प्रकाश, राकेश पाण्डेय, रविन्द्र तिवारी, उदय राम, तारकेश्वर यादव, संजय कुमार त्रिपाठी सहित दर्जनों पार्टी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता शामिल थे।

उर्जा मंत्री आरके सिंह अपने 10 वर्ष कार्यकाल का रिपोर्ट जारी करें : सुदामा प्रसाद

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। लोकसभा इंडिया महागठबंधन का प्रत्याशी बनाए जाने के बाद माले जिला कार्यालय में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए सुदामा प्रसाद ने कहा कि मोदी सरकार में पिछले 10 वर्षो के शासनकाल में देश के संविधान व लोकतंत्र को खत्म करने का पूरा प्रयास किया !उन्होंने आगे कि कहा मोदी सरकार देश के खेती, रोजगार,व्यवसाय और समाजिक सदभाव को लगातार कमजोर करने प्रयास कर रही है !इनके सांसद अनंत हेगड़े ने तो बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर के संविधान को बदलने देश के लोगों से 400 सीट जीताने की बात कही !उन्होंने कहा कि उर्जा मंत्री आरके सिंह जब पहली बार आरा से चुनाव लड़ रहे थे उन्होंने जिले में सौर्य उर्जा प्लानंट लगाने की घोषणा किये थे !लेकिन आज तक प्लानट नहीं लग सका !बड़हरा प्रखंड के गुंडी गांव को भी गोद लेने की घोषणा किये लेकिन आज तक गुंडी गांव विकास के लिए तर्ज रहा है !जिले के बेरोजगार रोजगार के लिए दूसरे राज्य में प्लायन के लिए मजबूर हैं !उर्जा मंत्री जिस विभाग के मंत्री है उस विभाग में बिजली के नाम जनता के पैसों को लूटा जा रहा है गरीबों के घरों में लाखों रुपए का बिजली बिल आ रहा है ! फर्जी बिजली बिल से जनता परेशान है !जिले के खेती की सिंचाई के लिए सोन नहर का आधुनिकीकरण की लंबित मांग आज तक पूरा नहीं हुआ !जिसके चलते खेती घाटे की सौदा बनकर रह गयी है ! उन्होंने आगे कहा कि ऑनलाइन व्यापार के कारण फुटपाथी दुकानदार व छोटे-मोटे मझोले व्यवसायी बबार्दी के कगार पर है !उन्होंने कहा कि माननीय सांसद महोदय को अपने 10 वर्षो का शासनकाल का रिपोर्ट जारी करना चाहिए!

महागठबंधन प्रत्याशी सुदामा प्रसाद ने कहा कि जनता के इन बुनियादी मुद्दों को लेकर चुनावी एजेंडा बना कर चुनाव लड़ा जाएगा !प्रेस कॉन्फ्रेंस में माले राज्य कमेटी सदस्य विजय ओझा,क्यामुद्दीन अंसारी,आरा नगर सचिव दिलराज प्रीतम,जिला स्थाई समिति सदस्य जितेंद्र सिंह,अमित कुमार बंटी शामिल थे!

एमडीजे पब्लिक स्कूल का 15वां वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता आयोजित

प्रात: किरण संवाददाता

नावानगर (बक्सर) प्रखंड क्षेत्र के एमडीजे पब्लिक स्कूल,अमरपुरी सोनवर्षा में रविवार को तीन दिवसीय 15वां वार्षिक खेलकूद के फाइनल प्रतियोगिता का आयोजन रंगारंग कार्यक्रम से हुई। जिसका शुभारंभ मुख्य अतिथि धनगाई सहायक थाना इंचार्ज रामयश आर्य व विद्यालय निदेशक डॉ. नंद कुमार सिंह ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथियों का निदेशक डॉ. नंद कुमार सिंह ने बुके भेट कर फुल माला पहना अंगवस्त्र से सम्मानित किया। आयोजित 15वां वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता में कुल 36 तरह के खेलों को शामिल किया गया। जिसमें क्रिकेट, फुटबॉल, कबड्डी, खो-खो, बैडमिंटन,वॉलीबॉल, लॉन्ग जंप, हाई जंप, 100 मीटर, 200 मीटर, 500 मीटर सहित1000 मीटर के दौड़ शामिल थें। साथ ही जलेबी रेस, स्पून रेस, स्लो साइकिल रेस, थ्री लेग रेस, चेयर रेस, मैथ रेस, सुई धागा रेस, जैवलिन थ्रो, डिस्कस थ्रो, शॉट पुट इत्यादि प्रमुख रहा क्रिकेट मैच का मुकाबला अंडर 12 में सेमीफाइनल जीत कर पहुंची। इमर्जिंग स्टार की टीम एवं राइजिंग टैलेंट टीम के मध्य हुई जिसमें इमर्जिंग स्टार की टीम ने टॉस जीतकर बैटिंग करने का फैसला किया कुल 8 ओवर के मैच में इमर्जिंग स्टार की टीम ने तीन विकेट खोकर 111 रन बनाए और जीत के लिए राइजिंग टैलेंट की टीम को 112 रनों का लक्ष्य दिया लक्ष्य का पीछा करने उतरी राइजिंग टैलेंट की टीम ने आठ ओवर में पांच विकेट खो कर महज 80 रन ही बना सकी। जिसमें इमर्जिंग स्टार की टीम 31 रनों से विजयी रही। इस मैच का मैन ऑफ द मैच आर्यन कुमार कक्षा 7बी को चुना गया। अंडर 14 में क्रिकेट का मुकाबला ब्लू हिल्स एंड येल्लो हिल्स के मध्य हुआ। जिसमें येल्लो हिल्स की टीम ने टॉस जीतकर बैटिंग करते हुए प्रतिद्वंदी टीम को 53 रनों का लक्ष्य दिया लक्ष्य का पीछा करने उतरी ब्लू हिल्स की टीम ने 7.3 ओवर में दो विकेट शेष रहते ही लक्ष्य को प्राप्त कर जीत दर्ज की। मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार कक्षा 9 बी के छात्र सत्यम कुमार को मिला 100मीटर रेस के लड़का ग्रुप में कक्षा 5 ए के अनुराग बाबू ने प्रथम स्थान, शिवम कुमार गुप्ता कक्षा 3 बी ने द्वितीय एवं कक्षा 3 बी के अंकित कुमार राय ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं गर्ल्स ग्रुप में प्रिया यादव कक्षा 4 ए ने प्रथम स्थान रूही कुमारी कक्षा 3 बी ने द्वितीय स्थान एवं कक्षा 1 की छात्रा कुमारी विद्या ने तृतीय स्थान प्राप्त किया 200 मी रेस के बॉयज ग्रुप में कक्षा सिक्स बी के छात्र सचिन कुमार ने प्रथम स्थान सिक्स बी के अंकेश कुमार ने द्वितीय स्थान एवं कक्षा 8 बी के रंजन कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया खेलों की समाप्ति के उपरांत पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें सभी विजेता प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विद्यालय के निदेशक डॉ नंदकुमार सिंह ने कहा कि खेल भी पढ़ाई का एक अभिन्न हिस्सा है। खेलों से बच्चों का मानसिक, बौद्धिक एवं शारीरिक विकास तो होता ही है साथ ही साथ उनमें पढ़ने लिखने की प्रवृत्ति और भी प्रबल हो जाती है। यह विद्यालय का 15वां वार्षिक खेलकूद महोत्सव है। इसमें कक्षा नर्सरी से लेकर कक्षा 9 तक के कुल 730 छात्र छात्राओं ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के वरीय शिक्षक मुन्ना कुमार ने किया। जिस कार्यक्रम में खेल शिक्षक संतोष कुमार सिंह एवं रंजीत कुमार का सराहनीय योगदान रहा।

द डीपीएस के सफल एक्सीलेंट इलेवन परीक्षार्थियों हुए सम्मानित

प्रात: किरण संवाददाता

बिक्रमगंज (रोहतास) लगातार छठे वर्ष समारोह आयोजित करके द डीपीएस विद्यालय प्रबंधन ने एक्सीलेंट इलेवन परीक्षा के विजेताओं को पुरस्कृत किया। कार्यक्रम का उद्घाटन बिक्रमगंज कोर्ट के न्यायाधीश संजीव कुमार ने दीप प्रज्वलित करके किया ।उनके साथ द डीपीएस के सह निदेशक अखिलेश कुमार आईआईटीएन अमितेश्वर आनंद एवं प्रधानाचार्य डॉ बसंत दास ने मंच साझा किया। सभी ने दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम की शुरूआत की ।विदित हो कि एक्सीलेंट इलेवन द डिवाइन पब्लिक स्कूल की एक वैसी कल्याणकारी योजना है जिसका उद्देश्य वैसे छात्र-छात्राओं का चयन करना है। जो अथार्भाव के कारण अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पाते हैं ।वर्ष 2016 में इस योजना की शुरूआत हुई तब से लेकर अब तक इस परीक्षा के माध्यम से 30 से ज्यादा बच्चे निःशुल्क शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं ।एक्सीलेंट इलेवन परीक्षा में पांचवी में पढ़नेवाले विद्यार्थी फॉर्म भरते हैं साथ ही अभ्यर्थी द डीपीएस का छात्र नहीं होना चाहिए। परीक्षा के बाद कॉपियों की सूक्ष्मता पूर्वक जांच करने के बाद सर्वश्रेष्ठ ग्यारह विद्यार्थियों का चयन किया जाता है।

चयनित छात्रों को पुरस्कार के साथ कक्षा छठी में नामांकन लिया जाता है। साथ ही कक्षा दशवीं तक उनको निःशुल्क शिक्षा दी जाती है ।योजना की शुरूआत के साथ ही यह परीक्षा लोकप्रिय हो गई थी। जो वर्तमान समय में अभिभावक वर्ष भर इसके आयोजन की प्रतीक्षा करते हैं। वही रोहतास जिले के अलावा,भोजपुर, बक्सर,जहानाबाद, औरंगाबाद,कैमूर, भभुआ इत्यादि जिलों से भी विद्यार्थी अब परीक्षा में सम्मिलित हो रहे हैं। जो एक्सीलेंट इलेवन में चयनित बच्चों में इस वर्ष दिव्या कुमारी पिता-ज्योतिष कुमार सिंह ग्राम,पोस्ट शिवपुर को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। शुभम राज पिता मुन्ना लाल गुप्ता बिक्रमगंज को द्वितीय अर्पित राज पिता संजीव कुमार सिंह,ग्राम रामपुर को तृतीय रिषभ कुमार पिता-मंटू कुमार ग्राम-कातर को चतुर्थ अल्तमस रजा पिता-मो अमजद हुसैन ग्राम-श्रीकांतपुर को पांचवा राज राजेश्वर राज पिता-संतोष कुमार सिंह, ग्राम बिसुनपुरा को छठा गोविंद कुमार पांडेय, पिता रमून कुमार पांडेय ग्राम-सकलाबाजार को सातवां छोटू कुमार पिता-सुरेंद्र चौधरी, ग्राम पोस्ट आँछा, जिला औरंगाबाद को आठवां उत्कर्ष कुमार पिता-बिजेंद्र कुमार ग्राम-बेलवाई को नवां अर्चना कुमारी पिता-मिथलेश कुमार बिक्रमगंज को दसवां तथा जया कुमारी पिता-योगेश्वर चौधरी ग्राम-डीहरा को ग्यारहवां स्थान प्राप्त हुआ। इसके अलावा 12 से 22 रैंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को भी सांत्वना पुरस्कार दिया गया ।अपने संबोधन में न्यायाधीश संजीव कुमार ने कहा कि बच्चों के नवनिर्माण की दिशा में द डीपीएस का यह कार्य समाज के लिए आईना है ।सभी सफल प्रतिभागियों को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि जो पिछड़ गए उन्हें निराश होने की आवश्यकता नहीं है ।सभी छात्र अपनी-अपनी रुचि के अनुसार श्रेष्ठ हैं। मार्क्स के लिए बच्चों को न डांटे। कागज के टुकड़ों से उनका आंकलन न करें। आईआईटियन अमितेश्वर आनंद ने विजेताओं को सलाह दी कि आप इसी परीक्षा को अंत न मान लें बल्कि पूरे जीवन की परीक्षाओं की सफलता के लिए पढ़ाई में निरंतरता बनाए रखें। विद्यालय के सह निदेशक अखिलेश कुमार ने अपने संबोधन में बताया कि इस प्रतियोगिता की शुरूआत के पीछे एकमात्र यही चिंतन और लालसा रही है कि कोई भी बच्चा आर्थिक तंगी की वजह से शिक्षा विहीन न होने पाए।

आरा में बीवी पैट गोदाम के सुरक्षाकर्मी ने गार्ड रूम में खुद को गोली मार की आत्महत्या,सनसनी

नवादा थाना क्षेत्र के ब्लॉक रोड स्थित कृषि भवन में शनिवार की देर शाम घटी घटना

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। शहर के नवादा थाना क्षेत्र के ब्लॉक रोड स्थित कृषि भवन में शनिवार की देर शाम वीवी पैट गोदाम के एक सुरक्षा कर्मी ने अपने ही लाइसेंसी राइफल से खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली। सुरक्षा कर्मी ने अपने लाइसेंसी इंसास राइफल से ललाट के बीचो-बीच गोली मारी है। जिससे उसकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई। घटना को लेकर आसपास के इलाके एवं पुलिस महकमे में हड़कंप मच गई है। उधर घटना की सूचना मिलते ही डीएम राज कुमार,एसपी प्रमोद कुमार,एएसपी परिचय कुमार एवं नवादा थानाध्यक्ष राकेश कुमार सिंह सहित पुलिस के कई अधिकारी घटनास्थल पर पहुंच मामले की छानबीन में जुट गए हैं। जानकारी के अनुसार मृतक जवान मूल रूप से पटना जिला के घोषवारी थाना क्षेत्र के शहरी गांव निवासी शिव पासवान का 27 वर्षीय पुत्र हेमंत कुमार है। वह बिहार पुलिस जवान था एवं नवंबर माह में वीवी पैट में उसकी पोस्टिंग हुई थी। वह डीएपी 151 अंतर्गत एपी पुलिस केंद्र आरा के कृषि भवन में वीवी पैट गोदाम में सुरक्षाकर्मी के रूप में कार्यरत था। इधर भोजपुर डीएम राज कुमार ने बताया कि हमारे यहां एवं ईवीएम वेयर हाउस में तीन सुरक्षा तैनात थे और वह चौबीस घंटे सुरक्षा में थे। उसमे एक हेमंत कुमार भी थे। जो जिला बाल 151 प्रतिनियुक्ति में थे। उनके साथ एक और सुरक्षा कर्मी भी थे जो कुछ सामान लाने के लिए बाजार गए थे। जब वह बाजार से वापस लौटे तो उन्होंने देखा कि गेट अंदर बंद है और रूम का दरवाजा भी लॉक है। जब उसने खिड़की से झांककर देखा तो हेमंत कुमार जमीन पर गिरे थे और खून बह रहा था। इसके बाद उनके द्वारा अपने वरीय पदाधिकारी को इसकी सूचना दी गई। जिसके बाद स्थानीय थाना प्रभारी, एएसपी और उसके बाद एसपी साहब और हम यहां पहुंचे। इसके बाद वीडियो ग्राफी की गई और अंदर से तोड़कर दरवाजा को खोला गया। उन्होंने बताया कि जो इंसास राइफल उन्हें निर्गत की गई थी। उसी राइफल से गोली चली है। कहीं से भी गेट खुलने और किसी की एंट्री होने की कोई संभावना नहीं है। जिसे देखते हुए प्रथम दृष्टिया आत्महत्या करने का मामला लग रहा है। डीएम ने बताया कि हो सकता है। उनकी कोई निजी करण रही होगी। इस संदर्भ में उनके परिवार वालों को सूचित कर दिया गया है। उनके आने के बाद विस्तृत रूप से जानकारी पता चल पाएगी।

लोकसभा चुनाव को लेकर इंडिया गठबंधन कार्यकर्ता ने की बैठक

प्रात: किरण संवाददाता

नोखा (रोहतास) लोकसभा चुनाव में इंडियन गठबंधन की ओर से राजाराम सिंह को प्रत्याशी बनने पर खुशी व्यक्त की है। जिस चुनाव को लेकर सीपीआईएम के नेता सतार अंसारी की अध्यक्षता में कार्यकताओं ने एक बैठक की। कार्यक्रम में चर्चा करते हुए भाजपा हटाओ-देश बचाओ, लड़ेंगे जीतेंगे के नारे पर विशेष चर्चा किया गया। साथ ही बूथ स्तर पर इंडिया गंठबंधन के कार्यकताओं को संगठित करने और घर-घर मतदाताओं को जागरूक करने का निर्णय लिया गया। जिसको लेकर 7 अप्रैल को नोखा प्रखंड के श्रीखिण्डा,जैनगरा,बरावं, विशुनपुरा, हथिनी,नोनसारी,कैथी, बलिगावां धर्मपुरा,नोखा आदि गांवों में उम्मीदवार राजाराम सिंह का दौरा का निर्णय लिया गया ।जबकि 25 अप्रैल को नोखा में विधानसभा स्तर पर कार्यकर्ता सम्मेलन करने काघोषणा किया। बैठक में वक्ताओं ने कहा कि 2024 का लोकसभा चुनाव संविधान बनाम मनुस्मृति,धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बनाम हिन्दू राष्ट्र के सवाल पर होगा। मौके पर राजद प्रखंड अध्यक्ष मो. अख्तर जमाल,भीम सिंह, रविशंकर राम, जितेन्द्र प्रसाद, लाल बहादुर यादव,राजेश कुमार सिंह, अखिल भारतीय अंबेडकर कल्याण संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष अरविंदर चक्रवर्ती, बंचित अधिकार परीषद संजय कुमार सिंह, श्री निवास राम सहित अन्य कार्यकर्ता ने बैठक में भाग लिया।

यीशु के याद में ईस्टर पर्व धूमधाम से मनाया गया

प्रात: किरण संवाददाता

नोखा (रोहतास) नगर परिषद क्षेत्र स्थित जेम्स चर्च भवन में रविवार को ईस्टर पर्व धूमधाम से मनाया गया। अवसर बच्चों सहित लोगों ने प्रभु यीशु मसीह पर बने गीत-संगीत पर नृत्य किया। मौके उपस्थित लोगों ने

एक-दूसरे को हैप्पी ईस्टर की बधाई दी। कार्यक्रम चर्चा का आयोजन सुबह 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक किया गया। जहां भजन कीर्तन से पूरा चर्च प्रभु यीशु मय वातावरण गूंज उठा था। प्रार्थना कार्यक्रम का संचालन रंजीत कुमार ने बताया कि यीशु भक्त को अपने-पापों से पश्चाताप कर प्रभु की शरण में आने वाले जन को क्षमा व उद्धार का वरदान प्राप्त होगा। जिस में बलिराम कुमार का भी भरपूर सहयोग रहा। साथ ही संत जोसफ कन्वेंस स्कूल के मैडम सुनीता मैडम के नेतृत्व में यीशु के भजन कीर्तन किया गया। भजन कीर्तन समाप्त होने के बाद प्रतिभोज का भी आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में अमित कुमार, रिंकी कुमारी, पूजा कुमारी साहित्य सैकड़ों भक्त लोग उपस्थित थे।

अभिभावक शिक्षक संगोष्ठी कार्यक्रम का हुआ आयोजन

नावानगर (बक्सर) बिहार सरकार के दिबीशा निर्देश के आलोक में अभिभावक शिक्षक संगोष्ठी का आयोजन विद्यालय किया गया। उक्त संगोष्ठी मध्य विद्यालय रामनगर और मध्य विद्यालय बिक्रम इंग्लिश समेत प्रखण्ड के सभी विद्यालयों में हुआ। जिसमे शिक्षा समिति के सदस्यों,विद्यालय में अध्यनरत विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों तथा विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाओं की उपस्थित रहे सगोष्टि में वर्ग 5 एवं 8 के विद्यार्थियों को प्रगति-पत्रक वितरण किया गया। अवसर पर संगोष्ठी को संबोधित करते हुए प्रधानाध्यापक ने सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं तहत मिशन दक्ष, एफएलएन स्टूडेंट्स बैग वितरण,बेंच-डेस्क आपूर्ति,टीएलएम किट आपूर्ति, पाठ्य पुस्तक के बारे में बताया गया।

अनुमंडल पुलिस ने विभिन्न जगहों से 9 वारंटी को भेजा जेल

प्रात: किरण संवाददाता

-बिक्रमगंज (रोहतास) अनुमंडल क्षेत्र अंतर्गत संझौली,दिनारा,नासरीगंज एवं कछवां पुलिस ने थाना क्षेत्र के अलग- अलग जगहों से कुल 9 वारंटी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया ।इस संदर्भ में जानकारी देते हुए संझौली थानाध्यक्ष मुकेश कुमार ने बताया कि थाना क्षेत्र के तिलई निवासी स्वर्गीय चंद्रमा बैठा के पुत्र निर्मल बैठा को पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर गिरफ्तार कर लिया ।

उन्होंने कहा कि गिरफ्तार अभियुक्त के विरुद्ध कोर्ट से इस्तेहार वारंट निर्गत था । वही दिनारा पुलिस ने थाना क्षेत्र के भुई टोला निवासी महेंद्र चौधरी ,दिनेश चौधरी ,उमेश चौधरी एवं योगेंद्र चौधरी को गुप्त सूचना के आधार पर गिरफ्तार कर लिया। दिनारा थानाध्यक्ष विनय कुमार ने बताया कि गिरफ्तार चारों अभियुक्त के विरुद्ध कोर्ट से एनबीडब्ल्यू वारंट निर्गत वारंट था । वही नासरीगंज पुलिस ने भी गुप्त सूचना के आधार पर थाना क्षेत्र के चितोखर निवासी हरिहर साह एवं खुटहां निवासी कुंज बिहारी शर्मा को गिरफ्तार कर लिया ।

थानाध्यक्ष अमित कुमार ने बताया कि गिरफ्तार दोनों अभियुक्त के विरुद्ध कोर्ट से एनबीडब्ल्यू वारंट निर्गत था । वही कछवां पुलिस ने भी गुप्त सूचना के आधार पर थाना क्षेत्र के मंगरांव नोआंव टोला निवासी विकास कुमार सिंह पिता रामेश्वर सिंह एवं रामेश्वर सिंह उर्फ बल्ली पिता राम सिंह को गिरफ्तार कर लिया। कछवां थानाध्यक्ष मितेश कुमार ने बताया कि गिरफ्तार दोनों अभियुक्त के विरुद्ध कोर्ट से एनबीडब्ल्यू वारंट निर्गत था ।

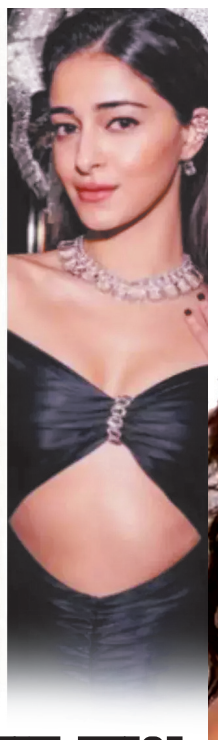

पहली बार साथ जमी आदित्य अनन्या की जोड़ी

काफी लंबे वक्त से आदित्य रॉय कपूर और अनन्या पांडे अपने कथित अफेयर को लेकर सुर्खियों में हैं। अक्सर दोनों को साथ छुट्टियां मनाते देखा जाता है। कई बार बॉलीवुड इवेंट्स में भी दोनों को साथ स्पॉट किया गया है। हालांकि, दोनों ने अभी तक अपने अफेयर की खबरों पर आधिकारिक रूप से कुछ नहीं कहा है। इस बीच दोनों के साथ काम करने की खबर सामने आई है। आखिर क्या है दोनों का प्रोजेक्ट आइए जानते हैं।

अफेयर की खबरों के बीच दोनों सितारे पहली बार साथ काम कर रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक आदित्य और अनन्या किसी फिल्म में नजर नहीं आने वाले, बल्कि दोनों एक विज्ञापन में साथ दिखाई देंगे। यह चश्मों के एक ब्रांड का विज्ञापन है। इसकी तस्वीर अनन्या और आदित्य ने साझा की है। तस्वीर में दोनों एक-दूजे के साथ पोज देते नजर आ रहे हैं। इस ब्रांड के विज्ञापन के लिए पिछले कुछ वर्षों से अनन्या के साथ सिद्धार्थ मल्होत्रा नजर आ रहे थे। मगर इस बार आदित्य ने उनकी जगह ले ली है। मैचिंग कपड़ों में दोनों स्टार्स ब्रांड का ताजा कलेक्शन पहने दिख रहे हैं। अनन्या और आदित्य रॉय कपूर की इस तस्वीर पर यूजर्स की काफी सकारात्मक प्रतिक्रिया आ रही है। दोनों की जोड़ी फैंस को पसंद आ रही है। सोशल मीडिया यूजर्स कमेंट बॉक्स में दोनों की जमकर तारीफ कर रहे हैं। अधिकांश को दोनों की जोड़ी बेहद पसंद आ रही है। हालांकि, कुछ लोग आदित्य के साथ श्रद्धा कपूर को देखने के लिए उतावले नजर आए हैं। एक यूजर ने लिखा, साथ में दोनों बहुत कूल लग रहे हैं। एक अन्य यूजर ने लिखा, एड में इन्हें साथ में दिखाने का आइडिया जिसका भी है, बहुत धांसू है। इनकी जोड़ी कमाल है। आदित्य और अनन्या के अफेयर की खबरें लंबे वक्त से चल रही हैं। वर्ष 2022 में दोनों ने जब कृति सेनन की दिवाली पार्टी में साथ शिरकत की, तब से इनके अफेयर की खबरों को ज्यादा हवा मिलनी शुरू हुई। कॉफी विद करण शो के दौरान करण जौहर ने भी इसके अफेयर को लेकर संकेत दिए। एयरपोर्ट पर इन्हें अक्सर साथ देखा जाता है। इसके अलावा मुंबई में भी इन्हें कई बार पैपराजी साथ में स्पॉट करते हैं।

राशि खन्ना ने वेब सीरीज फर्जी 2 की शूटिंग पर दिया अपडेट

राज और डीके द्वारा निर्मित और निर्देशित ब्लैक कॉमेडी क्राइम थ्रिलर सीरीज फर्जी को दर्शकों का खूब प्यार मिला था। वहीं अब फैंस इसके दूसरे भाग का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। फर्जी में शाहिद कपूर, विजय सेतुपति, के के मेनन, राशि खन्ना और भुवन अरोड़ा मुख्य भूमिका में नजर आए थे। कहानी एक निराश कलाकार के इर्द-गिर्द घूमती है, जो नकली पैसे बनाने का काम करता है। आठ-एपिसोड की यह सीरीज 10 फरवरी, 2023 को अमेजन प्राइम वीडियो पर प्रीमियर हुई, जिसे सकारात्मक समीक्षा मिली और यह सबसे ज्यादा देखी जाने वाली भारतीय स्ट्रीमिंग सीरीज बन गई। फर्जी के सीक्वल पर चर्चाएं तेजी से शुरू हो गई हैं। अब सीरीज की शूटिंग और रिलीज को लेकर अभिनेत्री राशि खन्ना ने बड़ा अपडेट दिया है। फर्जी में राशि ने भारतीय रिजर्व बैंक की विशेषज्ञ विश्लेषक का किरदार निभाया था, जो नकली नोटों की पहचान करने में माहिर थीं। अब उन्होंने हाल ही में दिए साक्षात्कार में खुलासा किया कि फर्जी 2 की शूटिंग अगले साल यानी 2025 की शुरुआत में शुरू हो जाएगी। उन्होंने आगे कहा कि राज सर और डीके सर के पास अभी बहुत काम है। उनके पास सिटाडेल हनी बनी आने वाली है और फिर द फैमिली मैन 3 है। उसके बाद वे शायद फर्जी 2 पर काम करेंगे। राशि ने आगे कहा कि मेरे पास जो जानकारी है उसके अनुसार, शूटिंग 2025 में शुरू होगी। इसके साथ ही उन्होंने फर्जी में अपने सह-कलाकारों की सराहना की और बताया कि उन्हें शाहिद और विजय दोनों से बहुत कुछ सीखने को मिला। विजय वही हैं, जो असल में हैं और वे खुद के अलावा कुछ और होने का दिखावा नहीं करते। मुझे उनकी यही खूबी पसंद है। जहां तक शाहिद की बात है, मुझे एक अभिनेता के तौर पर उनकी बहुमुखी प्रतिभा पसंद है। वहीं बात करें वेब सीरीज की तो राज और डीके की फर्जी नकली नोटों के इर्द-गिर्द केंद्रित है, जो 2022 में रिलीज हुई और इसे तुरंत सफलता मिली। शाहिद ने सनी का किरदार निभाया, जो भारत में आय असमानता से निराश है, खासकर अपने दादा के बड़े प्रिंटिंग प्रेस व्यवसाय को बनाए रखने में विफल होने के बाद काफी परेशान हैं। वित्तीय संघर्षों को दूर करने के लिए वे अपने सबसे अच्छे दोस्त फिरोज यानी भुवन अरोड़ा के साथ मिलकर नकली नोटों के उत्पादन में हाथ आजमाता है। हालांकि, उन्हें गैंगस्टर मंसूर यानी के के मेनन और पुलिस एक वाले माइकल यानी विजय सेतुपति से चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। वहीं बात करें राशि खन्ना के वर्कफ्रंट की तो अभिनेत्री को हाल ही में योद्धा में देखा गया, जिसमें उन्होंने सिद्धार्थ मल्होत्रा की पत्नी का किरदार निभाया है। फिल्म को दर्शकों की अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है। वहीं हाल ही में राशि खन्ना ने करण जौहर के साथ एक बार फिर काम करने की इच्छा जताई और साथ ही उन्होंने कहा कि वे अमिताभ बच्चन के साथ भी काम करना चाहती हैं।

अली-ऋचा लॉन्च करेंगे अपना खुद का फैशन ब्रांड

ऋचा चड्ढा और अली फजल बॉलीवुड की सबसे चर्चित जोड़ियों में से एक हैं। लॉकडाउन के दौरान ही दोनों ने हमेशा के लिए एक दूजे का होने का फैसला कर लिया था। पिछले साल ही इस कपल ने अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के लिए हल्दी, मेहंदी, संगीत और रिसेप्शन फंक्शन का आयोजन किया था। कपल जल्द ही माता-पिता भी बनने वाले हैं। अब कपल जल्द ही अपना फैशन ब्रांड लॉन्च करने वाले हैं। बॉलीवुड कपल अली फजल और ऋचा चड्ढा अपना खुद का फैशन ब्रांड लॉन्च करेंगे, जो स्थानीय कारीगरों पर ज्यादा फोकस करेगा। अपने लेबल के साथ, ये कपल भारतीय संस्कृति में कला के सबसे पुराने रूपों में नई जान डालेगा। कपल का लक्ष्य लखनऊ के स्थानीय कारीगरों को रोजगार देना है। इस बारे में एक्ट्रेस ऋचा चड्ढा ने कहा, हम दोनों ने हमेशा जो कुछ भी किया है, उसमें जमीनी स्तर पर लोगों के लिए काम करने का प्रयास किया है। हम हमेशा स्थानीय समुदाय को बढ़ावा देना चाहते हैं। हमारे सामाजिक प्रयास भी कुछ ऐसे होते हैं, जिन्हें हम जमीनी स्तर से कानूनी स्तर तक करने का प्रयास करते हैं। एक्ट्रेस ने आगे कहा, जब हमारे मन में कारीगरों के लिए कुछ करने का विचार आया, खासतौर से लखनऊ के उन लोगों के लिए, जिनके पास कला का भंडार है, तो हम चाहते हैं कि यह लेबल उनके टैलेंट को प्रदर्शित करें। कपल का कहना है कि हम समुदाय की शक्ति में विश्वास करते हैं, और इस बिजनेस के माध्यम से हम इन कारीगरों को न केवल जीवित रहने बल्कि फलने-फूलने के लिए एक मंच प्रदान करने की उम्मीद रखते हैं।

मैं ऐसे लड़के को डेट करना पसंद करूंगी जो थोड़ा देसी हो

एक्ट्रेस ने राज शमानी के साथ उनके पॉडकास्ट पर बात करते हुए कहा, अभी तक मैं किसी गोरे व्यक्ति की ओर आकर्षित नहीं हुई हूं, लेकिन मुझे कैनेडियन एक्टर रयान गोसलिंग बहुत आकर्षक लगते हैं। आप हॉट हो सकते हैं लेकिन मैं किसी ऐसे व्यक्ति के प्यार में नहीं पड़ी हूं जो भारतीय नहीं है। मैं ऐसे लड़के को डेट करना पसंद करूंगी जो थोड़ा देसी हो। उन्होंने आगे कहा, ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं बहुत देसी हूं, मुझे चाहिए कि पार्टनर कम से कम हिंदी समझे। मेरे मुंह से हिंदी निकलने वाली है, मैं हमेशा इंग्लिश में बात नहीं कर सकती। मैं इंग्लिश गानों पर ज्यादा देर तक डांस नहीं कर सकती, मैं हिंदी गाने और पंजाबी गाने प्ले करना पसंद करती हूं।

इमरान हाशमी के साथ धमाल करती नजर आएंगी साई तम्हणकर

मराठी सिनेमा की चर्चित अदाकारा साई तम्हणकर अब इमरान हाशमी के साथ धमाल करती नजर आएंगी। इमरान की फिल्म में साई की एंट्री हो गई है। फिल्म का नाम है ग्राउंड जीरो। एक्सेल एंटरटेनमेंट की इस फिल्म में प्रतीक गांधी भी नजर आएंगे। साई इससे पहले भूमि पेडनेकर की ओटीटी पर रिलीज हुई फिल्म भक्षक में नजर आई, जिसमें उनके अभिनय को खूब सराहा गया। ग्राउंड जीरो के अलावा साई तम्हणकर फिल्म अग्नि में भी इमरान हाशमी के साथ नजर आएंगी। ग्राउंड जीरो के निर्माताओं ने इमरान के अपोजिट भूमिका के लिए साई को साइन कर लिया है। अभिनेत्री फिल्म में फीमेल लीड किरदार में दिखेंगी। एक्सेल एंटरटेनमेंट के साथ एक बार फिर काम करने को लेकर साई ने उत्साह जताया है। साई तम्हणकर ने कहा, बहुत ही खुशी हो रही है। यह सुंदर अहसास है, क्योंकि एक्सेल एंटरटेनमेंट एक प्रमुख प्रोडक्शन हाउस है, जिसके साथ हर कोई जुड़ना चाहता है। मुझे इसके साथ तीन बार काम करने का अवसर मिला है, जिसमें डब्बा कार्टेल भी शामिल है। यही कहूंगी कि यह मेरे करियर का महत्वपूर्ण हिस्सा है। साई ने अपने सह-कलाकार इमरान हाशमी और प्रतीक गांधी दोनों की दिल खोलकर तारीफ की। उन्होंने कहा, इमरान और प्रतिक दोनों शानदार कलाकार हैं। उनके साथ काम करने का मौका मिलना विशेषाधिकार है। मैं इस फिल्म को लेकर उत्साहित हूं और दर्शकों को भी कुछ दिलचस्प देखने को मिलने वाला है।

शादी करके सेटल होना चाहते हैं विजय देवरकोंडा

रश्मिका मंदाना के साथ डेटिंग की खबरों के बीच विजय देवरकोंडा ने मैरिज प्लान पर बात की है। उन्होंने कहा है कि वो जल्द शादी करना चाहते हैं। साथ ही उन्होंने पिता बनने की इच्छा भी जताई है। अपकमिंग फिल्म फैमिली स्टार के प्रमोशन के दौरान विजय से पूछा गया कि क्या वह जल्द ही शादी करने के लिए तैयार हैं। जवाब में विजय ने कहा- मैं भी शादी करना चाहता हूं और पिता बनना चाहता हूं। रिपोर्ट के अनुसार विजय ने यह भी कंफर्म किया है कि वो लव मैरिज ही करेंगे। लेकिन यह तभी होगा, जब उनके पेरेंट्स इसके लिए हामी भरेंगे। इससे पहले भी विजय और रश्मिका सेम लोकेशन पर छुट्टियां मनाते देखे गए हैं। साथ ही वो दोनों सोशल मीडिया पर एक दूसरे के फोटोज पर कमेंट भी करते हैं। यह सब देखकर फैंस के बीच अफेयर की खबरें और तूल पकड़ लेती हैं। इससे पहले भी विजय और रश्मिका सेम लोकेशन पर छुट्टियां मनाते देखे गए हैं। साथ ही वो दोनों सोशल मीडिया पर एक दूसरे के फोटोज पर कमेंट भी करते हैं। यह सब देखकर फैंस के बीच अफेयर की खबरें और तूल पकड़ लेती हैं।

पिछले लंबे वक्त से विजय का नाम एक्ट्रेस रश्मिका मंदाना के साथ जोड़ा जाता है। खबरें हैं कि दोनों लंबे समय से रिलेशनशिप हैं। हालांकि दोनों में से किसी ने भी इस बारे में खुलकर बात नहीं की है। कुछ समय पहले एक इंटरव्यू के दौरान विजय से उनके रोमांटिक रिलेशनशिप के बारे में पूछा गया तो उन्होंने ना इस बात पर हामी भरी थी और ना ही इनकार किया था।

फिल्म गीता गोविंदम के सेट पर बढ़ी थीं नजदीकियां

रिपोर्ट्स के मुताबिक, फिल्म गीता गोविंदम में साथ काम करने से विजय और रश्मिका के बीच नजदीकियां बढ़ी थीं। बाद में दोनों को फिल्म डियर कॉमरेड में भी देखा गया था। इस साल की शुरुआत में ऐसी खबरें थीं कि विजय और रश्मिका सगाई करने की तैयारी कर रहे हैं, लेकिन अभी तक इसकी कोई पुष्टि नहीं हुई है।

नो एंट्री के सीक्वल से अनिल कपूर बाहर

कई स्टार्स से सजी 'नो एंट्री' (2005) फिल्म सुपरहिट रही थी। निर्माता बोनी कपूर की इस कॉमेडी फिल्म में सलमान खान, अनिल कपूर, फरदीन खान, ईशा देओल, लारा दत्ता, बिपाशा बसु और सेलिना जेटली के अहम रोल थे। दर्शक इसे देख हंस-हंसकर लोट-पोट हो गए थे। इन दिनों 'नो एंट्री' के सीक्वल को लेकर फैंस में जबरदस्त क्रेज हैं। इस बीच फिल्ममेकर बोनी कपूर ने खुलासा किया है कि उनके छोटे भाई अनिल सीक्वल का हिस्सा बनना चाहते थे, लेकिन दुर्भाग्य से, कोई जगह नहीं थी। 'नो एंट्री 2' की कास्टिंग की खबर ऑनलाइन लीक होने के बाद से अनिल, बोनी से ठीक से बात नहीं कर रहे हैं। सीक्वल में वरुण धवन, अर्जुन कपूर और दिलजीत दोसांझ के लिए जाने की खबर है। बोनी ने जूम को दिए इंटरव्यू में बताया कि इससे पहले कि मैं अनिल को 'नो एंट्री' के सीक्वल और इसमें शामिल कलाकारों के बारे में बता पाता, वह गुस्सा हो गया क्योंकि खबर पहले ही लीक हो चुकी थी। यह दुर्भाग्यपूर्ण था कि यह लीक हो गया। मुझे पता है कि वह 'नो एंट्री' सीक्वल का हिस्सा बनना चाहता था, लेकिन जगह नहीं थी। मैं यह बताना चाहता था कि मैंने जो किया वह क्यों किया। वरुण और अर्जुन बहुत अच्छे दोस्त हैं। उनकी केमिस्ट्री कहानी में सामने आ सकती है और दिलजीत आज बड़े हैं। उनकी जबरदस्त फैन फॉलोइंग है। मैं इसे आज के समय में प्रासंगिक बनाना चाहता था। इसीलिए मैंने यह कास्टिंग की। इस प्रक्रिया में मेरा भाई अभी भी ठीक से बात नहीं कर रहा है। मुझे उम्मीद है कि यह सब जल्द ही सुलझ जाएगा।

11000 महंगा हुआ सोना

नईदिल्ली। वैसे तो देश में गोल्ड की खरीदारी सालभर होती है लेकिन कुछ ऐसे भी मौके होते हैं जब इसकी जबरदस्त डिमांड रहती है। उदाहरण के लिए धनतेरस के मौके पर गोल्ड की खरीदारी को शुभ माना जाता है। इसी तरह, अक्षय तृतीया पर भी गोल्ड की खरीदारी की जाती है। इस साल अक्षय तृतीया से पहले ही गोल्ड के रेट ने सारे पुराने रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं।

व्यापार

10 टुकड़ों में बंटने जा रहा है मल्टीबैगर स्टॉक

नईदिल्ली। बोनस स्टॉक पर दांव लगाने वाले निवेशकों के लिए अच्छी खबर है। इस हफ्ते क्यूपिड लिमिटेड बोनस स्टॉक के तौर पर ट्रेड करेगा। कंपनी एक शेयर पर 1 शेयर बोनस देने जा रही है।

संक्षिप्त समाचार

इकोस मोबिलिटी एंड हॉस्पिटैलिटी लि. ने आईपीओ के लिए सेबी के पास दाखिल किया डीआरएचपी

मुंबई, एजेंसी। इकोस (इंडिया) मोबिलिटी एंड हॉस्पिटैलिटी लिमिटेड (कंपनी) वित्त वर्ष 2023 के लिए परिचालन से आय और कर पश्चात लाभ (पैट) के लिहाज़ से भारत में कॉरपोरेट जगत को शोफर द्वारा चलाई जाने वाली (शोफर ड्रिवन) वाहन प्रदान करने वाली सबसे बड़ी और सबसे लाभदायक कंपनी रही (स्रोत- एफ एंड एस रिपोर्ट) और इसने ? 2 अंकित मूल्य (इक्विटी शेयर) के 18,000,000 इक्विटी शेयरों तक की प्रारंभिक सार्वजनिक पेशकश (आईपीओ) के लिए सेबी के पास ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) दाखिल किया है। कंपनी के प्रवर्तक राजेश लुम्बा, आदित्य लुम्बा, राजेश लुम्बा फैमिली ट्रस्ट और आदित्य लुम्बा फैमिली ट्रस्ट हैं। इस पेशकश के तहत 18,000,000 इक्विटी शेयरों (प्रस्तावित शेयर) तक की बिक्री पेशकश (ऑफर फॉर सेल-ओएफएस) शामिल है, जिसमें राजेश लुम्बा द्वारा 9,900,000 इक्विटी शेयर; और आदित्य लुम्बा द्वारा 8,100,000 इक्विटी शेयर तक (सेलिंग शेयरहोल्डर) की बिक्री पेशकश शामिल है। यह कंपनी पिछले 25 साल से अधिक समय से भारत में फॉर्च्यून 500 कंपनियों सहित कॉर्पोरेट ग्राहकों को किराए पर शोफर ड्रिवन कार (सीसीआर) सेवा और कर्मचारी परिवहन सेवा (ईटीएस) प्रदान कर रही है। कंपनी 9,000 से अधिक इकोनॉमी से लेकर लग्ज़री कार, मिनी वैन और लग्ज़री कोच के बेड़े का परिचालन करती है, जिसमें लग्ज़री वाहन (ऑडी, बीएमडब्ल्यू और मर्सिडीज-बेंज जैसे ऑटोमोबाइल ब्रांडों के वाहन सहित), इकॉनमी वाहन, प्रीमियम वाहन और बस/वैन जैसी विभिन्न श्रेणियां शामिल हैं। यह लगेज वैन, लिमोज़िन, विंटेज कारों और दिव्यांगों की विशिष्ट ज़रूरत के अनुरूप वाहन आदि जैसे विशेष वाहन भी प्रदान करती है।

बिमटेक सात देशों के छात्रों और पेशेवरों के लिए व्यावसायिक पाठ्यक्रम ऑनलाइन और ऑफलाइन पेश करेगा

नई दिल्ली , एजेंसी। भारत के प्रतिष्ठित बी-स्कूल बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी (बिमटेक) ने 7 देशों के छात्रों और पेशेवरों के लिए 8 प्रोफेशनल कोर्स की ऑनलाइन और ऑफलाइन पेशकश की है। इन कोर्स का उद्देश्य चार्टर्ड इंश्योरेंस इंस्टीट्यूट - एक्रीडेटेड प्रोफेशनल डवलपमेंट सेंटर द्वारा मान्यता प्राप्त सीआईआई योग्यताओं के समर्थन में ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों तरह से टीचिंग और लर्निंग करवाना है। बिमटेक चार्टर्ड इंश्योरेंस इंस्टीट्यूट के समन्वय और समर्थन के साथ भारत, श्रीलंका, बांग्लादेश, मालदीव, नेपाल, भूटान और म्यांमार में इच्छुक छात्रों और पेशेवरों को तैयार करने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करेगा। इसके अतिरिक्त, बीमा में प्रोफेशनल कोर्स जैसे - डब्ल्यू01 - जनरल इंश्योरेंस में अवॉर्ड, एम05 - इंश्योरेंस लॉ, 530 - इकोनॉमिक्स एंड बिजनेस, 820 - एडवांस क्लेम, एम97 - रीइंश्योरेंस, 992 - रिस्क मैनेजमेंट इन इंश्योरेंस, 995 - स्ट्रेटेजिक अंडरराइटिंग और 996 - स्ट्रेटेजिक क्लेम मैनेजमेंट शामिल हैं। सीआईआई एपीडीसी के कोर्स का ध्यान मुख्य रूप से दो क्षेत्रों पर है। 1. शिक्षण का व्यावहारिक मूल्यांकन, अद्यतन शिक्षण सामग्री और लर्निंग के समर्थन में उपयुक्त शिक्षण सुविधाओं के माध्यम से गुणवत्ता 2. विश्वसनीय और सक्षम ट्यूटर्स, मजबूत प्रबंधन प्रणालियां और छात्र सहायता सेवाओं के माध्यम से व्यावसायिकता का पोषण। साकाते खेतान ने कहा, सीआईआई एपीडीसी का दर्जा हासिल करने से किसी संस्थान की प्रतिष्ठा बढ़ती है, जिससे यह सीआईआई योग्यता के लिए विशेष रूप से टीचिंग और लर्निंग की सुविधाएं प्रदान करने में सक्षम होता है, साथ ही एक मान्यता प्राप्त गुणवत्ता बेंचमार्क को भी पूरा करता है।

साल की पहली तिमाही में सब अमीरों पर भारी पड़ा छुटकू

एलन मस्क को सबसे ज्यादा नुकसान

नई दिल्ली, एजेंसी। साल की पहली तिमाही खत्म होने जा रही है। इस दौरान दुनिया के अमीरों की लिस्ट में काफी उथलपुथल देखने को मिली है। साल की शुरुआत में एलन मस्क दुनिया के सबसे बड़े रईस थे। फिर जेफ बेजोस ने यह कुर्सी हथिया ली। लेकिन वह भी ज्यादा दिन तक इस पर टिक नहीं पाए और आजकल फ्रांस के बर्नार्ड अरनॉल्ट इस कुर्सी पर विराजमान हैं। वैसे इस साल सबसे ज्यादा कमाई की बात करें तो फेसबुक की पेरेंट कंपनी मेटा प्लेटफॉर्म्स के मार्क जकरबर्ग ने सबको पीछे छोड़ दिया है। ब्लूमबर्ग बिलिनेयर इंडेक्स के मुताबिक पहली तिमाही में उनकी नेटवर्थ में 44.6 अरब डॉलर यानी 37,18,89,74,10,000 रुपये की तेजी आई है। वह 173 अरब डॉलर की

नेटवर्थ के साथ साथ दुनिया के अमीरों की लिस्ट में चौथे नंबर पर हैं। जकरबर्ग के नाम दुनिया में सबसे कम उम्र में बिलिनेयर बनने का रेकॉर्ड है। जकरबर्ग मात्र 23 साल की उम्र में ही बिलिनेयर बन गए थे। उन्होंने साल 2004 में हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के अपने कुछ दोस्तों के साथ फेसबुक की स्थापना की थी जो आज दुनिया की सबसे बड़ी सोशल नेटवर्क साइट है। 14 मई 1984 को जन्मे जकरबर्ग 2007 में मात्र 23 साल की उम्र में दुनिया में सबसे कम उम्र के बिलिनेयर बन गए थे। उन्होंने मई 2012 में फेसबुक को पब्लिक कराया। जकरबर्ग ने इसके बाद पीछे मुड़कर नहीं देखा और अमीरों की लिस्ट में ऊपर चढ़ते गए। दुनिया के सबसे बड़े रईस अरनॉल्ट 48 साल की उम्र में बिलिनेयर बने थे। यानी जब वह इस मुकाम पर पहुंचे तो उनकी उम्र जकरबर्ग से दोगुनी से भी ज्यादा हो चुकी थी। अरनॉल्ट की नेटवर्थ में इस साल 23.9 अरब डॉलर की बढ़ोतरी हुई है और यह 231 अरब डॉलर पहुंच चुकी है।

एनवीडिया के फाउंडर जेंसन हुआंग दूसरे नंबर पर

इस साल सबसे ज्यादा कमाई करने के मामले में चिप बनाने वाली कंपनी एनवीडिया के फाउंडर जेंसन हुआंग दूसरे नंबर पर हैं। कंपनी के शेयरों में आई तेजी के चलते उनकी नेटवर्थ में 35.6 अरब डॉलर की तेजी आई है और वह 79.6 अरब डॉलर की नेटवर्थ के साथ अमीरों की लिस्ट में 19वें नंबर पर हैं। दुनिया के टॉप 10 अमीरों की बात करें तो इनमें से नौ की नेटवर्थ इस साल बढ़ी है। बेजोस की नेटवर्थ में इस साल 26.2 अरब डॉलर की तेजी आई है। वह 203 अरब डॉलर के साथ इस लिस्ट में दूसरे नंबर पर हैं। बिल गेट्स की नेटवर्थ में 13.5 अरब डॉलर, वॉरेन बफे की 19.2 अरब डॉलर, लैरी एलिसन की 16 अरब डॉलर और सर्गेई ब्रिन की 9.73 अरब डॉलर की तेजी आई है। इसी तरह मुकेश अंबानी की नेटवर्थ में 17.1 अरब डॉलर और गौतम अडानी की नेटवर्थ में 14.7 अरब डॉलर की तेजी आई है। टॉप 10 रईसों में नेटवर्थ गंवाने वाले एकमात्र शख्स मस्क हैं। इस साल उनकी नेटवर्थ में सबसे ज्यादा 40.1 अरब डॉलर की गिरावट आई है।

जेएसडब्ल्यू स्टील ने कर्नाटक संयंत्र में हॉट स्ट्रिप मिल चालू की

नई दिल्ली, एजेंसी। जेएसडब्ल्यू स्टील ने शनिवार को कर्नाटक के विजयनगर स्थित अपने एकीकृत इस्पात संयंत्र में हॉट स्ट्रिप मिल शुरू करने की घोषणा की। जेएसडब्ल्यू स्टील ने शेयर बाजार को बताया कि कंपनी ने 50 लाख टन की वार्षिक क्षमता वाली मिल से स्टील उत्पादों की पहली खेप भेजी है। कंपनी ने कहा कि उसकी पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी जेएसडब्ल्यू विजयनगर मेटालिक्स लिमिटेड (जेवीएमएल) ने आज विजयनगर संयंत्र में 50 लाख टन प्रतिवर्ष क्षमता के साथ अपनी हॉट स्ट्रिप मिल (एचएसएम) को चालू किया और पहली खेप भेजी। जेएसडब्ल्यू स्टील ने कहा कि यह संयंत्र 17 मार्च, 2024 को तैयार हुआ था और शुरुआती परीक्षण के बाद वाणिज्यिक विनिर्माण और बिक्री शुरू हो गई है।

एचडीएफसी बैंक में एक अप्रैल को बाधित हो सकती है एनईएफटी सर्विस

प्राइवेट बैंक ने अपने ग्राहकों को इस बारे में एक ईमेल भेजा है

फाइनेंशियल ईयर खत्म होने से जुड़े कामों के कारण सेवा में बाधा

नई दिल्ली, एजेंसी। प्राइवेट सेक्टर के सबसे बड़े लेंडर एचडीएफसी बैंक के लिए जरूरी खबर है। बैंक का कहना है कि नए फाइनेंशियल ईयर के पहले दिन यानी एक अप्रैल को उसकी एनईएफटी सर्विस बंद रह सकती है। बैंक ने इस बारे में ग्राहकों को जानकारी दी है। उसका कहना है कि फाइनेंशियल ईयर खत्म होने से जुड़ी प्रक्रियाओं के कारण एनईएफसी सर्विस में रुकावट आ सकती है। इसलिए ग्राहकों को सोमवार यानी एक अप्रैल को एनईएफटी के जरिए पैसा भेजने से बचना चाहिए। हालांकि कुछ चुनिंदा ग्राहकों के लिए एनईएफटी की सुविधा उपलब्ध रहेगी लेकिन इसमें भी देरी हो सकती है।

अगर आपको एक अप्रैल को एनईएफटी ट्रांसफर के जरिए सैलरी या अन्य पेमेंट्स मिलती है तो इसमें देरी हो सकती है। बैंक का कहना है कि उसके कस्टमर एक अप्रैल को एनईएफटी के बजाय आईएमपीएस, आरटीजीएस और यूपीआई से पैसे का लेनदेन कर सकते हैं। ग्राहकों को भेजे एक ईमेल में बैंक ने कहा कि फाइनेंशियल ईयर के खत्म होने से जुड़ी प्रॉसीडर्स के कारण एक अप्रैल को एनईएफटी ट्रांजैक्शन में देरी हो सकती है या यह उपलब्ध नहीं रहेगी। बैंक ने साथ ही एक कस्टमर केयर नंबर भी साझा किया है। उसका कहना है कि किसी तरह की असुविधा होने पर ग्राहक 18001600 और 18002600 पर कस्टमर सपोर्ट टीम से संपर्क कर सकते हैं।

क्या एक अप्रैल को खुले रहेंगे बैंक

अगर आप नए फाइनेंशियल ईयर के पहले दिन बैंक जाने की तैयारी कर रहे हैं तो आपकी जानकारी के लिए बता दें कि इस दिन सारे बैंक खुले नहीं रहेंगे। आरबीआई की गाइडलाइन के मुताबिक ईयर अकाउंट्स क्लोजिंग के कारण कई राज्यों में एक अप्रैल को बंद रहेंगे। मिजोरम, चंडीगढ़, सिक्किम, बंगाल, हिमाचल प्रदेश और मेघालय को छोड़कर बाकी अधिकांश राज्यों में बैंक बंद रहेंगे। इसलिए सोमवार को बैंक जाने से पहले बैंक होलिडेट की लिस्ट अच्छी तरह देख लें। साथ ही इस दिन आरबीआई में 2,000 रुपये के नोट को जमा करने या बदलने की सुविधा भी नहीं मिलेगी। दो अप्रैल से यह सुविधा फिर चालू की जाएगी।

एलपीजी सिलेंडर होगा सस्ता ! 6 महीने में तीसरी बार राहत के संकेत

नईदिल्ली, एजेंसी। 1 अप्रैल ने नए फाइनेंशियल ईयर की शुरुआत हो रही है। फाइनेंशियल ईयर के पहले दिन ही कई ऐसे बदलाव होंगे, जिसका सीधा असर आपकी जेब पर पड़ेगा। ऐसा ही एक बदलाव एलपीजी सिलेंडर की कीमत से जुड़ा है। दरअसल, सरकारी तेल कंपनियां हर महीने की पहली तारीख को एलपीजी सिलेंडर की कीमत को निर्धारित करती हैं। इसी कड़ी में अप्रैल महीने की एलपीजी सिलेंडर की कीमत तय होगी। लोकसभा चुनाव को देखते हुए ऐसा माना जा रहा है कि सिलेंडर की कीमत में कटौती हो सकती है।

बता दें कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महिला दिवस यानी पर 8 मार्च को एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में 100 रुपये की छूट देने की घोषणा की थी। पीएम मोदी ने कहा था- इससे नारी शक्ति का जीवन आसान होने के साथ ही करोड़ों परिवारों का आर्थिक बोझ भी कम होगा। यह कदम

पर्यावरण संरक्षण में भी मददगार बनेगा, जिससे पूरे परिवार का स्वास्थ्य भी बेहतर रहेगा। बता दें कि इस कटौती के बाद अब देश की राजधानी दिल्ली में एलपीजी सिलेंडर की कीमत 803 रुपये है। वहीं, उज्ज्वला योजना के लाभार्थियों को इस कीमत पर 300 रुपये की अतिरिक्त सब्सिडी मिलती है। ऐसे में लाभार्थियों के लिए एलपीजी सिलेंडर 503 रुपये में उपलब्ध है। मार्च महीने में पिछले छह महीने में दूसरी बार एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में कटौती की गई थी। अगस्त 2023 में रक्षाबंधन के मौके पर एलपीजी सिलेंडर की कीमत में 200 रुपये प्रति सिलेंडर की कटौती की गई थी। इसी तरह अक्टूबर 2023 में उज्ज्वला लाभार्थियों की सब्सिडी भी 200 रुपये से बढ़ाकर 300 रुपये कर दी गई थी।

अनिल अंबानी की कंपनी के शेयर में तूफानी तेजी

नईदिल्ली, एजेंसी। वित्त वर्ष 2024 के आखिरी सप्ताह में रिलायंस पावर के शेयरों में जबरदस्त तेजी देखी गई। 10 जनवरी 2024 से 13 मार्च 2024 तक बेस बिल्डिंग मोड में रहने के बाद रिलायंस एडीएजी (अनिल धीरूभाई अंबानी ग्रुप) की यह कंपनी इन दिनों रिलायंस कमर्शियल फाइनेंस द्वारा कर्ज में कटौती और पूंजी निवेश को लेकर खबरों में है। इससे रिलायंस पावर के शेयरों में जोरदार खरीदारी हुई। 13 मार्च 2024 को 20.40 प्रति शेयर के स्तर पर समाप्त होने के बाद अनिल अंबानी की कंपनी के शेयर की कीमत एनएसई पर 28.25 प्रति शेयर के स्तर तक पहुंच गई है। यानी आखिरी सप्ताह में लगभग 40 प्रतिशत की तेजी आई है। हालांकि,

रिलायंस-ष्ठत्र कंपनी के स्टॉक ने पोस्ट-कोविड रिबाउंड में मजबूत बढ़त दिखाई है। पिछले चार सालों में एनएसई पर रिलायंस पावर के शेयर की कीमत 1.20 प्रति शेयर से बढ़कर 28.25 प्रति शेयर के स्तर पर पहुंच गई है। इस समय में लगभग 2,250 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है।

बता दें कि रिलायंस पावर के शेयरों को अपने निवेशकों के खोए हुए पैसे को वापस करने के लिए एक लंबा सफर तय करना होगा, जो शेयर लिस्टिंग के समय शेयर में निवेश किया गया था। रिलायंस पावर आईपीओ जनवरी 2008 में 405 से 450 प्रति इक्विटी शेयर के प्राइस बैंड पर लॉन्च किया गया था और यह बीएसई पर 547.80 और एनएसई पर 530 पर लिस्ट हुआ था। शेयर लिस्टिंग के बाद रिलायंस पावर को 3~5 बोनस शेयर भी दिए गए।

मैरिंगो सीआईएमएस हॉस्पिटल ने रीनल डिनेर्वेशन थेरेपी की शुरुआत कर बड़ी उपलब्धि हासिल की

अहमदाबाद मुंबई, एजेंसी। मैरिंगो सीआईएमएस हॉस्पिटल, अहमदाबाद को अस्पताल में एक महत्वपूर्ण अवसर यानी रीनल डिनेर्वेशन थेरेपी प्रक्रिया के शुभारंभ के बारे में जानकारी देते हुए गौरव का अनुभव हो रहा है। यह इस संस्थान के साथ-साथ गुजरात के पूरे चिकित्सा समुदाय के लिए एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। मैरिंगो सीआईएमएस हॉस्पिटल भारत के प्रमुख अस्पतालों में से एक है, जिसने अक्टूबर 2013 की शुरुआत में सिंपलिसिटी कैथेटर का उपयोग करके अहमदाबाद में देश की पहली चार रीनल डिनेर्वेशन प्रक्रियाओं का प्रदर्शन किया था। यह नवीनतम टेक्नोलॉजी को अपनाने वाला गुजरात का पहला अस्पताल है, जहां पूरी दुनिया में बड़े पैमाने पर मौजूद उच्च रक्तचाप के मरीजों के इलाज के लिए अभिनव तरीके के सिंपलिसिटी स्पाइरल रीनल डिनेर्वेशन सिस्टम का उपयोग किया जा रहा है।

रिलायंस इंडस्ट्रीज को सबसे ज्यादा फायदा, टीसीएस को घाटा

नई दिल्ली, एजेंसी। पिछले हफ्ते शेयर बाजार में केवल तीन ही दिन कारोबार हुआ। इस दौरान बीएसई सेंसेक्स में 819.41 अंक यानी 1.12 फीसदी की तेजी रही। इससे 10 सबसे मूल्यवान कंपनियों में से सात का बाजार पूंजीकरण संयुक्त रूप से पिछले सप्ताह 67,259.99 करोड़ रुपये बढ़ा। इसमें सबसे ज्यादा फायदे में मुकेश अंबानी की रिलायंस इंडस्ट्रीज रही। कंपनी का मार्केट कैप पिछले हफ्ते 45,262.59 करोड़ रुपये बढ़कर 20,14,010.63 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। इसी तरह भारतीय स्टेट बैंक का बाजार पूंजीकरण 5,533.26 करोड़ रुपये बढ़कर 6,71,666.29 करोड़ रुपये हो गया। भारतीय जीवन बीमा निगम का बाजार पूंजीकरण 5,218.12 करोड़ रुपये बढ़कर 5,78,484.29 करोड़ रुपये और आईसीआईसीआई बैंक का मूल्यांकन 4,132.67 करोड़ रुपये बढ़कर 7,69,542.65 करोड़ रुपये हो गया। एचडीएफसी बैंक का बाजार पूंजीकरण 4,029.69 करोड़ रुपये बढ़कर 11,00,184.60 करोड़ रुपये और हिंदुस्तान यूनिलीवर का 2,819.51 करोड़ रुपये बढ़कर 5,32,946.04 करोड़ रुपये हो गया। आईटीसी का एमकैप 264.15 करोड़ रुपये बढ़कर 5,35,032.74 करोड़ रुपये हो गया। हालांकि, देश की सबसे बड़ी आईटी कंपनी टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज का बाजार पूंजीकरण 10,691.45 करोड़ रुपये घटकर 14,05,102.38

करोड़ रुपये और इन्फोसिस का 4,163.13 करोड़ रुपये कम होकर 6,22,117.38 करोड़ रुपये रहा। भारती एयरटेल का मूल्यांकन 3,817.18 करोड़ रुपये घटकर 6,95,038.48 करोड़ रुपये रहा।

टॉप 10 कंपनियां

सबसे मूल्यवान कंपनियों की सूची में रिलायंस इंडस्ट्रीज शीर्ष पर रही। इसके बाद क्रमश~ टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, भारती एयरटेल, भारतीय स्टेट बैंक, इन्फोसिस, एलआईसी, आईटीसी और हिंदुस्तान यूनिलीवर का स्थान रहा। दुनिया की टॉप 100 कंपनियों की बात करें तो उनमें भारत की केवल तीन कंपनियों को जगह मिली है।

एक्ज़ोनोबेल ने रॉकिंग स्टार यश को ड्यूलक्स वेदरशील्ड का नया ब्रांड एंबेसडर बनाया

अपना इट्स कलरफुल, इट्स पॉवरफुल अभियान लॉन्च किया

अग्रणी पेंट्स और कोटिंग्स कंपनी और ड्यूलक्स पेंट्स के निर्माता, एक्ज़ोनोबेल इंडिया ने आज अभिनेता यश को भारत में ड्यूलक्स वेदरशील्ड एक्सटीरियर इमल्शन का नया ब्रांड एंबेसडर बनाया

मुंबई, एजेंसी। एक्ज़ोनोबेल इंडिया के चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर, राजीव राजगोपाल ने कहा, हम रॉकिंग स्टार यश का एक्ज़ोनोबेल परिवार में स्वागत करने के लिए बहुत उत्साहित हैं। वो ड्यूलक्स वेदरशील्ड की बेजोड़ प्रदर्शन और ओरिजिनलिटी की भावना का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो इनोवेशन और आत्मविश्वास के साथ आती है। सच्चे सुपरस्टार, यश को हमारे प्रतिष्ठित ड्यूलक्स वेदरशील्ड एक्सटीरियर इमल्शन की तरह ही पूरे भारत में लाखों फैन्स बहुत प्यार करते हैं।

यश की मदद से एक्ज़ोनोबेल का उद्देश्य सुंदरता और बेहतरीन परफ़ॉर्मेंस चाहने वाले भारतीय ग्राहकों के साथ और अपने फ्लैगशिप ड्यूलक्स वेदरशील्ड एक्सटीरियर इमल्शन के संबंध को मजबूत बनाना है। सुपरस्टार यश ने कहा, हर किरदार

में प्रेरित करने, दिल जीतने और मनोरंजन करने की अपनी क्षमता होती है। मेरी सबसे बड़ी शक्ति अपने दर्शकों की उम्मीदों पर खरा उतरने में है। ड्यूलक्स वेदरशील्ड एक्सटीरियर इमल्शन की तरह ही मैं भी इस शक्ति को केंद्रित करने और अपने मूल्यों के प्रति सच्चा रहते हुए लोगों के जीवन में रंग भरने में विश्वास करता हूँ। मुझे ड्यूलक्स वेदरशील्ड के 'इट्स कलरफुल, इट्स पॉवरफुल' की कहानी को जीवंत करने की खुशी है। जब जिंदगी किसी एक रंग में नहीं जी जाती है, तो फिर हमारे घर में केवल एक रंग क्यों हो?

मुलेन लिंटास दिल्ली द्वारा निर्मित यह अभियान एक रिपोर्टर के साथ शुरू होता है, जो यश से एक सवाल पूछता है कि कलरफुल पॉवरफुल कैसे हो सकता है। यश अपनी वास्तविक लार्जर-दैन-लाइफ शैली में सभी मानकों - तेज धूप, भारी बारिश, और भयानक रेतीले तूफ़ान में ड्यूलक्स वेदरशील्ड पॉवरफ्लेक्स का कड़ा परीक्षण करते हैं। अपनी ट्रिपल डिफेंस टेक्नोलॉजी के साथ ड्यूलक्स वेदरशील्ड पॉवरफ्लेक्स का हर रंग सुनिश्चित करता है कि घरों के एक्सटीरियर लंबे समय तक जीवंत और सुरक्षित बने रहें, जो इट्स कलरफुल, इट्स पॉवरफुल को प्रदर्शित करता है।

रोहित तोतला, मार्केटिंग एवं सेल्स यूनिट डायरेक्टर - पेंट्स, एक्ज़ोनोबेल इंडिया ने कहा, ड्यूलक्स वेदरशील्ड 25 सालों से ज्यादा समय से घरों के एक्सटीरियर के लिए अग्रणी टेक्नोलॉजी लेकर आ रहा है। भारत में एक्ज़ोनोबेल के डेकोरेटिव पेंट व्यवसाय में सबसे ज्यादा योगदान एक्सटीरियर इमल्शन से मिलता है। हम अपने ब्रांड के फुटप्रिंट बढ़ाते हुए यश की शक्ति के साथ ग्राहकों से अपना जुड़ाव मजबूत बनाना चाहते हैं।

इट्स कलरफुल, इट्स पॉवरफुल के बारे में वंदना कृष्णिया, मार्केटिंग डायरेक्टर, डेकोरेटिव पेंट्स - साउथ एशिया, एक्ज़ोनोबेल ने कहा, त्योहार हों, उत्सव, शहरों की सदियों पुरानी पहचान, जैसे ब्लू सिटी, या हमारा घर और जीवन, हर भारतीय पहचान में रंग गहराई से समाए हुए हैं। ड्यूलक्स वेदरशील्ड पॉवरफ्लेक्स की शक्तिशाली साख के साथ यह अभियान रंगों के साथ भारत के प्यार के बारे में है, जिसके प्रदर्शन के लिए यश से अच्छा और कौन हो सकता है। फैन्स और पेंट के ग्राहकों को यश इस हफ्ते से एक बोल्ड अवतार में दिखाई देंगे, जो इट्स कलरफुल, इट्स पॉवरफुल अभियान को जीवंत करेंगे, जिसमें एक्सटीरियर इमल्शन रेंज की सुपर-प्रीमियम ड्यूलक्स वेदरशील्ड पॉवरफ्लेक्स का प्रदर्शन होगा। यह अभियान भारत में पारंपरिक और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर लॉन्च किया जाएगा।

हैदराबाद ने गुजरात को दिया था 163 रन का टारगेट

अभिषेक शर्मा और अब्दुल समद ने 29-29 रन बनाए, मोहित शर्मा को तीन विकेट

अहमदाबाद (एजेंसी)। सनराइजर्स हैदराबाद ने इंडियन प्रीमियर लीग-2024 के 12वें मुकाबले में गुजरात टाइटंस को जीत के लिए 163 रन का टारगेट दिया गया था। टीम ने अहमदाबाद में टॉस जीतकर बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 7 विकेट पर 163 रन बनाए। अभिषेक शर्मा और अब्दुल समद ने 29-29 रन बनाए। हेनरिक क्लासन ने 24 रन का योगदान दिया। मोहित शर्मा ने तीन विकेट झटके। अजमतुल्लाह ओमरजई, उमेश यादव, राशिद खान और नूर अहमद को एक-एक विकेट मिला।

मुंबई के फैन ने फोड़ा सीएसके के सपोर्टर का सिर, इलाज के दौरान बुजुर्ग की मौत

मुंबई (एजेंसी)। आईपीएल 2024 का रोमांच क्रिकेट फैंस के सिर चढ़कर बोल रहा है। इस रोमांच की बीच दिल को झकझोर कर देने वाली खबर सामने आई है। आईपीएल के एक मैच के दौरान एक क्रिकेट फैंस का सिर फोड़ दिया। इसके बाद बुजुर्ग फैन को हॉस्पिटल में एडमिट करवाया गया लेकिन गंभीर चोट लगने के कारण उसकी मौत हो गई। इस मामले में पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। दरअसल, बीते बुधवार को सनराइजर्स हैदराबाद और मुंबई इंडियंस के बीच आईपीएल 2024 का 8वां मैच खेला गया। इस मैच में पहले बैटिंग करते हुए हैदराबाद ने 277 रन बनाए। जबाव में मुंबई की टीम 246 रनों पर ढेर हो गई। मुंबई इंडियन की ओर से रोहित शर्मा 26 रन बनाकर आउट हो गए। रोहित के आउट होने के बाद आउट होने के बाद बंदोपंत बापसो टिबिले (उम्र 63 वर्ष) नाम के व्यक्ति ने मुंबई के फैंस से जीत को लेकर सवाल पूछा। इस पर वह इतना चिढ़ गए कि उन्होंने बुजुर्ग के सिर पर डंडे से प्रहार कर दिया। बुजुर्ग फैन गंभीर रुप से घायल हो गया। उन्हें इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया लेकिन इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई।

आई लीग-रीयल कश्मीर एफसी ने नेरोका एफसी को हराया

श्रीनगर (एजेंसी)। रीयल कश्मीर एफसी ने आई लीग फुटबॉल के मैच में नेरोका एफसी को 3 . 0 से हराकर उसे दूसरी श्रेणी में धकेल दिया। कश्मीर के लिए नोहेरे क्रिजो ने 35वें, हैदर युसूफ ने 45वें और शहर शाहीन ने 67वें मिनट में गोल दागे। इस हार के बाद मणिपुर की नेरोका एफसी 21 मैचों में 13 अंक लेकर 12वें स्थान पर है। इस सत्र में उसने 4 मैच जीते, एक ड्रॉ खेला और 16 गंवाए। अब उसे तीन ही मैच खेलने है और सभी जीतने पर भी वह दूसरी श्रेणी में खिसकने से नहीं बच सकती। वहीं, कश्मीर की टीम ने चार ड्रॉ खेलने के बाद जीत दर्ज की । उसका अपराजेय अभियान नौ मैचों का हो गया है । उसके 22 मैचों में 40 अंक है और वह तालिका में दूसरे स्थान पर है।

शाहिद अफरीदी के दामाद शाहीन अफरीदी की गजब बेइज्जती

5 मैच बाद ही छीनी कप्तानी, बाबर आजम फिर बॉस

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट में कुछ भी असंभव नहीं है। बोर्ड कप्तान को कपड़े की तरह बदलता है।अब शाहीन अफरीदी को ही देख लीजिए।उन्हें वनडे वर्ल्ड कप के बाद बाबर आजम की जगह पाकिस्तान टी 20 क्रिकेट टीम का कप्तान बनाया गया था। माना जा रहा था कि वह टी20 वर्ल्ड में पाकिस्तान क्रिकेट टीम की अगुवाई करेंगे। लेकिन उससे पहले ही खेल हो गया। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने इंटरनेशनल टी20 टीम का कप्तान बदल दिया है।अब शाहीन अफरीदी की जगह बाबर आजम नए कप्तान होंगे। यानी शाहिद अफरीदी के दामाद की घनघोर बेइज्जती हुई है। उन्होंने हाल ही में पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड को चेतावनी दी थी कि अगर कप्तान बनाया है तो समय भी दो। लेकिन

उनकी इस धौंस का कोई फायदा नहीं हुआ। बोर्ड ने पाकिस्तान सुपर लीग में फेल रहने वाले शाहीन को फायर कर दिया है।उनकी जगह एक बार फिर बाबर आजम को बॉस बना दिया है।

पीसीबी अध्यक्ष ने बाबर को दिया था फिर से कप्तानी का ऑफर

पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने बाबर आजम को सफेद गेंद के प्रारूप में कप्तानी की पेशकश दी थी। हालांकि बाबर ने कप्तानी स्वीकार करने के लिए कुछ शर्तें भी रखी थीं, जिसमें कोचों की नियुक्ति में भी उनकी राय लेना शामिल है। बाबर ने यह भी कहा है कि उन्हें तीनों प्रारूपों में टीम की कमान सौंपी जानी चाहिए। फिलहाल बाबर आजम को अभी सिर्फ वाइट बॉल क्रिकेट का कप्तान बनाया गया है।

बाबर आजम की कप्तानी में कैसा रहा पाकिस्तान का रिकॉर्ड?

बता दें कि बाबर आजम की कप्तानी में पाकिस्तान क्रिकेट टीम कोई भी आईसीसी ट्रॉफी नहीं जीत पाई है। 2021 टी20 वर्ल्ड कप में सेमीफाइनल तो 2022 टी20 वर्ल्ड कप में पाकिस्तान फाइनल तक पहुंची थी। वहीं 2023 के वनडे वर्ल्ड कप में पाकिस्तान अंतिम 4 में भी अपनी जगह नहीं बना पाई थी।

पीसीबी लाल गेंद और सफेद गेंद प्रारूप के लिए अलग-अलग विदेशी कोच नियुक्त करेगा: सूत्र

लाहौर (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने लाल गेंद और सफेद गेंद प्रारूपों के लिए अलग-अलग विदेशी कोच नियुक्त करने का फैसला किया है और सूत्रों के अनुसार इसमें ऑस्ट्रेलिया के पूर्व तेज गेंदबाज जेसन गिलेस्पी और पूर्व दक्षिण अफ्रीकी बल्लेबाज गैरी कर्स्टन को संभावित उम्मीदवारों के रूप में शामिल किया गया है।

पीसीबी ने शनिवार को आधिकारिक तौर पर लाल गेंद और सफेद गेंद कोच के पदों के लिए विज्ञापन जारी किया। इच्छुक उम्मीदवार (विदेशी और स्थानीय) 15 अप्रैल तक आवेदन कर सकते हैं और उनके पास न्यूनतम लेवल दो कोचिंग की पात्रता होने के अलावा घरेलू, अंतरराष्ट्रीय या फ्रेंचाइजी टीम को कोचिंग देने का कम से कम पांच साल का अनुभव होना चाहिए। इसमें कहा गया है कि उच्च स्तर की कोचिंग पात्रता वाले उम्मीदवारों को नियुक्तियों में प्राथमिकता दी जाएगी।

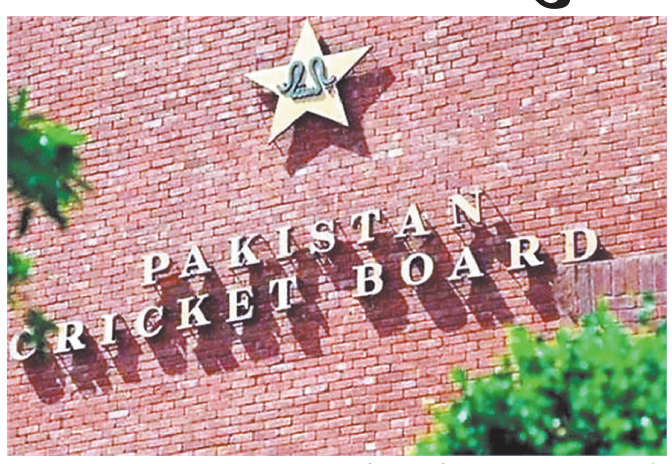

पीसीबी के एक सूत्र ने बताया कि विज्ञापन में आवेदन आमंत्रित किए गए हैं लेकिन बोर्ड ने कर्स्टन और गिलेस्पी के साथ बातचीत की है। बोर्ड को उनके आवेदन का इंतजार है ताकि उन्हें दीर्घकालिक आधार पर नियुक्त किया जा सके। सूत्र के अनुसार भारतीय टीम को कोचिंग दे चुके कर्स्टन सफेद गेंद प्रारूप (सीमित ओवरों की टीम) के लिए चुना गया है, जबकि गिलेस्पी को लाल गेंद (टेस्ट) टीम का मुख्य कोच बनाए जाने की उम्मीद है।

सूत्र ने कहा कि पीसीबी अध्यक्ष मोहसिन नकवी सब कुछ तयशुदा तरीके से कर रहे थे और उन्होंने सभी घटनाक्रमों के बारे में बोर्ड ऑफ गवर्नर्स को सूचित भी कर दिया था। सूत्र ने कहा, 'उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए विज्ञापन दिया है कि जो भी कोच के रूप में नियुक्त किया जाता है, उसे अपनी योग्यता दिखाने के लिए उचित अनुबंध और कार्यकाल दिया जाए ताकि उन्हें किसी भी अध्यक्ष की इच्छा और पसंद के अनुसार बदला नहीं जा सके।

पिछले काफी समय में यह पहली बार है जब पीसीबी ने राष्ट्रीय टीम के कोच पद के लिए विज्ञापन दिया है। इससे पहले जका अशरफ और नजम सेठी के कार्यकाल में बिना किसी विज्ञापन के कोच को नियुक्त किया गया था। यहां तक की पूर्व अध्यक्ष रमीज राजा ने भी विदेशी सलाहकारों को बिना किसी विज्ञापन के नियुक्त किया था।

धोनी का यह आखिरी आईपीएल?, पूर्व कप्तान खुद भी दे चुके हैं संकेत

चेन्नई (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय और टी20 फ्रेंचाइजी क्रिकेट के सबसे सफल कप्तानों में से एक महेंद्र सिंह धोनी इस साल आईपीएल को अलविदा कह सकते हैं। पिछले कुछ वर्षों से उनके आईपीएल से संन्यास की योजना भी चल रही है लेकिन टीम को सफल कप्तान ना मिलने की वजह से वह टीम के साथ बने हुए हैं। पिछले साल उन्होंने टीम को पांचवां खिताब दिलाया था जबकि उससे पहले 2022 में रविंद्र जडेजा को कप्तानी सौंपी गई थी जो सही फैसला साबित नहीं हुआ था। लेकिन इस बार 2024 में सीएसके को एक बार फिर से रुतुराज गायकवाड़ के रूप में नया कप्तान मिला है जिन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया है। ऐसे में हो सकता है कि धोनी का यह आखिरी आईपीएल हो। चाहे वह आईपीएल से संन्यास ले लें लेकिन वह टीम के साथ बने रहेंगे और उनके मार्गदर्शन में अगली पीढ़ी सीएसके के लिए काम करेगी।

सबसे सफल कप्तान

उन्होंने सबसे ज्यादा मैचों (226) में कप्तानी की है और 100 से ज्यादा मैच जीते हैं। उनकी अगुवाई में उनकी टीम ने 133 मैच (चेनई सुपर किंग्स ने 128 और राइजिंग पुणे सुपर सुपरजाएंट्स ने 5) जीते हैं। धोनी की अगुवाई में चेन्नई सुपर किंग्स 10 बार फइनल में पहुंची और 5 बार खिताब अपने नाम किया। रोहित शर्मा की अगुवाई में मुंबई इंडियन्स ने भी पांच बार खिताब जीते हैं लेकिन वह रनर-अप केवल एक बार ही बनी।

आइकॉन प्लेयर छोड़ नीलामी में जाना

2008 में आईपीएल की शुरुआत में पहली बार क्रिकेटरों पर बोली लगी। इस दौरान 5 टीमों ने अपने 5 आइकॉन खिलाड़ी (सचिन तेंदुलकर, सौरव गांगुली, राहुल द्रविड़, युवराज सिंह और वीरेंद्र सहवाग) चुने लेकिन धोनी ने नीलामी में उतरने का फैसला किया। इस पर बात करते हुए धोनी ने एक शो में कहा था, मेरे पास दो-तीन टीमों का आइकॉन प्लेयर बनने का मौका था। लेकिन मैंने प्लेयर्स बिड में उतरने का फैसला किया। मुझे उम्मीद थी कि बिड में उतरने से कम से कम 1 मिलियन डॉलर मिल सकते हैं।

साइना ने कांग्रेस नेता की महिला विरोधी टिप्पणी की निंदा की, सोशल मीडिया पर लिखी ये बात

बेंगलुरु(एजेंसी)। स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी साइना नेहवाल ने दावणगेरे सीट से भाजपा उम्मीदवार गायत्री सिद्धेश्वर पर की गई महिला विरोधी टिप्पणी करने के लिए राज्य के अनुभवी कांग्रेस नेता शमनूर शिवशंकरप्पा की आलोचना की। दावणगेरे दक्षिण से 92 वर्षीय मौजूदा विधायक शिवशंकरप्पा ने कहा था कि पूर्व केंद्रीय मंत्री और मौजूदा सांसद सिद्धेश्वर जीएम की पत्नी गायत्री 'केवल रसोई में खाना बनाना जानती हैं।

उनकी टिप्पणी पर आपत्ति जताते हुए नेहवाल ने अपने 'एक्स' पर पोस्ट किया, 'कर्नाटक के एक शीर्ष नेता शमनूर शिवशंकरप्पा जी ने कहा है कि महिलाओं को रसोई तक ही सीमित रहना चाहिए। दावणगेरे से उम्मीदवार गायत्री सिद्धेश्वरा पर की गई इस लैंगिक टिप्पणी की कम से कम ऐसी पार्टी से उम्मीद नहीं की जा सकती जो कहते हैं कि लड़की हूं, लड़ सकती हूं।

लंदन ओलंपिक 2012 में कांस्य पदक जीतने वाली 34 वर्षीय नेहवाल ने कहा कि जब देश में महिलायें हर क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ने की ख्वाहिश रखती हैं तो महिलाओं के खिलाफ इस तरह की द्वेषपूर्ण टिप्पणी परेशान करने वाली हैं। उन्होंने लिखा, 'जब मैंने खेल के मैदान पर भारत के लिए पदक जीते तो कांग्रेस पार्टी मुझसे क्या चाहती थी, मुझे क्या करना चाहिए था? इस तरह क्यों कहा जा रहा है, जब सभी लड़कियां और महिलाएं किसी भी क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि हासिल करने का सपना देखती हैं।

नेहवाल ने लिखा, 'एक तरफ हम नारी शक्ति को वंदन कर रहे हैं। हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सर के नेतृत्व में महिला आरक्षण विधेयक पारित किया गया है और दूसरी तरफ नारी शक्ति का अपमान और महिला विरोधी लोग। यह बहुत ही परेशान करने वाला है।% शिवशंकरप्पा ने हाल में कहा, 'वह (गायत्री) ठीक से बोलना भी नहीं जानती। वह घर पर खाना पकाने के लिए फिट है।

बोपन्ना-इबडेन की जोड़ी ने जीता मियामी ओपन का खिताब, रैंकिंग में शीर्ष स्थान पर वापसी की

मियामी (एजेंसी)। भारत के स्टार टेनिस खिलाड़ी रोहन बोपन्ना ने सबसे उम्रदराज एटीपी मास्टर्स 1000 चैंपियन बनने के अपने रिकॉर्ड में सुधार करते हुए ऑस्ट्रेलिया के जोड़ीदार मैथ्यू इबडेन के साथ यहां मियामी ओपन में पुरुष युगल का खिताब जीता।

इस साल अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए 44 साल बोपन्ना और इबडेन की जोड़ी ने शुरुआती सेट में पिछड़ने के बाद हार्ड रॉक स्टेडियम में क्रोएशिया के इवान डोडिग और अमेरिका के ऑस्टिन क्राजिसेक की जोड़ी पर 6-7(3), 6-3, 10-6 से रोमांचक जीत हासिल की। इस जीत के साथ बोपन्ना ने पिछले साल बनाए अपने ही रिकॉर्ड में सुधार किया। उन्होंने बीते साल 43 बरस की उम्र में इंडियन वेल्स खिताब जीता था। उन्होंने इसके साथ ही युगल रैंकिंग में शीर्ष स्थान भी हासिल किया।

बोपन्ना ने जीत के बाद कहा, 'यह आश्चर्यजनक है। हम इन बड़े आयोजनों में अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं, हम इसी के लिए खेलते हैं। इस साल ऑस्ट्रेलियाई ओपन में अपना पहला युगल ग्रैंड स्लैम खिताब जीतने वाले बोपन्ना ने कहा, 'मैं मास्टर्स 1000 और ग्रैंड स्लैम में अच्छा प्रदर्शन करना चाहता हूं।

उस रिकॉर्ड को बरकरार रखना और बाकी सभी को कड़ी टक्कर देना अच्छा है।

यह बोपन्ना का 14वां एटीपी मास्टर्स 1000 फाइनल था। इस अनुभवी भारतीय खिलाड़ी का यह 63वां एटीपी टूर स्तर का फाइनल और 26वां युगल खिताब था। बोपन्ना ने इस दौरान एक और उपलब्धि हासिल की। वह लिएंडर पेस के बाद सभी 9 एटीपी मास्टर्स स्पर्धाओं के फाइनल में पहुंचने वाले दूसरे भारतीय बन गए हैं।

155.8 किमी की रफ्तार से गेंद फेंकने वाले मयंक यादव ने कहा- गति मुझे उत्साहित करती है

लखनऊ(एजेंसी)। भारत के नए तेज गेंदबाजी सनसनी मयंक यादव को गति रोमांचित करती है और वह बचपन से जेट विमान, रॉकेट और सुपर बाइक की गति की कल्पना कर उत्साहित होते रहे हैं। दिल्ली के इस 21 साल के गेंदबाज ने शनिवार को लगातार 150 किलोमीटर से अधिक रफ्तार की गेंद फेंक कर पंजाब किंग्स के बल्लेबाजों को परेशान किया।

उन्होंने जॉनी बेयरस्टो, प्रभसिमरन सिंह और जितेश शर्मा जैसे अनुभवी बल्लेबाजों का विकेट झटक कर अपने आईपीएल (इंडियन प्रीमियर लीग) पदार्पण को यादगार बनाया। अपने चार ओवर में 27 रन देकर तीन विकेट लेने वाले इस गेंदबाज ने पंजाब की पारी के 12वें ओवर में 155.8 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से गेंद डाली, जो मौजूदा आईपीएल सत्र का सबसे तेज गेंद है।

मयंक ने मैच के बाद कहा, 'क्रिकेट के अलावा सामान्य जीवन में भी मुझे ऐसी चीजें पसंद हैं जिनकी गति अधिक हो। चाहे वह रॉकेट हो, हवाई जहाज हो या सुपर बाइक, गति मुझे उत्साहित करती है। बचपन में मुझे जेट विमान पसंद थे और उनसे प्रेरणा मिलती थी। पंजाबी बाग के इस गेंदबाज ने कहा, 'मैंने इससे पहले कभी भी 156 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से गेंद नहीं फेंकी। मैंने मुश्ताक अली (घरेलू टी20 ट्रॉफी) के दौरान 155 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से गेंदबाजी की है लेकिन यह मेरी सबसे तेज गेंद थी।

मयंक को लखनऊ की टीम ने आईपीएल 2022 से पहले चुना था। उन्होंने तब सिर्फ दो लिस्ट ए मैच खेले थे। वह 2022 सत्र में आईपीएल का एक भी मैच नहीं खेल सके थे और पिछले साल मांसपेशियों में खिंचाव के कारण वह पूरे सत्र से बाहर थे। उन्होंने चोट से उबरने के बाद 50 ओवर प्रारूप में खेले जाने वाले देवधर ट्रॉफी में उत्तर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हुए अनुभवी राहुल त्रिपाठी का मिडिल स्टंप उखाड़ दिया था।

उन्होंने कहा, चोट तेज गेंदबाजों के जीवन का हिस्सा हैं, वे आपके दोस्त हैं। पिछले एक-डेढ़ साल में मुझे दो-तीन बड़ी चोटें लगीं। यह मेरे लिए थोड़ा निराशाजनक भी था। इस युवा गेंदबाज ने कहा, 'पिछले सत्र में भी मैं चोट के कारण आईपीएल में नहीं खेल पाया था। मुझे पसलियों में फ्रैक्चर के साथ साइड स्ट्रेन की चोट थी। यह चोट मुझे विजय हजारे ट्रॉफी के दौरान लगी थी। मेरा प्रयास है कि मैं अभ्यास और शारीरिक रूप से रिकवरी और खुद पर अधिक ध्यान दूं।

मयंक दक्षिण अफ्रीका के पूर्व तेज गेंदबाज डेल स्टेन से काफी प्रेरित है। उन्होंने कहा, 'मैं केवल एक ही तेज गेंदबाज से प्रेरणा लेता हूं और वह डेल स्टेन हैं। वह मेरे आदर्श हैं और मैं उन्हें बहुत मानता हूं। उन्होंने कहा कि अपने पदार्पण मैच के दौरान उन्हें कोई दबाव या घबराहट महसूस नहीं हुई।

मयंक ने कहा, 'मेरे डेब्यू को लेकर काफी उत्साह था। पिछले दो साल से मैं सिर्फ एक ही चीज की कल्पना कर रहा हूं कि जब मैं डेब्यू करूंगा तो पहली गेंद फेंकने पर मुझे कैसा महसूस होगा। हर किसी ने कहा कि कुछ तो होगा दबाव या घबराहट लेकिन मुझे यह बिल्कुल महसूस नहीं हुआ। उन्होंने कहा, 'जब मेरे कप्तान ने मुझे पहला ओवर फेंकने के लिए कहा तो मुझे अपने अंदर महसूस हुआ कि मैं यहीं का हूं और काफी आत्मविश्वास था।

अशोक कुमार को लाइफटाइम अचीवमेंट, सलीमा और हार्दिक वर्ष के सर्वश्रेष्ठ हॉकी खिलाड़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। युवा मिडफील्डर हार्दिक सिंह और डिफेंडर सलीमा टेटे को वर्ष 2023 के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का हॉकी इंडिया बलबीर सिंह सीनियर पुरस्कार दिया गया जबकि मेजर ध्यानचंद के नाम पर लाइफटाइम अचीवमेंट सम्मान उनके बेटे अशोक कुमार को मिला।

पिछले साल एफआईएच वर्ष के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार भी जीतने वाले हार्दिक ने पुरस्कार की दौड़ में पी आर श्रीजेश और हरमनप्रीत सिंह जैसे सीनियर खिलाड़ियों को पछाड़ा। तोक्यो ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता भारतीय टीम के सदस्य रहे 25 वर्ष के हार्दिक सौ से अधिक अंतरराष्ट्रीय मैच खेल चुके हैं।

उन्होंने पुरस्कार जीतने के बाद कहा, 'इतने महान खिलाड़ियों के साथ नामांकन पाना ही बड़ी उपलब्धि है। पुरस्कार से मुझे आगे और अच्छा खेलने की प्रेरणा मिलेगी। वहीं झारखंड के सिमडेगा जिले की टेटे तोक्यो ओलंपिक में चौथे स्थान पर रही भारतीय महिला टीम का हिस्सा थी। उन्होंने पुरस्कार की दौड़ में अपनी कप्तान और एफआईएच वर्ष की सर्वश्रेष्ठ महिला गोलकीपर का पुरस्कार जीतने वाली सविता पूनिया को पछाड़ा।

वर्ष के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी को पुरस्कार के तौर पर 25 लाख रूपये और प्रशस्ति पत्र दिया गया। यहां आयोजित हॉकी इंडिया सालाना पुरस्कार समारोह में पी आर श्रीजेश को वर्ष 2023 के सर्वश्रेष्ठ गोलकीपर और भारतीय पुरुष हॉकी टीम के कप्तान हरमनप्रीत सिंह को सर्वश्रेष्ठ डिफेंडर का पुरस्कार मिला। हरमनप्रीत ने इस मौके पर कहा, 'पुरस्कार और अच्छा खेलने की प्रेरणा देते हैं। टीम में इससे स्वस्थ प्रतिस्पर्धा भी बढ़ती है जो हॉकी के लिए अच्छा है।

वहीं हार्दिक ने सर्वश्रेष्ठ मिडफील्डर का पुरस्कार भी जीता और सर्वश्रेष्ठ फॉरवर्ड का पुरस्कार अभिषेक को मिला। सर्वश्रेष्ठ उदीयमान अंडर 21 खिलाड़ी का पुरस्कार महिला वर्ग में दीपिका सोरेंग और पुरूष वर्ग में अराइजीत सिंह हुंडल को मिला। मेजर ध्यानचंद लाइफटाइम पुरस्कार जीतने वाले उनके बेटे और 1975 विश्व कप विजेता टीम के सदस्य अशोक कुमार ने कहा, 'हमें सरदार

बलबीर सिंह, उधम सिंह, कैप्टन रूप सिंह, केडी सिंह बाबू जैसे महान खिलाड़ियों की परंपरा को जारी रखते हुए इस बार पेरिस ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतना है।

भारत ने 41 साल के इंतजार के बाद तोक्यो ओलंपिक में कांस्य पदक जीता था। आठ बार की ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता भारतीय टीम ने ओलंपिक में आखिरी स्वर्ण 1980 में मॉस्को में जीता था। अशोक कुमार ने कहा, 'खिलाड़ियों के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। दबाव पर काबू रखते हुए अपने कौशल का प्रदर्शन करना है। अब तो खिलाड़ियों के पास आलातरीन कोच, बुनियादी ढांचा और सुविधाएं हैं। हमें उम्मीद है कि ये टीम पेरिस में स्वर्ण जीतकर भारतीय हॉकी का पुराना गौरव लौटाएगी।

इसके साथ ही लखनऊ में 2016 में जूनियर पुरूष हॉकी विश्व कप जीतने वाली टीम, हांगझोउ एशियाई खेल 2023 स्वर्ण पदक विजेता पुरूष टीम और कांस्य पदक विजेता महिला टीम, ओमान में 2023 जूनियर एशिया कप जीतने वाली पुरूष टीम, जापान में जूनियर एशिया कप जीतने वाली महिला टीम, ओमान में एशिया हॉकी 5 में स्वर्ण पदक जीतने वाली महिला और पुरूष टीमों, चेन्नई में एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी 2023 जीतने वाली पुरूष टीम, रांची में महिला एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी 2023 जीतने वाली महिला टीमों को भी नकद पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

संक्षिप्त समाचार

इंटर द्वितीय वर्ष की छात्रा ने लगाई फांसी, हॉस्टल में मचा हड़कंप

विशाखापट्टनम (आंध्र प्रदेश)। विशाखापट्टनम में पीएम पालम पुलिस स्टेशन की सीमा के तहत नारायण कॉलेज की इंटर द्वितीय वर्ष की एक छात्रा ने आत्महत्या कर ली। स्थानीय पुलिस अधिकारियों ने बताया कि 17 वर्षीय छात्रा अपने छात्रावास के कमरे में सोमवार रात को फांसी पर लटकी हुई पाई गई। जिसके बाद उसे तुरंत कोमाडी के गायत्री अस्पताल ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने कहा, ÷वह अनाकापल्ली जिले के चोदावरम मंडल की मूल निवासी थी।÷ घटनास्थल से एक सुसाइड नोट बरामद हुआ है, जिसमें पीड़िता ने अस्वस्थ होने और दो बार अस्पताल जाने की शिकायत की है। पालम पुलिस स्टेशन के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, ÷प्रथम दृष्टया यह आत्महत्या का मामला प्रतीत होता है। घटना के पीछे का सटीक कारण अभी तक स्पष्ट नहीं है।÷ शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। उन्होंने कहा, हम मामले की आगे जांच कर रहे हैं।

भाजपा विधायकों को छूने की हिम्मत न करे कांग्रेस

हैदराबाद। तेलंगाना में भाजपा विधायक दल के नेता ए. महेश्वर रेड्डी ने शनिवार को चेतावनी दी कि यदि किसी भी भाजपा विधायक को छुआ (दलबदल के लिए लालच) गया तो राज्य में कांग्रेस सरकार 48 घंटों के भीतर गिर जाएगी। मंत्री के. वेंकट रेड्डी के दावों की ओर इशारा करते हुए महेश्वर रेड्डी ने कहा कि वह भाजपा विधायकों को छूने की हिम्मत न करें। वेंकट रेड्डी ने दावा किया था कि तेलंगाना के भाजपा के सभी आठ विधायक कांग्रेस के संपर्क में हैं। भाजपा नेता ने कहा, अगर आपने हमारे एक भी विधायक को छूने की कोशिश की, तो मैं आपको बता रहा हूं कि 48 घंटों के भीतर आपकी सरकार गिर जाएगी। महेश्वर रेड्डी ने आरोप लगाया कि कांग्रेस पार्टी सरकार बनाने के 100 दिन बाद भी अपने वादों या गारंटी को लागू करने में विफल रही है। कहा कि कांग्रेस पूरे देश में अपनी राजनीतिक और चुनावी गतिविधियों के लिए हैदराबाद से फंडिंग कर रही है।

जगन्नाथ मंदिर से हिरासत में लिया गया ब्रिटिश नागरिक

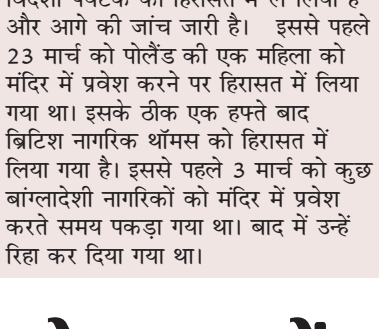

भुवनेश्वर , एजेंसी। ओडिशा पुलिस ने एक ब्रिटिश नागरिक को हिरासत में लिया है। उस पर आरोप है कि पहले उसने जगन्नाथ मंदिर में अनाधिकृत तरीके से प्रवेश किया। जब पुलिसकर्मियों ने उसे रोकने की कोशिश की तो उसने पुलिस की टीम पर ही हमला कर दिया। इसके बाद पुलिसकर्मियों ने उसे हिरासत में ले लिया। रविवार को एक पुलिस अधिकारी ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि विदेशी पर्यटक की पहचान थॉमस क्रेग शेल्डन के रूप में की गई है। थॉमस दक्षिण लंदन के वंड्सवर्थ का रहने वाला है। आपको बता दें कि 12वीं सदी के जगन्नाथ मंदिर में गैर हिंदुओं का प्रवेश वर्जित हैं। इसके बाद भी थॉमस ने मंदिर में प्रवेश किया। जब पुलिस कर्मियों ने उसे रोका और मंदिर परिसर छोड़ने के लिए कहा तो थॉमस ने कथित तौर पर पुलिस पर हमला कर दिया। पुरी के डीएसपी सिटी प्रशांत कुमार साहू ने कहा कि हमने विदेशी पर्यटक को हिरासत में ले लिया है और आगे की जांच जारी है। इससे पहले 23 मार्च को पोलैंड की एक महिला को मंदिर में प्रवेश करने पर हिरासत में लिया गया था। इसके ठीक एक हफ्ते बाद ब्रिटिश नागरिक थॉमस को हिरासत में लिया गया है। इससे पहले 3 मार्च को कुछ बांग्लादेशी नागरिकों को मंदिर में प्रवेश करते समय पकड़ा गया था। बाद में उन्हें रिहा कर दिया गया था।

प्रफुल्ल पटेल के खिलाफ मुकदमा बंद करने के लिए कांग्रेस ने मोदी सरकार को घेरा

वॉशिंग मशीन के साथ प्रेस कांफेस की

नई दिल्ली, एजेंसी। एअर इंडिया विमानों की खरीद घोटाले के मामले में घिरे राकांपा नेता प्रफुल्ल पटेल के खिलाफ भ्रष्टाचार का मुकदमा बंद करने के सीबीआई के फैसले को लेकर कांग्रेस ने मोदी सरकार पर निशाना साधा है। कहा कि भाजपा जिन नेताओं पर करोड़ों के घोटाले का आरोप लगाती है, उन्हें भाजपा-एनडीए गठबंधन में शामिल कराकर मुकदमे वापस ले लेती है।

पार्टी के अनुसार, शरद पवार से बगावत कर अजीत पवार के साथ भाजपा के सहयोगी बने प्रफुल्ल पटेल के खिलाफ मुकदमा बंद किया जाना इसका ताजा उदाहरण है। कांग्रेस के मीडिया विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने पार्टी मुख्यालय में वॉशिंग पाउडर और वॉशिंग मशीन के साथ प्रेस कांफ्रेंस करते हुए आरोप लगाया कि भाजपा के पास ऐसी वॉशिंग मशीन है, जिसमें 10 साल पुराना केस भी डालो तो आरोपित बेदाग निकलता है। मशीन के साथ ही ये कमाल मोदी वॉशिंग पाउडर का भी है। राकांपा नेता प्रफुल्ल पटेल इसके जीते-जागते उदाहरण हैं। भाजपा ने उन

पर एअर इंडिया घोटाले का आरोप लगाते हुए 2014 के लोकसभा चुनाव के आरोपपत्र में इसे शामिल किया था। भाजपा ने इसे लगभग 25,000-30,000 करोड़ का घोटाला बताया था। उस समय कैग विनोद राय ने भी अनाप-शनाप टिप्पणियां की थीं। इसे लेकर सीबीआई ने प्रफुल्ल पटेल के खिलाफ 2017 में भ्रष्टाचार का मुकदमा दर्ज किया था। खेड़ा ने कहा कि 2019 में भाजपा ने पटेल के खिलाफ कुछ घिनौने आरोप लगाते हुए दावा किया था कि वह 1993 के मुंबई बम धमाकों के आरोपित इकबाल मिर्ची के साथ एक संपत्ति सौदे में शामिल थे। राकांपा को तोड़कर महाराष्ट्र में भाजपा गठबंधन में शामिल होते ही उनके सारे दाग साफ हो गए।

खेड़ा ने 21 उदाहरण दिए

उन्होंने कहा कि ये महज एक नाम नहीं है, बल्कि ऐसे 21 उदाहरण हैं, जिन्हें भाजपा द्वारा उनके खिलाफ भ्रष्टाचार और गैरकानूनी कार्य करने के आरोप लगाने के बाद पाक-साफ कर दिया गया है। इसका कारण साफ है कि या तो वे भाजपा में शामिल हो गए या वे एनडीए गठबंधन में शामिल हो गए। इनमें हिमंत बिस्वा सरमा, नारायण राणे, अजीत पवार, हसन मुश्रीफ, छगन भुजबल, अशोक चव्हाण समेत अन्य नेता शामिल हैं।

ईडी और सीबीआई का उपयोग राजनीतिक विस्तार के लिए

कांग्रेस प्रवक्ता ने कहा कि मोदी सरकार ने ईडी, आईटी, सीबीआई समेत सभी स्वायत्त संस्थानों का इस्तेमाल अपने राजनीतिक विस्तार के लिए एक हथियार के रूप में किया है। चाहे वह चुनावी बॉन्ड की वसूली के लिए ईडी का दुरुपयोग हो या फिर 30 साल पुराने नोटिसों के माध्यम से प्रमुख विपक्षी दलों को परेशान करने के लिए आयकर विभाग का इस्तेमाल हो।

क्या पीएम-गृह मंत्री कह सकते हैं कि उन्हें प्रतिबद्ध संस्थाएं चाहिए

खेड़ा ने आरोप लगाया कि भाजपा संस्थाओं को कमजोर करने में आदतन अपराधी बन गई है। उन्होंने पूछा कि क्या प्रफुल्ल पटेल और कांग्रेस-यूपीए का हिस्सा रहे कई अन्य लोगों के बारे में भाजपा की 2014 की चार्जशीट सच है या यह केवल बदनाम कर विरोधियों को भाजपा का समर्थन करने के लिए मजबूर करने के लिए थी।

खेड़ा ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने हाल ही में प्रतिबद्ध न्यायपालिका को लेकर कांग्रेस की आलोचना की लेकिन क्या पीएम और गृह मंत्री अब खुलकर यह कह सकते हैं कि उन्हें प्रतिबद्ध संस्थाएं चाहिए।

राज्यपाल का पद गंभीर, संविधान के तहत काम करें: बीवी नागरत्ना

हैदराबाद। सुप्रीम कोर्ट की न्यायाधीश बीवी नागरत्ना ने शनिवार को राज्यपालों को लेकर बड़ी बात कही है। उन्होंने हैदराबाद के एनएएलएसएआर यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ में आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि राज्यपालों को संविधान के अनुसार कार्य करना चाहिए।

न्यायाधीश बीवी नागरत्ना ने कहा कि हाल की प्रवृत्ति यह रही है कि किसी राज्य के राज्यपाल या तो विधेयकों को मंजूरी देने में चूक या उनके द्वारा किए जाने वाले अन्य कार्यों के कारण मुकदमेबाजी का मुद्दा बन रहे हैं। किसी राज्य के राज्यपाल के कार्यों या चूक को संवैधानिक अदालतों के समक्ष विचारार्थ लाना संविधान के तहत एक स्वस्थ प्रवृत्ति नहीं है।

उन्होंने कहा कि हालांकि इसे राज्यपाल पद कहा जाता है, यह एक गंभीर संवैधानिक पद है और राज्यपालों को संविधान के अनुसार कार्य करना चाहिए, ताकि इस प्रकार की मुकदमेबाजी कम हो। राज्यपालों के लिए किसी कार्य को करने या न करने के लिए कहा जाना काफी शर्मनाक है। मेरा मानना है कि अब समय आ गया है कि उन्हें संविधान के अनुसार अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए कहा जाए।

केजरीवाल की गिरफ्तारी पर अखिलेश यादव ने बीजेपी पर बोला हमला

नई दिल्ली , एजेंसी। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने रविवार को कहा कि भाजपा सत्ता खोने को लेकर चिंतित है और उन्होंने विपक्ष को निशाना बनाने के लिए जांच एजेंसियों का दुरुपयोग करने के लिए सत्तारूढ़ दल पर हमला बोला है। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी को लेकर दुनिया भर में भाजपा की आलोचना हो रही है।

रामलीला मैदान में इंडिया ब्लॉक रैली के लिए शहर पहुंचे यादव ने हवाई अड्डे पर संवाददाताओं से कहा कि भाजपा चिंतित है कि वह (सत्ता से बाहर) जा रही है। जबकि हम (विपक्षी नेता) आज दिल्ली आ रहे हैं, प्रधानमंत्री दिल्ली से बाहर जा रहे हैं। इससे पता चलता है कि कौन (सत्ता से) बाहर जा रहा है।

चुनावी बांड योजना के मुद्दे पर सरकार पर हमला बोलते हुए उन्होंने कहा, यह एक नया आविष्कार है...ईडी, सीबीआई, आईटी को काम पर लगाओ और जितना चाहो उतना दान ले लो।

दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे के पहले चरण का काम लंबे इंतजार के बाद अंतिम दौर में पहुंचा

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे के पहले चरण का काम लंबे इंतजार के बाद अब अपने अंतिम दौर में पहुंच गया है। अक्षरधाम मंदिर से बागपत के खेकड़ा तक करीब 31 किलोमीटर लंबे पहले हिस्से को दो पैकेज में बनाया जा रहा है, जिसका 90 फीसदी काम हो चुका है।

नेशनल हाइवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआई) ने मई के अंत तक इसे तैयार करने का लक्ष्य रखा है। हालांकि, यातायात शुरू होने के लिए मध्य जून तक इंतजार करना पड़ सकता है। अधिकारियों का कहना है कि पहले चरण का काम 15 मई तक पूरा कर लेंगे। फिर एक सप्ताह तक ट्रायल रन चलेगा। इसके बाद मंत्रालय से मंजूरी मिलते ही यातायात शुरू कर दिया जाएगा।

अक्षरधाम से लोनी और बागपत सीधे जुड़ेगा = पहले चरण को यातायात के लिए खोले जाने से पूर्वी दिल्ली के लोगों का बड़ा लाभ मिलेगा। खासकर,

अक्षरधाम से चलकर गाजियाबाद के लोनी और बागपत के खेकड़ा तक पहुंचना आसान हो जाएगा। एनएचएआई ने टोल दरों को निर्धारित करने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है।

30 हजार पीसीयू वाहनों का दबाव कम होगा = पहले चरण का काम पूरा होने पर दिल्ली-मेरठ और ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे सीधे जुड़ जाएंगे, क्योंकि देहरादून एक्सप्रेसवे अक्षरधाम में मेरठ एक्सप्रेसवे से शुरू हो रहा है जो खेकड़ा में ईस्टर्न पेरिफेरल को जोड़ेगा। माना जा रहा है कि शुरुआत में दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर वाहनों की संख्या कोई खास कम नहीं होगी, लेकिन नवंबर तक वाहनों का सीधे आवागमन देहरादून तक शुरू होगा। इससे दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर करीब 30 हजार पैसेंजर पर कार यूनिट वाहनों का दबाव कम होगा।

बता दें कि, राजधानी की सभी मुख्य सड़कों का ट्रैफिक सीधे लूप और रैंप के जरिये दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे पर आ-जा सकेगा। इसके लिए दिल्ली की सीमा में पांच जगहों पर प्रवेश और निकासी की सुविधा होगी। वहीं, गाजियाबाद की सीमा में दो जगहों पर यह सुविधा उपलब्ध होगी। इसके बनने पर प्रतिदिन करीब ढाई लाख वाहन बिना जाम में फंसे दिल्ली और गाजियाबाद की सीमा से बाहर जा सकेंगे। इस एक्सप्रेसवे के तैयार होने पर दिल्ली में यमुनापार और लोनी को जाम से राहत मिलेगी। अभी अगर दिल्ली-सहारनपुर मार्ग से होते हुए देहरादून जाना है तो उसके लिए छह से सात घंटे लगते हैं। इसलिए लोग देहरादून जाने के लिए दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन, 210 किलोमीटर लंबे नए एक्सप्रेसवे के बनने से समय की बचत के साथ ही दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर जाम खत्म होगा।

डोनाल्ड ट्रंप की विवादित पोस्ट पर बढ़ा हंगामा, राष्ट्रपति बाइडन के समर्थकों ने लगाई फटकार

वॉशिंगटन। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा शेयर किए गए एक वीडियो को लेकर अब विवाद खड़ा हो गया है। सीएनएन की रिपोर्ट के अनुसार, डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन की तस्वीर वाली एक वीडियो शेयर की थी। इस वीडियो में राष्ट्रपति बाइडन के हाथ-पैर बंधे हुए दिखाई दे रहे हैं। ट्रंप ने दावा किया कि यह फुटेज एनवाईपीडी के अधिकारी जोनाथन डिलर की मौजूदगी के दौरान लॉन्ग आइलैंड पर कैप्चर किया गया था। वीडियो में ट्रंप के लिए समर्थन व्यक्त करने वाले दो ट्रकों को दिखाया गया है। जिसमें बाइडन की हाथ और पैर बंधी तस्वीर को ट्रक के पीछे दिखाया गया है।

हालांकि, ट्रंप द्वारा ये वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर करने के बाद जो बाइडन के समर्थकों ने उनकी जमकर आलोचना की। ट्रंप के प्रचार प्रवक्ता स्टीवन चेउंग ने उनका बचाव करते हुए कहा कि यह तस्वीर एक पिकअप ट्रक के पीछे थी, जो राजमार्ग से गुजर रहा था। डेमोक्रेट और लोगों ने न केवल पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप और उनके परिवार के खिलाफ घृणित हिंसा का आह्वान किया। बल्कि वे वास्तव में उनके खिलाफ न्याय प्रणाली को हथियार बना रहे हैं। वहीं, बाइडन के प्रचार प्रवक्ता माइकल टायलर ने सीएनएन को बताया कि डोनाल्ड ट्रंप द्वारा शेयर की गई यह पोस्ट हास्यपाद है। यह पोस्ट एक रक्तपात की मांग करने की तरह है। ट्रंप नियमित रूप से राजनीतिक हिंसा को भड़का रहे हैं और समय आ गया है कि लोग उन्हें गंभीरता से लें। इस महीने की शुरुआत में ट्रंप ने चेतावनी देते हुए कहा था कि अगर वह 2024 के चुनाव में हार जाते हैं तो इससे अमेरिकी ऑटो उद्योग और देश के लिए खूनखराबा होगा। उन्होंने अमेरिका के बाहर निर्मित कारों पर 100 प्रतिशत शुल्क लगाने का प्रस्ताव दिया। यह तर्क देते हुए कि केवल उनके अध्यक्ष घरेलू वाहन विनिर्माण की रक्षा कर सकते हैं।

पाकिस्तान में रेड कार्पेट बैन, सिर्फ विदेशी महमानों के लिए बिछाया जाएगा

पीएम शाहबाज समेत कैबिनेट मंत्री सैलरी नहीं लेंगे

इस्लामाबाद , एजेंसी। पाकिस्तान में किसी भी सरकारी कार्यक्रम में रेड कार्पेट का इस्तेमाल नहीं होगा। अब इसे सिर्फ विदेशी महमानों के स्वागत में बिछाया जाएगा। प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ ने यह फैसला लिया है। पीएम शाहबाज शरीफ ने अधिकारियों को आधिकारिक कार्यक्रमों में रेड कार्पेट के इस्तेमाल पर बैन लगाने का निर्देश दिया है। उन्होंने कैबिनेट मीटिंग में रेड कार्पेट बिछाने की प्रथा पर असंतोष जाहिर किया। इसके अलावा उन्होंने प्रधानमंत्री को मिलने वाली सैलरी लेने से भी इन्कार कर दिया है। 18 दिन पहले राष्ट्रपति जरदारी ने भी सैलरी नहीं लेने का फैसला किया था। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के इस फैसले के बाद कैबिनेट के मंत्रियों ने भी सैलरी नहीं लेने की घोषणा की है। पाकिस्तानी प्रधानमंत्री की सैलरी 2 लाख रुपए प्रति महीना होती है। वहीं, पूर्व राष्ट्रपति आरिफ अल्वी को सैलरी के तौर पर हर महीने करीब 8 लाख 46 हजार पाकिस्तानी रुपए मिलते थे। यह वेतन 2018 में संसद ने तय किया था। 13 मार्च को जरदारी की पार्टी पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी ने अपने ङ्क अकाउंट पर लिखा- राष्ट्रपति जरदारी देश की मदद करने के लिए अपने कार्यकाल में कोई सैलरी नहीं लेंगे। उन्होंने फाइनेंशियल मैनेजमेंट और राष्ट्रीय राजस्व पर बोझ नहीं डालने का फैसला किया है। देश का विदेशी मुद्रा भंडार इस समय 8 बिलियन डॉलर है, जो करीब डेढ़ महीने तक के सामानों के आयात जितना है। देश के पास कम से कम 3 महीने के सामान के आयात जितना पैसा होना चाहिए। विकास की ये दर कमजोर सरकार आने पर और नीचे जा सकती है। फिलहाल एक डॉलर की कीमत 276 पाकिस्तानी रुपए के बराबर है।

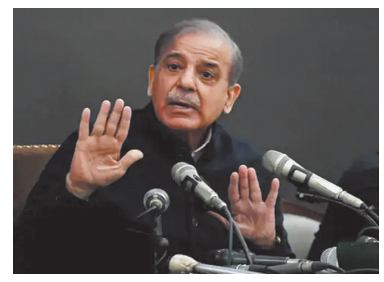

लेबनान में गोलाबारी से संयुक्त राष्ट्र के चार कर्मी घायल, इजरायल ने हमले से संबंध होने से किया इनकार

बेरूत , एजेंसी। लेबनान के दक्षिण में संयुक्त राष्ट्र के शांतिरक्षक दल में शामिल तीन पर्यवेक्षकों और एक अनुवादक शनिवार को बम हमले में घायल हो गए। ये लोग जब क्षेत्र में पैदल भ्रमण कर रहे थे तभी इनके नजदीक टैंक से दागा गया गोला आकर गिरा। इस गोले के टुकड़ों से क्षेत्र में तैनात संयुक्त राष्ट्र के ये कर्मी घायल हुए हैं।

संयुक्त राष्ट्र ने इस हमले की निंदा करते हुए उसे अस्वीकार्य बताया है जबकि इजरायल ने इस हमले से कोई संबंध होने से इनकार किया है। लेबनान का यह इलाका ईरान समर्थित संगठन हिजबुल्ला के प्रभाव वाला है। यहां पर इजरायल और हिजबुल्ला के बीच बीते आठ अक्टूबर से रह-रहकर लड़ाई चल रही है।

इस बीच, युद्धविराम पर इजरायल और हमास के

बीच शनिवार को मिस्त्र की राजधानी काहिरा में फिर से परोक्ष वार्ता शुरू हो गई है। दोनों पक्षों के प्रतिनिधिमंडल काहिरा में मौजूद हैं लेकिन वे मिस्त्र और कतर की मध्यस्थता में वार्ता कर रहे हैं। गाजा की खाद्य समस्या में राहत देने के लिए यूरोपीय देशों का एक और जहाज 400 टन खाद्य सामग्री लेकर साइप्रस से रवाना हो गया है। इसके अगले हफ्ते गाजा पहुंचने की संभावना है।

अमेरिका ने कई अरब डालर मूल्य के बम और लड़ाकू विमान इजरायल को देने के प्रस्ताव को स्वीकृति दे दी है। इस खेप में अमेरिका इजरायल को विभिन्न तरह के 4,800 बम देगा। उल्लेखनीय है कि सामान्य स्थिति में अमेरिका अपने पुराने सहयोगी इजरायल को प्रतिवर्ष 3.8 अरब डालर की सैन्य सहायता देता है। गाजा में इजरायली भीषण सैन्य कार्रवाई के चलते अंतरराष्ट्रीय दबाव का सामना कर रही बाइडन सरकार को घरेलू मोर्चे पर भी आलोचना का सामना करना पड़ रहा है, बावजूद इसके इजरायल की सहायता में कमी नहीं की गई है। गाजा में इजरायली हमलों में 75 हजार से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। इनमें से कई हजार लोगों की हालत चिंताजनक बनी हुई है। इसके अतिरिक्त अन्य कारणों से भी कई हजार लोग बुरी तरह से बीमार है।

हमें निकालकर भारतीयों को दी नौकरी, अमेरिका में टीसीएस पर लगे गंभीर आरोप

न्यूयार्क , एजेंसी। भारत की दिग्गज कंपनी टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) पर अमेरिका में भेदभाव के गंभीर आरोप लगे हैं। टीसीएस के 20 से अधिक कर्मचारियों ने आरोप लगाया है कि कंपनी नस्ल और उम्र के आधार पर गैरकानूनी तरीके से भेदभाव कर रही है। द वॉल स्ट्रीट जर्नल (डब्ल्यूएसजे) ने अपनी रिपोर्ट में ये जानकारी दी। कुल मिलाकर, 22 अमेरिकी प्रोफेशनल ने टीसीएस पर आरोप लगाया है कि कंपनी ने उन्हें निकालकर एच-1बी वीजा पर आए पर भारतीयों को नौकरी पर रखा।

टीसीएस द्वारा निकाले गए व्यक्तियों में कॉकेशियन, एशियाई-अमेरिकी और हिस्पैनिक अमेरिकी नस्ल के लोग शामिल हैं, जिनकी उम्र 40 से 60 वर्ष के बीच है। ये लोग अमेरिका के विभिन्न राज्यों से आते हैं। शिकायतों के आधार पर, टीसीएस द्वारा नौकरी से निकाले गए कई व्यक्तियों के पास मास्टर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन या अन्य एडवांस डिग्री है। इन लोगों ने आईटी फील्ड की दिग्गज भारतीय कंपनी पर उनके साथ भेदभाव करके कानूनों का उल्लंघन करने का आरोप लगाया है। इन लोगों का कहना है कि कंपनी भारतीयों को फेवर कर रही है। आरोपों के बाद भारतीय आईटी कंपनियों द्वारा एच-1बी वीजा के इस्तेमाल को लेकर जांच शुरू हो गई है। ये वीजा कैटेगरी कुशल विदेशी श्रमिकों के लिए है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129